कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्रशास्त्र

प. राजेश दीक्षित

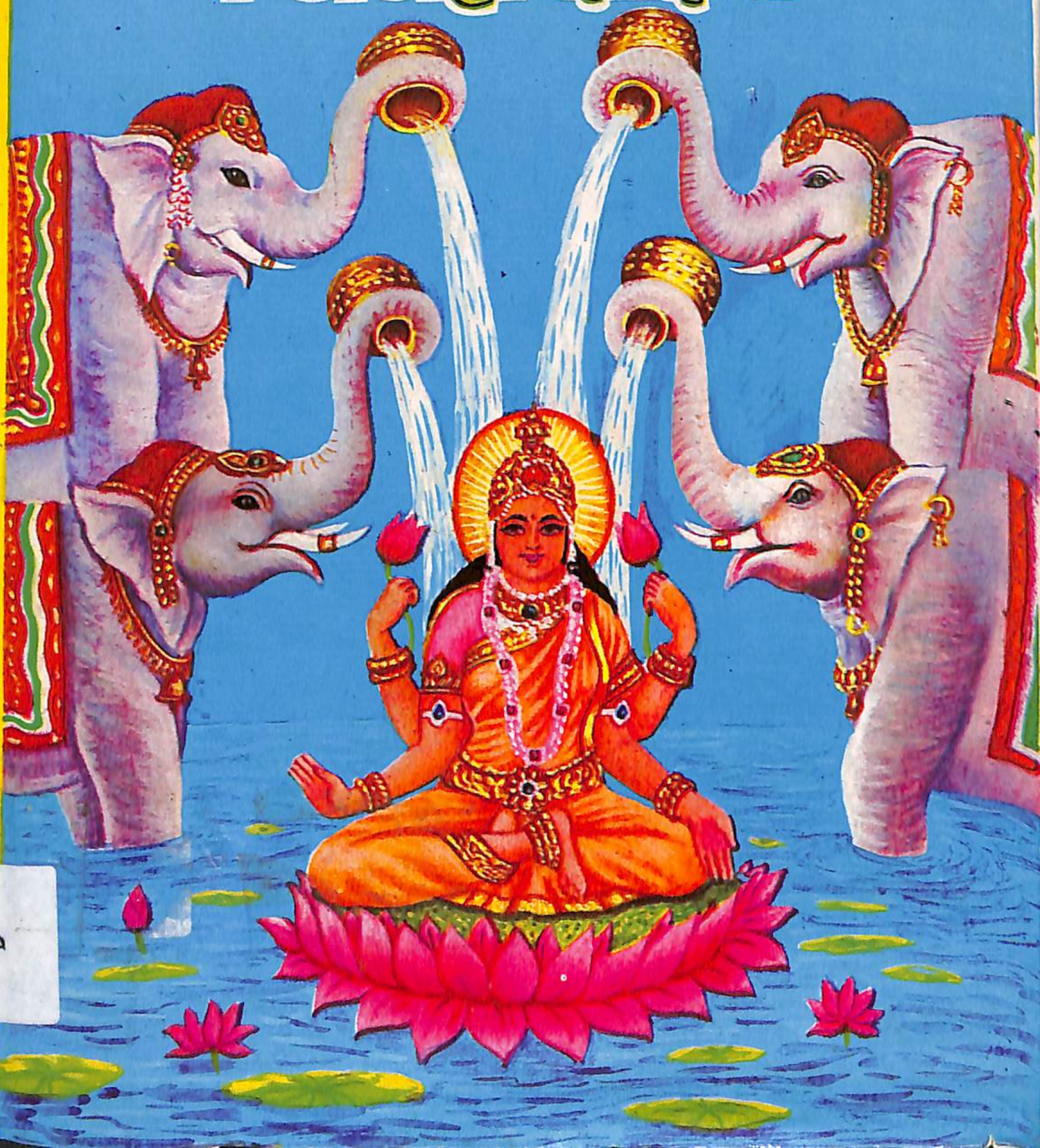

কমলাত্মিকা তন্ত্রশাস্ত্র

3.154

दशमहाविद्या तन्त्र ग्रन्थ माला, संख्या—७

कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

[भगवती कमला के विभिन्न मन्त्र तथा उनको प्रयोग विधि,
लक्ष्मी-पूजा की सामान्य विधि, स्तोत्र, हृदय, कवच,
सहस्रनाम, आरती एवं चालीसा के अतिरिक्त
कामधेनु तन्त्र अपूर्व सङ्कलन ग्रन्थ]

सम्पादक :
विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-वृहस्पति
आचार्य पं. राजेश दीक्षित
[सहस्राधिक ग्रन्थों के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध लेखक]

दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट,
होस्पीटल रोड, आगरा-282003

प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट
अस्पताल रोड, आगरा-३

लेखक/सम्पादक :
आचार्य पं. राजेश दीक्षित

सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

संस्करण :
प्रथम, १९८९ ई.

दीप पब्लिकेशन
हास्पीटल रोड, आगरा-३
Rs. 36/-

मूल्य : स्वदेश
विदेश में : पाँच डालर

मुद्रक : सुमन कम्पोजिंग हाऊस, अमरपुरा, आगरा।
ब्रज प्रिंटिंग प्रेस, नयाबांस आगरा-२

चेतावनी

भारतीय कापीराइट एक्ट के अधीन इस पुस्तक के सर्वाधिकार दीप पब्लिकेशन आगरा के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई सज्जन इस पुस्तक का नाम, अन्दर का मैटर, डिजायन, चित्र व सैटिंग तथा किसी अंश का किसी भी भाषा में नकल या तोड़ मोड़ कर छापने का साहस न करें अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।

प्रकाशक

KAMLATMIKA (LAXMI) TANTRA SHASTRA
By. *Pt. Rajesh Dixit*
Rs. 30/-

दो शब्द

'दश महाविद्या तन्त्र ग्रन्थ माला' की यह सातवीं तथा अन्तिम पुस्तक है। इसमें भगवती कमलात्मिका अर्थात् लक्ष्मी से सम्बन्धित विभिन्न मन्त्र तथा उनकी शास्त्रीय प्रयोग विधियों का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त श्री लक्ष्मी की सामान्य पूजा-विधि, आरती, चालीसा, विविध स्तोत्र तथा सहस्रनाम आदि के अतिरिक्त अन्त में जिज्ञासु पाठकों के उपयोगार्थ मूल रूप में 'कामधेनु तन्त्र' भी सङ्कलित किए गए हैं।

दश महाविद्यान्तर्गत भगवती कमलात्मिका आद्याशक्ति के तीन रूपों—महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती में से एक हैं। सामान्यतः 'लक्ष्मी' के रूप में जिन देवी की पूजा-अर्चना, विशेषतः दीपावली के दिन की जाती है, ये उनसे भिन्न हैं, परन्तु तत्त्वतः सभी देवियों में अभिन्नता होने के कारण 'कमलात्मिका' तथा 'लक्ष्मी' में कोई अन्तर भी नहीं मानना चाहिए।

प्रभु की असीम कृपा से आज यह 'ग्रन्थमाला' सम्पूर्ण हुई। इस सम्बन्ध में यदि कोई जिज्ञासा हो तो उसके लिए जबावी पत्र-व्यवहार किया जा सकता। यदि किन्हीं विज्ञ महानुभाव को कहीं कोई त्रुटि दिखाई दे तो वे उससे अवगत कराने का अनुग्रह करें, ताकि आगामी संस्करण में उसका निराकरण किया जा सके।

आशा है, जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

महाविद्याकालोनी,
मथुरा
वैशाखी, सं. २०४४ वि०

—राजेश दीक्षित

कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

साधक ध्यान रखें

पुस्तक को अध्ययन करते समय सर्वप्रथम निम्नलिखित बातों का विशेष ख्याल रखें—

× अपने आत्म-विश्वास और कार्य-सिद्धि के ढंग पर ही आपके कार्य का फल निर्भर करता है। बिना विश्वास के कोई फल प्राप्त नहीं होता।

× तान्त्रिक साधन उपचार और दुख निवारण के लिए ही प्रयोग करने चाहिए न कि निजी स्वार्थ के लिए।

× किसी अनिष्टकारक फल की प्राप्ति के लिए किया गया कार्य दूसरों की हानि की अपेक्षा स्वयं को अधिक हानिकारक होता है।

समर्पण

मोतीकटरा, आगरा निवासी,

पीयूषपाणि-चिकित्सक, अपने अग्रज

पं० कालिकाचरण दीक्षित

को सादर

विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-वृहस्पति

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

द्वारा सम्पादित

तन्त्र-विज्ञान की श्रेष्ठ पुस्तकें

१. हिन्दू तन्त्र शास्त्र

२. जैन तन्त्र शास्त्र

३. इस्लामी तन्त्र शास्त्र

४. शावर तन्त्र शास्त्र

५. बौद्ध तन्त्र शास्त्र

६. महाकाली तन्त्र शास्त्र

७. तारा तन्त्र शास्त्र

८. त्रिपुर सुन्दरी (षोडशी) तन्त्र शास्त्र

९. भुवनेश्वरी एवं छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र

१०. भैरवी एवं धूमावती तन्त्र शास्त्र

११. बगलामुखी एवं मातङ्गी तन्त्र शास्त्र

१२. कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : ३० रुपये

(डाक खर्च ७ रु. अलग)

दीप पब्लिकेशन

कंचन मार्केट

अस्पताल रोड, आगरा-३

विषय सूची

क्रमांक — पृष्ठाङ्क

१. कमलात्मिका-तत्त्व — १–६
महालक्ष्मी शक्ति, प्राकट्य-कथाएँ प्रतीक-रहस्य, भगवती की उपासना।

२. श्रीलक्ष्मी एकाक्षर बीज मन्त्र प्रयोग — १०–१८
विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिषडंग न्यास, ध्यान, पीठ-पूजा, आवरण-पूजा, द्वादशदेवता पूजन, अष्टदेवी पूजन, दश दिक्पाल पूजन, अस्त्र-पूजन, पुरश्चरण, प्रयोग-साधन।

३. चतुरक्षर लक्ष्मी बीज-मन्त्र प्रयोग — १६–२०
कर-न्यास, हृदयादिषडङ्गन्यास, ध्यान, पुरश्चरण तथा प्रयोग-विधि।

४. दशाक्षर लक्ष्मी बीजात्मक मन्त्र प्रयोग — २१–२५
विनियोग, ऋष्यादिन्यास, कर-न्यास, नेत्रहीन पञ्चाङ्ग न्यास, पीठ-पूजा, आवरण-पूजा-अष्टदेवीपूजा, पुरश्चरण, प्रयोग-विधि

५. सप्तविंशत्यक्षर महालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग — २६–३२
विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास, नेत्रहीन पञ्चाङ्ग न्यास, पीठ-पूजा, आवरण-पूजा, अष्टदेव पूजा, अष्टदेवी पूजन, बाण-पूजन, पुरश्चरण, प्रयोग-विधि।

६. द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग — ३३–४५
विनियोग, ऋष्यादि न्यास, कर-न्यास, मन्त्र वर्ण न्यास, सप्त-वर्ण न्यास, कर-न्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास, उद्यान-स्मरण, ध्यान, आवरण-पूजा, षडङ्ग-पूजा, अष्टशक्ति पूजा, नवग्रह-पूजा, अष्ट दिक्पाल पूजा, पुरश्चरण, प्रयोग-विधि।

७. सिद्धलक्ष्मी का दशाक्षर मन्त्र प्रयोग — ४६–४८
विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास, ध्यान, पुरश्चरण।

८. ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र प्रयोग — ४६–५४
विनियोग, ऋष्यादि-न्यास; कर-न्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास,

मन्त्रवर्ण सर्वाङ्ग न्यास, ध्यान, पीठ-पूजा, आवरण-पूजा, अष्टमातृका-पूजन, पुरश्चरण ।

९. **वसुधालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग** ५५–६२
विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास, पञ्चाङ्ग-न्यास, ध्यान, पीठ-शक्ति-पूजा, आवरण-पूजा, पुरश्चरण, प्रयोग-विधि

१०. **लक्ष्मी के अन्य मन्त्र** ६३–६६
तेईस अक्षर का मन्त्र, त्रिशक्ति का मन्त्र, सर्वसाम्राज्या का मन्त्र, महालक्ष्मी मन्त्र-विधि, ध्यान, अङ्ग-पूजा, पुरश्चरण ।

११. **सामान्य पूजा-विधि** ६७–८२
लक्ष्मी-पूजन के नियम, सामान्य-पूजा विधि, दीपावली विशेष-पूजन, श्रीलक्ष्मी चालीसा, श्रीलक्ष्मीजी की आरती ।

१२. **श्रीकमला स्तोत्र, कवच आदि** ८३–१३४
(१) श्री कमलास्तोत्रम्
(२) श्री महालक्ष्यष्टक स्तव
(३) श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्
(४) श्री सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्रम्
(५) श्री लक्ष्मी सूक्त
(६) श्री सूक्त
(७) श्री कमला अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्
(८) श्री कमला कवचम्
(९) श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्
(१०) श्री महालक्ष्मी पञ्जर स्तोत्रम्
(११) श्री प्रसन्नवरदा श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्
(१२) सद्यः फलप्रदा लक्ष्मीस्तव हृदयम्
(१३) श्री कमला स्तोत्रम्
(१४) श्री कमलात्मिकोपनिषत्
(१५) श्री महालक्ष्मी हृदयम्
(१६) श्री लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम्

१३. **कामधेनु तन्त्रम्** १३५–१८८

३ | कमलात्मिका-तत्व

भगवती 'कमलात्मिका' दशम महाविद्या हैं। इन्होंने तीनों लोकों को वश में कर रखा है, अतः इन्हें 'त्रैलोक्य-माता' भी कहा जाता है। ये धन-धान्य प्रदान करने वाली, सौभाग्य-वर्द्धक, लक्ष्मी-प्रदात्री हैं। वस्तुतः इन्हें ही 'लक्ष्मी' रूपा कहा गया है। इनकी बंकिम-भ्रू मात्र से ही मनुष्य विषम विपत्ति में पड़ जाता है तथा इनकी छत्रच्छाया का अक्षय लेने वाला समस्त पापों से निवृत्त हो जाता है।

रोहिणी नक्षत्र इनका अधिष्ठान काल है। इस नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति आजीवन सुखी तथा समृद्ध बना रहता है। भगवती कमला केवल सेवा तथा प्रेम-भाव से ही प्रसन्न हो जाती हैं। इनकी उपासना मानव बन कर नहीं, अपितु देवता बन कर करनी चाहिए। ये स्फूर्तिदायिका हैं तथा चारों युगों की रानी के रूप में प्रख्यात हैं। इनका अपरनाम 'लक्ष्मी' है। ये महारात्रि विद्या हैं। इनके शिव 'सदाशिव विष्णु' हैं।

धूमावती तथा कमला में प्रतिस्पर्धा है। वह ज्येष्ठा हैं, ये कनिष्ठा हैं। वे अवरोहिणी थीं ये रोहिणी हैं। वे असुरी थीं, ये दिव्या हैं। वे दरिद्रा थीं, ये लक्ष्मी हैं।

रोहिणी नक्षत्र के ठीक षड्भान्तर (१८० अंश) पर 'ज्येष्ठा' है। जिस व्यक्ति का 'रोहिणी' नक्षत्र में जन्म होता है, वह आर्थिक-दृष्टि से समृद्ध बना रहता है।

महालक्ष्मी-शक्ति

शक्ति वह वस्तु है, जो कारण के साथ अपृथक् सिद्ध रहकर, कार्योत्पादन में उपयोगी होती है।

विष्णु पुराण में उल्लेख मिलता है—

विष्णु शक्तिः परा प्रोक्ता क्षेत्रज्ञाख्या तथापरा।
अविद्या कर्मसंज्ञान्या तृतीया शक्तिरिष्यते॥

इस श्लोक में तीन शक्तियों का उल्लेख है—(१) पराविष्णु शक्ति, (२) अपरा क्षेत्र शक्ति तथा (३) अविद्या अर्थात् कर्म नामक शक्ति।

केवल ये तीन ही शक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक भावपदार्थ में अलग-अलग शक्ति है, उनका न तो हम चिन्तन ही कर पाते हैं और न वे हमारे ज्ञान का विषय ही हो सकती हैं। जिस प्रकार कि अग्नि की उष्णता एवं जल की शीतलता आदि का चिन्तन नहीं किया जा सकता। चिन्तन करने पर भी उष्णता आदि हमारे ज्ञान का विषय नहीं हो सकतीं। इसी प्रकार ब्रह्म की भी सर्गादि अनेक शक्तियाँ हैं। इस प्रकार की अनेक शक्तियों में श्री महाविष्णु की 'अहंता' नाम की एक शक्ति है, वही महालक्ष्मी है।

'लक्ष्मी तन्त्र' में महालक्ष्मी इन्द्र के प्रति कहती हैं—"उस परब्रह्म की जो चन्द्रमा की चांदनी की भाँति समस्त अवस्थाओं में साथ देने वाली देवी स्वात्मभूता अनपायिनी 'अहंता' नाम की परमा शक्ति है, वह सनातनी शक्ति में ही हूँ।"

इस शक्ति का ही दूसरा नाम 'नारायणी' है। उक्त तन्त्र में ही महालक्ष्मी कहती हैं—"मैं नित्य, निर्दोष, सीमातीत, कल्याणगुणों वाली 'नारायणी' नाम वाली वैष्णवी परासत्ता हूँ।"

कारणों में अपृथक् सिद्ध रहने वाला कार्योपयोगी धर्म ही शक्ति है। वह शक्ति दो प्रकार की है—(१) केवल धर्ममात्र तथा (२) धर्म और धर्मी उभयरूप। अग्न्यादि भावों की उष्णता आदि शक्तियाँ केवल धर्म हैं। क्षेत्रज्ञशक्ति धर्म और धर्मी उभयरूप है। क्षेत्रज्ञ ईश्वर के प्रति विशेषण होकर धर्म बनते हुए भी स्वयं अनेक धर्मों वाला है—शक्तिमान् है।

उक्त दो प्रकार की शक्तियों में श्रीमहालक्ष्मी द्वितीय कोटि की शक्ति है। स्वयं परमात्मा का विशेषण होती हुई धर्म होकर भी वह अनेक गुणधर्मवती एवं शक्तिमती भी है। पहले जो "विष्णु शक्ति ! परा प्रोक्ता" इत्यादि 'विष्णु पुराण' के वचन उद्धृत किये गये थे, उनमें जो 'विष्णुशक्ति' कही गई है, वह क्या है ? इस विषय में व्याख्याकारों ने अनेक प्रकार के मत प्रदर्शित किये हैं, किन्तु हमारी सम्मति में वह विष्णु शक्ति ही 'अहंता' नाम वाली महालक्ष्मी है। उस वचन में अपराशक्ति तथा अविद्याशक्ति के विषय में जैसा स्पष्टीकरण किया गया है, वैसा स्पष्टीकरण विष्णु-शक्ति के विषय में नहीं किया गया है, केवल एक विष्णु-शक्ति का उल्लेख मात्र कर दिया गया है। परन्तु इसका स्पष्टीकरण 'अहिर्बुध्न्य संहिता' में किया गया है।

जगत्तया लक्ष्मयाणा सा लक्ष्मीरिति गीयते।
श्रयन्ती वैष्णवं भावं सा श्रीरिति निगद्यते ॥

अव्यक्त कालपुंभावात्सा पद्मा पद्ममालिनी ।
कामदानाच्च कमला पर्याय सुखयोगतः ।।
विष्णोस्सामर्थ्य रूपत्वा द्विष्णु शक्तिः प्रगीयते ।

उक्त श्लोकों में उसी परब्रह्म शक्ति के लक्ष्मी, श्री, पद्मा, पद्ममालिनी, कमला आदि नाम निर्वचन पूर्वक बताकर, उसी को विष्णु-शक्ति बताया गया है । इससे यह सिद्ध होता है कि विष्णुपुराणोक्त परा विष्णु-शक्ति श्री महालक्ष्मी ही हैं, जिनके कमला, पद्मा, श्री इत्यादि नामान्तर भी हैं । वे ही 'अहंता' नाम से भी जानी जाती हैं ।

श्री महालक्ष्मीजी के पाँच कार्य हैं—(१) तिरोभाव, (२) सृष्टि, (३) स्थिति, (३) संहार और (५) अनुग्रह ।

सृष्टि, स्थिति और संहार तो सुप्रसिद्ध है ही । तिरोभाव कहते हैं—जीवात्मा के कर्म रूप अविद्या से तिरोहित अथवा आच्छादित होने को । 'अनुग्रह' मोक्ष को कहते हैं । यद्यपि ये पाँच कर्म शक्ति रूप लक्ष्मीजी के बताये गये हैं, परन्तु वास्तव में ये हैं—परमात्मा के ही कर्म । परमात्मा के सृष्ट्यादि कार्यों में शक्ति का उपयोग होने के कारण ही ये शक्ति के कार्य कहे गये हैं ।

'लक्ष्मी तन्त्र' में श्रीमहालक्ष्मीजी कहती हैं—

व्यापारस्तस्य देवस्य सोहमस्मि न संशयः ।
मया कृतं हि यत्कर्म तेन तत्कृतमुच्यते ।।

अर्थात्—"मैं नित्य, निर्दोष निरवयव परब्रह्म श्रीमन्नारायण की शक्ति हूँ । उनके सब कार्य मैं ही करती हूँ । मैं उनका व्यापार रूप हूँ अतः मैं जो कार्य करती हूँ, वह उन्हीं का किया हुआ कहा जाता है ।"

कहने का तात्पर्य यह है कि अग्नि का दाहरूपी कार्य जैसे अग्निगत दाह-शक्ति के कारण होता है, उसी प्रकार परमात्मा के सृष्टि आदि कार्य परमात्मगत शक्तिरूपा महालक्ष्मी के कारण ही होते हैं ।

ईश्वरीय सृष्ट्यादि के समस्त कार्यों में तच्छक्ति रूप महालक्ष्मीजी का उपयोग तो है ही । मोक्षदान रूप कार्य में भी इनका विशिष्ट रूप से उपयोग है । जीवों को मोक्षलाभ, श्रीमहालक्ष्मीजी के कारण ही होता है । यथा—

लक्ष्म्यासह हृषीकेशो देव्या कारुण्य रूपया ।
रक्षकस्सर्वसिद्धान्ते वेदान्तेषु च गीयते ।।

यहाँ 'रक्षा' शब्द से 'मोक्षदान' ही अभिप्रेत है। परमात्मा मोक्षप्रद है, यह सर्वसिद्धान्त है, परन्तु वह मोक्षप्रदत्व लक्ष्मीसहित नारायण का है, केवल नारायण का नहीं। मोक्षदान में मुख्य कर्तृत्व नारायण का होने पर भी उसमें लक्ष्मी का साथ प्रयोजक रूप में अन्तर्भूत है। लक्ष्मी के बिना मोक्षदान असंभव हो जाता है। भगवच्छरणागति में पुरुषकारकत्त्व अवश्यापेक्षित है। उसके बिना शरणागति कार्यकरी नहीं होती।

विशिष्टा द्वैत-वैष्णव-सम्प्रदाय के मनीषी विद्वान् श्रीवेङ्कटाध्वरि ने 'लक्ष्मी सहस्र' में कहा है—

"नित्यं विश्वं वशयति हरिर्निग्रहानुग्रहाभ्यामाद्ये शक्ति विघटयति ते हन्त कारुण्यपूर:।"

अर्थात्—"भगवान् किसी को दण्ड से और किसी को अनुग्रह से वशीभूत किये हुए हैं, परन्तु भगवान् की उस निग्रह-शक्ति को हे लक्ष्मीजी ! आपकी दया रोक देती है अर्थात् नारायण यदि किसी को दण्ड देना चाहते हों, परन्तु आप उस पर प्रसन्न हैं तो फिर हरि की निग्रह-शक्ति उस पर नहीं चलती।

और

शौरिश्चकारित्त हृदयेषु शरीरभाजां
तस्यापि देव हृदयं त्वमनुप्रविष्टा।
पद्मे ! तवापि हृदये प्रथते दयेयं
त्वामेव जाग्रदरिबलातिशयां श्रयाम: ॥

अर्थात्—'भगवान् विष्णु प्राणि मात्र के हृदय में रहते हैं और हे लक्ष्मीजी ! आप उन विष्णु के हृदय में विराजती हैं तथा आपके हृदय में दया रहती है, अत: हमतो सबसे अतिशयशालिनी आपकी दया का ही आश्रय लेना चाहते हैं।

शाक्त लोगों का विश्वास है कि शक्ति ही सबसे महान् शक्तिशालिनी हैं, जिसके बिना ब्रह्म भी कार्य का सम्पादन नहीं कर सकता उस महान शक्ति को 'महालक्ष्मी' के नाम से पुकारा जाता है। 'देवी माहात्म्य' में महालक्ष्मी से ही समग्र देवी-देवताओं की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। यथा—

महालक्ष्मी
- सरस्वती
  - गौरी
  - विष्णु
- लक्ष्मी
  - लक्ष्मी
  - हिरण्यगर्भ
- महाकाली
  - सरस्वती
  - रुद्र

प्राकट्य-कथाऐं

जिस प्रकार ईश्वर अवतार ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार श्रीलक्ष्मीजी देह धारण करती हैं। यथा—

''राघवत्वेऽभवत्सीता रुक्मिणी कृष्ण जन्मनि।
अन्येषु चावतारेषु विष्णोरेषानपायनि ॥

अर्थात्-रामावतार के समय वे सीता तथा कृष्णावतार के समय रुक्मिणी के रूप में अवतरित हुई एवं अन्य अवतारों में भी विष्णु की पत्नी के रूप में उनका प्राकट्य हुआ।

'देवी भागवत' के अनुसार—भगवती लक्ष्मी बैकुण्ठ में 'महालक्ष्मी', क्षीर सागर में विष्णुजी की शेषशय्या पर 'लक्ष्मी', इन्द्र के भवन में 'स्वर्ग लक्ष्मी', राजभवन में 'राजलक्ष्मी', गृहस्थों के यहाँ 'गृहलक्ष्मी' घरों में 'गृहदेव', समुद्र से उत्पन्न 'सुरभि' गाय तथा यज्ञ में 'दक्षिणा' रूप से सदैव विद्यमान रहती है।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में भगवती लक्ष्मी की अवस्थिति के स्थान तथा नाम इस प्रकार बताये गए हैं—

(१) बैकुण्ठ में—महालक्ष्मी।
(२) त्रैलोक में—राधा।
(३) स्वर्ग में—स्वर्ग लक्ष्मी।
(४) गोलोक में—सुरभि।
(५) चन्द्रमण्डल में—शोभा।
(६) भूलोक में—राजलक्ष्मी।
(७) यज्ञ में—दक्षिणा।
(८) गृह में—गृहलक्ष्मी।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार 'गोलोक' से पचास करोड़ योजन दूर, दक्षिण ओर 'वैकुण्ठ लोक' की अवस्थित है।

प्रलयकाल में केवल ज्योतिःपुंज हो प्रकाशित होता है जो ज्योतिर्मय, नित्य, असंख्य विश्वों के कारण, स्वेच्छारूपधारी, सर्वव्याप्त परमात्मा का उज्ज्वल तेजोरूप है। तीनों लोक उसी तेजपुंज के भीतर विद्यमान रहते हैं। इन तीनों लोकों से ऊपर 'गो लोक' की स्थिति है, जो परमपिता परमेश्वर की भाँति ही 'नित्य' है। उसकी लम्बाई-चौड़ाई तीन करोड़ योजन है। इसी गोलोक के नीचे मण्डलाकार तथा एक करोड़ योजन विस्तार वाले 'वैकुण्ठ लोक' की अवस्थिति है, जहाँ भगवती लक्ष्मी सुन्दर रूप धारण किए श्री नारायण के साथ सदैव

विराजमान रहती हैं तथा अपनी विभूतियों द्वारा श्रीहरि के चरण-कमलों की सेवा करती रहती हैं।

आद्या शक्ति भगवती महालक्ष्मी अनादि एवं अनन्ता है। वे सदैव विद्यमान रहती हैं, अतः उनके प्राकट्य का कोई काल नहीं है, तथापि अपने भक्तों की रक्षा हेतु समय-समय पर उन्होंने अवतरित होकर विभिन्न लीला-चरित्र किए हैं।

यथा—

(१) 'श्रीमद्भागवत' के अनुसार—एकबार देवासुर-संग्राम में जब सब देवता दैत्यराज बलि द्वारा पराजित हो गये, तब उन्होंने श्री विष्णु के परामर्श पर दूरदृष्टि का आश्रय ले उनसे मेल कर लिया तथा समुद्र-मंथन कर उसमें से रत्न-निकालने की योजना प्रस्तुत की। देवताओं की योजना से दैत्यगण सहमत हो गए। तब मंदराचल पर्वत की मथानी तथा वासुकी नाग को रज्जु (रस्सी) बनाकर समुद्र-मंथन की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई।

दुर्बुद्धि दैत्यगण हमेशा उल्टा ही सोचते तथा विपरीत-कार्य करते हैं। अस्तु समुद्र-मंथन के समय श्री नारायण सहित देवताओं ने जब वासुकि नाग के मुँह वाले भाग को पकड़ा तो दैत्यों ने रुष्ट होकर देवताओं से कहा-नागराज के इस श्रेष्ठ नाग को तो हम लोग ही पकड़ेंगे, तुम लोगों को पूंछ पकड़नी होगी।

विष्णु और सब देवता तो यह चाहते ही थे। अतः वे वासुकि की पूँछ की ओर जा खड़े हुए। फलतः घर्षण के समय सर्पराज वासुकि के मुख से जो विष निकला, उसका दुष्प्रभाव भी दैत्यों को ही भोगना पड़ा।

मंथन के फलस्वरूप समुद्र के गर्भ से जो चौदह रत्न निकले, उनमें से एक भगवती लक्ष्मी भी थीं। लक्ष्मीजी ने प्रकट होते ही अपनी माया से सबको मोहित कर लिया। इन्द्र उनके लिए अद्भुत आसन लाये। ऋषियों ने उनका विधि पूर्वक अभिषेक किया। दिग्गजों ने कलश-भर कर जल से उनको स्नान कराया, समुद्र ने पीत वस्त्र तथा विश्वकर्मा ने दिव्य आभूषण भेंट किए। तदुपरान्त जब वे अपने लिए योग्य वर ढूंढने को आगे बढ़ीं तो सभी देवता एवं दैत्य उन्हें अपनाने को लालयित हो उठे, परन्तु उन्होंने श्री नारायण के कण्ठ में ही अपनी वरमाला डाली। इस प्रकार वे श्री विष्णु की अर्द्धांगिनी बनीं।

(२) 'देवी भागवत' के अनुसार एक बार देवासुर-संग्राम के समय देवताओं के पराजित हो जाने पर देवगुरु वृहस्पति तथा ब्रह्माजी ने देवराज इन्द्र से श्रीमहालक्ष्मी की आराधना करने का निर्देश दिया। तदनुसार इन्द्र ने जब लक्ष्मीजी के बीजमन्त्र का जप किया तो भगवती ने प्रकट होकर उन्हें 'अभीप्सित-वर' प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप देवताओं ने राक्षसों के साथ पुनः युद्ध करके उन पर विजय प्राप्त की।

(३) 'मार्कण्डेय पुराण' के अनुसार—एक बार महिषासुर नामक एक प्रवल प्रतापी दैत्य ने युद्ध करके सब देवताओं पर विजय प्राप्त करली तथा स्वयं स्वर्ग का राजा बनकर उन्हें भाँति-भाँति के दुःख देने लगा, तब देवताओं ने एकत्र होकर भगवती की प्रार्थना की। उस समय सब देवताओं के सम्मिलित तेज के रूप में भगवती महालक्ष्मी का आविर्भाव हुआ और उन्होंने महिषासुर का वध करके देवताओं को भय-मुक्त बनाया।

(४) 'ब्रह्म वैवर्त पुराण' के अनुसार सरस्वती, गंगा तथा लक्ष्मी-ये तीनों ही श्री विष्णु की पत्नियाँ हैं। एक बार इनमें दाम्पत्य-प्रेम को लेकर परस्पर झगड़ा हो गया, तब सरस्वती ने गंगा को नदी रूपा तथा लक्ष्मी को वृक्ष रूपा होने का शाप दिया। उसे सुनकर गंगा ने भी सरस्वती को नदी रूपा होने का शाप दिया। लक्ष्मी अन्त तक शान्त बनी रहीं।

उक्त शाप के फलस्वरूप गंगा तथा सरस्वती भूतल पर नदी के रूप में अवतरित हुईं तथा भगवती लक्ष्मी 'तुलसी' के रूप में राजा धर्मध्वज के यहाँ प्रकट हुईं। कुछ समय बाद जब श्री विष्णु के अंश से 'शंखचूड़' का जन्म हुआ तो तुलसी उसकी पत्नी बनीं।

इस घटना के बाद से विष्णु ने गंगा को शिव के पास तथा सरस्वती को ब्रह्मा के पास भेज दिया तथा अपने साथ शान्तस्वरूपा लक्ष्मीजी को ही रखना स्वीकार किया।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी के अवतार की अनेक कथाऐं पुराणों में वर्णित हैं। धर्म की संस्थापना तथा अधर्म के विनाश हेतु भगवान् श्रीविष्णु जब-जब अवतार लेकर पृथ्वी पर आते हैं तब-तब उनकी शक्ति लक्ष्मी भी साथ ही आती हैं, यह बात पहले बताई जा चुकी है। इस प्रकार सीता-रुक्मिणी आदि अनेक अवतार भी श्री लक्ष्मी के ही हैं।

प्रतीक-रहस्य

लक्ष्मीजी का आसन कमल बताया गया है तथा उनके एक हाथ में भी कमल पुष्प विद्यमान रहता है। दो हाथी अपनी सूँड़ में जलपूरित स्वर्ण-कलश दबाये सदैव उनके दाँये-बाँये बने रहते हैं। उनका वाहन उलूक है। उनके चतुर्भुजी रूप में एक हाथ में कमल, दूसरे में विल्वफल, तीसरे में अभय तथा चौथे में वरमुद्रा रहती है।

कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है, परन्तु वह कीचड़ से लिप्त नहीं होता। जल में रहते हुए भी उसके ऊपर जल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अस्तु, कमल

के आसन पर बैठना तथा अपने हाथ में कमल पुष्प धारण किए रहना इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य को संसार में रहते हुए भी किसी विषय-वासना में लिप्त नहीं होना चाहिए तथा अपने हाथों से भी वही कर्म करने चाहिए जो सुन्दर तथा शुभ हों। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि कमल रूपी धन को हाथों में लेकर तथा कमल रूपी ऐश्वर्य-सिंहासन पर अमर होने के बाद भी धन-सम्पत्ति-ऐश्वर्य के मद से निर्लिप्त रहने का उपदेश ही भगवती करती हैं।

भगवती के हाथों में 'बिल्व-फल' ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। उसे लिये रहने का आशय है कि वे ब्रह्माण्ड को अपने हाथों में सुरक्षित रखे हुए हैं अर्थात् जो भी प्राणी उनकी शरण में जाता है, वह सुरक्षित बना रहता है।

वर तथा अभय मुद्राओं का तात्पर्य है कि भगवती अपने भक्तों को वर तथा अभय प्रदान करती हैं।

उलूक-वाहन से यह तात्पर्य है कि अज्ञानी मनुष्य के ऊपर जब सम्पत्ति का बोझ लद जाता है अर्थात् उसके पास अधिक सम्पत्ति हो जाती है तो वह अहंकार में अन्धा होकर शुभ-कर्म करने अर्थात् सम्पत्ति का सदुपयोग करने से वंचित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को लक्ष्मी-वाहन अर्थात् ऐश्वर्य से सम्पन्न होने पर भी उल्लू की भाँति समाज में कभी यश तथा सम्मान की उपलब्धि नहीं हो पाती तथा जिस प्रकार उल्लू दिन के प्रकाश में छिपा रहता है और रात्रि में सबकी दृष्टि से बच कर ही निकलता है, उसी प्रकार वह भी समाज में अपना मुँह नहीं दिखा पाता।

हाथी को अत्यन्त बुद्धिमान पशु माना गया है। दो हाथी लक्ष्मी के दाँये-बाँये स्वर्ण-कलश में जल भरे हुए उन्हें स्नान कराते रहते हैं, इसका तात्पर्य यह है कि बुद्धिमान मनुष्य धन तथा ऐश्वर्य पाकर उसे भगवती के ही श्रीचरणों में समर्पित करते रहते हैं अर्थात् शुभकार्यों में व्यय करते हैं। सभी शुभ कार्य 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी के ही प्रति रूप हैं। अतः उनमें धन को व्यय करना भगवती की प्रसन्नता का कारण बनता है फलतः ऐसे सद्वृत्ति वालों का कोष ठीक उसी प्रकार से कभी खाली नहीं होता, जिस प्रकार कि गजराजों की सूंड़ में स्थित स्वर्ण-घट कभी जल-रिक्त नहीं हो पाते।

स्मरणीय है कि लक्ष्मी, कमल तथा हाथी—इन तीनों का जन्म जल से ही हुआ है, अतः इन तीनों में पूर्वोक्त प्रकार का सामजस्य ही कल्याणकारी माना गया है। उलूक जैसा कर्म तो अपयश एवं दुःख का कारण ही बनता है।

भगवती की उपासना

दशमहाविद्याओं के अन्तर्गत आने वाली भगवती कमलात्मिका आद्याशक्ति हैं। ये उन लक्ष्मी से भिन्न हैं। जिनकी प्राकट्यकथाओं का उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया गया है। तथापि, मूलतः सभी देवियाँ एक ही पराशक्ति की प्रतिरूपा होने से परस्पर अभिनाभी हैं। अतः लक्ष्मी के किसी भी रूप की पूजा अर्चना करने से समतुल्य फल ही प्राप्त होता है।

अगले प्रकरणों में भगवती महालक्ष्मी की उपासना सम्बन्धी विभिन्न मन्त्र तथा उनकी शास्त्रीय प्रयोग-विधि, सामान्य पूजा विधि तथा उनसे सम्बन्धित स्तोत्रादि का वर्णन किया गया है। यह पूजा-अर्चन विधि देवी के सभी स्वरूपों के लिए उपयोगी हैं।

२ | श्री लक्ष्मी एकाक्षर बीज मन्त्र प्रयोग

शारदा तिलक में श्री लक्ष्मी का एकाक्षर बीज मन्त्र इस प्रकार बताया गया है—

'श्रीं'

उक्त मन्त्र के विनियोग, न्यास, ध्यान तथा आवरण-पूजा विधि आदि निम्नानुसार है—

विनियोग

अस्य मन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः। निवृच्छन्दः। श्री लक्ष्मीर्देवता मम धनाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

भृगुऋषये नमः शिरसि।
निवृच्छन्दसे नमः मुखे।
श्री लक्ष्मी देवतायै नमः हृदि।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

(इतिऋष्यादि न्यासः)

करन्यास

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ श्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ श्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

हृदयादि षडंगन्यास :

ॐ श्रां हृदयाय नमः ।

ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ।

ॐ श्रूं शिखायै वषट् ।

ॐ श्रैं कवचाय हुम् ।

ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ श्रः अस्त्राय फट् ।

(इतिषडङ्ग न्यासः)

अथध्यानम्

ॐ कान्त्याकाञ्चन सन्निभा हिमगिरि
प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटै
रासिच्यमाना श्रियम् ।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं
हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बलसितां
वंदे ऽ रविन्दस्थिताम् ॥

पीठ-पूजा

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ-देवताओं को स्थापित करके—

"ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र से पीठ-देवताओं की पूजा करके, पूर्व आदि आठ दिशाओं में निम्नलिखित नवपीठ शक्तियों की पूजा करें—

ॐ विभूत्यै नमः ।

ॐ उन्मन्यै नमः ।

ॐ कान्त्यै नमः ।
ॐ सृष्ट्यै नमः ।
ॐ कीर्त्यै नमः ।
ॐ सन्मत्यै नमः ।
ॐ पुष्ट्ययै नमः ।
ॐ उत्कृष्ट्यै नमः ।

पीठ मध्ये

ॐ ऋद्धयै नमः ।

उक्त मन्त्रों द्वारा पीठ शक्तियों का पूजन करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र में अग्न्युत्तारण पूर्वक—

''श्रीं कमलासनाय नमः ।''

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर, पीठ के मध्य संस्थापित कर, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके, आवाहन आदि से पुष्पांजलि-दान पर्यन्त उपचारों से पूजा कर, देवी की आज्ञा ले, निम्नानुसार आवरण पूजा करें।

लक्ष्मी के एकाक्षर बीजयन्त्र के पूजन-यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—

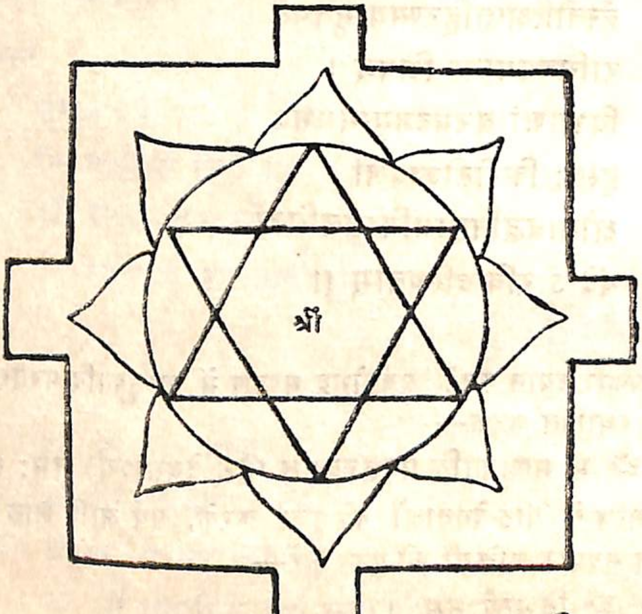

२

(श्री लक्ष्मी एकाक्षर बीजमन्त्र का पूजन यन्त्र)

आवरण पूजा

सर्व प्रथम षट्कोण की केशरों में निम्नानुसार मन्त्र बोलते हुए पूजन करें—

अग्निकोण में—

ॐ श्रां हृदयाय नमः ।

नैंऋत्यि कोण में—

ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ।

वायव्य कोण में—

ॐ श्रूं शिखायै वषट् ।

ईशान कोण में—

ॐ श्रैं कवचाय हुम् ।

पूज्य तथा पूजक के मध्य में—

ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

देवी के पश्चिम में—

ॐ श्रः अस्त्राय फट् ।

(इतिषडङ्ग पूजा)

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र का उच्चारण करके—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।"

इसे पढ़कर पुष्पांजलि दें, तथा

"पूजिता स्तर्पिताः सन्तु ।"

यह कहें ।

(इति प्रथमावरणं)

द्वादश देवता पूजन

इसके बाद पूज्य तथा पूजन के अन्तराल में प्राचीदिशा मान कर तदनानुसार चारों दिशाओं तथा उप दिशाओं में द्वादश देवताओं का निम्नानुसार पूजन करें—

पूर्व में—

ॐ वासुदेवाय नमः ।

वासुदेव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्रः)

दक्षिण में—

ॐ संकर्षणाय नमः ।

संकर्षण श्री पादुकां पूजयामि० ।

पश्चिम में—

ॐ प्रद्युम्नाय नमः ।

प्रद्युम्न श्री पादुकां पूजयामि० ।

उत्तर में

ॐ अनिरुद्धाय नमः ।

अनिरुद्ध श्री पादुकां पूजयामि० ।

अग्नि कोण में

ॐ दमकाय नमः ।

दमक श्री पादुकां पूजयामि० ।

निर्ऋति कोण में

ॐ सलिलाय नमः ।

सलिल श्रीपादुकां पूजयामि० ।

वायव्य कोण में

ॐ गुग्गुलाय नमः ।

गुग्गुल श्री पादुकां पूजयामि० ।

ईशान्य में

ॐ कुरुंटकाय नमः ।

कुरुंटक श्री पादुकां पूजयामि० ।

देवी के दक्षिण में

ॐ शंखनिधये नमः ।

शंखनिधि श्री पादुको पूजयामि० ।

ॐ वसुधायै नमः ।

वसुधा श्री पादुकां पूजयामि० ।

देवी के वाम भाग में

ॐ पद्मनिधये नमः ।

पद्मनिधि श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ बसुमत्यै नमः ।

बसुमति श्री पादुकां पूजयामि० ।

उक्त विधि से द्वादश देवताओं की पूजा कर, पुष्पांजलि दे, मूल-मन्त्र का उच्चारण करके—

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।

इसे पढ़कर पुष्पांजलि दें तथा

"पूजितास्तर्पिता सन्तु ।"

यह कहें ।

(इति द्वितीयावरण)

अष्ट देवी पूजन

इसके बाद पत्राग्रों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मंत्रों से अष्ट देवियों का पूजन करें ।

ॐ बलाक्यै नमः ।

बलाकी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विमलायै नमः ।

विमला श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ कमलायै नमः ।

कमला श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ वनमालिकायै नमः ।

वनमालिका श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ विभीषिकायै नमः ।

विभीषिका श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ भालिकायै नमः ।

भालिका श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ शाङ्कार्यै नमः ।

शाङ्कारी श्री पादुकां पूजयामि० ।

ॐ वसुमालिकायै नमः ।

वसुमालिका श्री पादुकां पूजयामि० ।

उक्त विधि से अष्ट देवियों की पूजा कर पुष्पांजलि से, मूलमन्त्र का उच्चारण करके—

ॐ अभीष्ट सिद्धि देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इसे पढ़कर पुष्पांजलि दें तथा—

"पूजितास्तर्पिता सन्तु ।"

यह कहें ।

(इति तृतीयावरण)

दशदिक्पाल-पूजन

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों से दशदिक्पालों का पूजन करें—

ॐ लं इन्द्राय नमः ।

ॐ रं अग्नये नमः ।

ॐ मं यमाय नमः ।

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ।

ॐ वं वरुणाय नमः ।

ॐ यं वायवे नमः ।

ॐ कुं कुबेराय नमः ।

ॐ हं ईशानाय नमः ।

ईशान एवं पूर्व के मध्य में—

ॐ आं ब्रह्मणे नमः ।

निर्ऋति एवं पश्चिम के मध्य में

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ।

अस्त्र पूजन

फिर भू पुर के बाहर निम्नलिखित मन्त्रों से दिक्पालों के अस्त्र का पूजन करें—

ॐ वं वज्राय नमः ।
ॐ शं शक्तये नमः ।
ॐ दं दण्डाय नमः ।
ॐ बं खड्गाय नमः ।
ॐ पां पाशाय नमः ।
ॐ अं अंकुशाय नमः ।
ॐ गं गदायै नमः ।
ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः ।
ॐ पं पद्माय नमः ।
ॐ चं चक्राय नमः ।

उक्त विधि से आवरण पूजा करके, धूपदान से लेकर नारीजन-पर्यन्त पूजा करके मन्त्र-जप करें ।

पुरश्चरण :

इस मन्त्र का पुरश्चरण १२,००,००० (बारह लाख) जप है । फिर १२,००० (बारह हजार) कमल पुष्पों को मधु, घृत तथा शर्करा से युक्त करके हवन करें। हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए । इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है ।

प्रयोग साधन :

पूर्वोक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर, प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए । प्रयोग-साधन विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(१) जो साधक पूर्वोक्त विधि से बारह लाख मन्त्र-जप तथा घृत-मधु-शर्करा युक्त बारह लाख कमल-पुष्पों से हवन करके विधिपूर्वक देवी की उपासना करता है, उसको धन-धान्य की समृद्धि प्राप्त होती है तथा वह यश समन्वित लक्ष्मी प्राप्त करता है ।

(२) जो साधक वक्ष-प्रमाण जल में खड़ा होकर इस मन्त्र का तीन लाख की संख्या में जप करता है, उसे वांछित धन प्राप्त होता है।

(३) जो साधक अशोक की समिधायों से प्रदीप्त अग्नि में घृत-सिक्त चावलों से होम करता है, वह तीनों लोकों को वश में कर लेता है।

(४) जो इन्द्रियजयी राजपुत्र मदार की समिधाओं से प्रदीप्त शुद्ध अग्नि में चावल से दस लाख होम करता है, वह चिरन्तन राज्य भी प्राप्त करता है।

(५) जो साधक खैर की समिधा से प्रदीप्त अग्नि में मधु, घृत तथा शर्करा से युक्त चावलों से होम करता है, वह राजा को शीघ्र वश में कर लेता है तथा उसकी सम्पत्ति बढ़ती है।

(६) जो साधक बेल की छाया में बैठकर, बेल-मिश्रित हविष्य का आहार करता हुआ, दो वर्ष तक बेल अथवा कमल से होम करता है, उसे भगवती महालक्ष्मी के दर्शन प्राप्त होते हैं।

(७) जो साधक घृत युक्त खीर तथा घृत युक्त हविष्य से दस लाख आहुतियाँ देता है, वह लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

(८) जो साधक मधु, घृत तथा शर्करा सिक्त लालकमलों द्वारा आदरपूर्वक होम करता है, उसे लक्ष्मी कभी नहीं छोड़ती तथा सम्पूर्ण संसार उसके वश में हो जाता है।

३ | चतुरक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र प्रयोग

'शारदा तिलक' में भगवती लक्ष्मी का चार अक्षरो वाला लक्ष्मी बीजात्मक मन्त्र इस प्रकार है—

"ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ।"

इसके न्यास तथा ध्यान आदि निम्नानुसार हैं—

करन्यास :

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

हृदयादिषडङ्गन्यास :

ॐ श्रां हृदयाय नमः ।
ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ श्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ श्रैं कवचाय हुमः ।
ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ श्रः अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडङ्गन्यासः)

उक्त विधि से 'न्यास' करके निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान :

ॐ माणिक्य प्रतिमप्रभांहिमनिभै
स्तुंगैश्चतुर्भिर्गजै
र्हस्ताग्राहितरत्नकुम्भसलिलै
रासिच्यमानांमुदा ।
हस्ताब्जैर्वरदानमम्बुज युगा-
भीतीर्दधानां हरेः
कान्तां कांक्षितपारिजातलतिकां
वन्दे सरोजासनाम् ॥

उक्त प्रकार से ध्यान करके, पूजा की अन्य सभी विधियाँ पूर्ववर्णित एकाक्षर मन्त्र की भाँति ही सम्पन्न करनी चाहिए।

पुरश्चरण तथा प्रयोग विधि :

इस मन्त्र का पुरश्चरण बारह लाख है। साधक को हविष्याशी रहकर तथा जितेन्द्रिय होकर बारह लाख मन्त्रों का जप करके, लाल फूले हुए कमलों से बारह हजार की संख्या में जप करना चाहिए। तत्पश्चात् मन्त्र प्रयोग से विधियाँ स्वयं मूर्तिमती होकर साधक को सेवा करती हैं।

४ | दक्षाक्षर लक्ष्मी बीजात्मक मन्त्र-प्रयोग

'शारदा तिलक' में श्रीलक्ष्मी का दशाक्षर मन्त्र निम्नानुसार कहा गया है—

"ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।"

इस मन्त्र के विनियोग न्यास आदि निम्नानुसार हैं—

विनियोग :

अस्य मन्त्रस्य दक्षऋषिः विराट्छन्दः श्रीलक्ष्मीर्देवता सर्वेष्ट-सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :

दक्ष ऋषये नमः शिरसि।
विराट् छन्दसे नमः मुखे।
श्रियै देवतायै नमः हृदि।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादिन्यास)

करन्यास :

ॐ देव्यै नमो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ पद्मिन्यै नमस्तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ विष्णुपत्न्यै नमो मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ वरदायै नमोऽनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

नेत्रहीनपचांग न्यास :

ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः ।
ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा ।
ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायैः वषट् ।
ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम् ।
ॐ कमलायै नमः अस्त्राय फट् ।

(इति नेत्रहीन पञ्चाङ्गन्यासः)

न्यासोपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें—

ॐ आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी
तस्ताम्बुजैर्बिभ्रती
दानं पद्मयुगाभये च वपुषा
सौदामिनि सन्निभा ।
मुक्ताहारविराजमानपृथुलो
त्तुङ्गस्तनोद्भासिनी
पायाद्वः कमलाकटाक्षविभवै
रानन्दयन्ती हरिम् ।।

पीठ-पूजा :

उक्त प्रकार से ध्यान करके, पूर्वोक्त पीठ-शक्तियों के साथ पीठ-पूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र को आसन-मन्त्र द्वारा पीठ के मध्य में रखकर, पुनः ध्यान करके मूल-मन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर, आवाहनादि से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा कर, देवी की आज्ञा लेकर निम्नलिखित क्रम से आवरण-पूजा करनी चाहिए ।

लक्ष्मी दशाक्षर मन्त्र के यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—

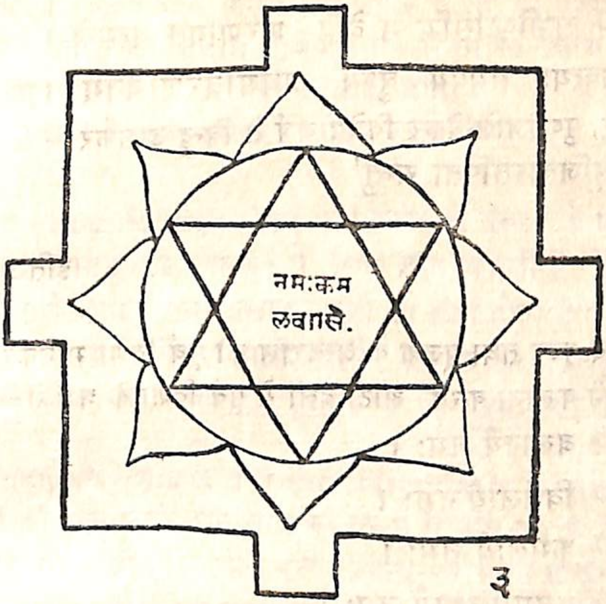

(लक्ष्मी दशाक्षर मन्त्र का प्रयोग)

आवरण पूजा :

सर्वप्रथम षट्कोण केसरों में निम्नानुसार मंत्रों से पूजा करें—

अग्निकोण में—

ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः ।

निर्ऋति कोण में—

ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा ।

वायव्य कोण में—

ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायै वषट् ।

ईशान कोण में—

ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम् ।

देवी के पश्चिम में—

ॐ कमलरूपायै नमोऽस्त्राय फट् ।

उक्त विधि से पञ्चाङ्ग-पूजा करें। फिर पुष्पांजलि लेकर मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए—

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

कहते हुए, पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से बिन्दु डालकर—

'पूजितास्तर्पिता सन्तु'

यह कहें।

(इति प्रथमावरणं)

अष्टदेवी पूजा :

इसके पाद पूज्य तथा पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके, आठों दलों में पूर्व दिशा के क्रम से—

ॐ बलाक्यै नमः।
ॐ विमलायै नमः।
ॐ कमलायै नमः।
ॐ वनमालिकायै नमः।
ॐ विभीषिकायै नमः।
ॐ मालिकायै नमः।
ॐ शाङ्कर्यै नमः।
ॐ वसुमालिकायै नमः।

उक्त मन्त्रों द्वारा अष्ट देवियों की पूजा कर पूर्ववत् पुष्पांजलि लेकर, मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए—

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

कहते हुए पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से बिन्दु डालकर—

'पूजितास्तर्पिता सन्तु।'

यह कहें।

(इति द्वितीयावरणं)

इसके बाद भूपूर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि देवताओं तथा वज्र आदि उनके अस्त्रों की पूर्ववत् पूजा करें तथा आवरण-पूजा सम्पन्न कर धूपदान से नीराजन तक पूजा करके जप करें।

पुरश्चरण :

इसका पुरश्चरण १०,००,००० (दस लाख) जप हैं। जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र सिद्धि हो जाने के बाद प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

प्रयोग विधि :

(१) मन्त्रविद् साधक जितेन्द्रिय होकर दस लाख की संख्या में मन्त्र का जप करें। जप का दशांश मधु, घी तथा शर्करा सिक्त लाल कमलों से होम करें तो समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं तथा अखण्ड लक्ष्मी का लाभ होता है।

(२) जो साधक समुद्र में गिरने वाली नदी के अकण्ठ-जल में खड़े होकर मन्त्र-जप करके देवी की पूजा करता है, वह समस्त सम्पतियों का धाम बन जाता है।

(३) उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में माला तथा चन्दन आदि से देवी की पूजा करके तीन लाख की संख्या में मन्त्र-जप करने वाला साक्षक साक्षात् कुबेर बन जाता है। इसके पश्चात् वन्ध्यावर्त पुष्पों से एक हजार होम करना चाहिए। पूर्णमासी में मधु-घृत तथा शर्करा युक्त बेलों से होम करना चाहिए। पञ्चमी को बड़े कमल पुष्पों से तथा शुक्रवार को सुगन्धित अन्य बड़े पुष्पों से हवन करना चाहिए। इसके बाद पूर्णमासी में घृत, मधु तथा शर्करायुक्त बेल के फलों से होम करना चाहिए। इस प्रकार जो साधक एक वर्ष तक साधना करता है, वह समस्त सम्पत्तियों का स्वामी बन जाता है।

टिप्पणी—इस मन्त्र के अन्य न्यास तथा पूजा विधि आदि एकाक्षर-मन्त्र के अनुसार समझने चाहिए।

५ सप्तविंशत्यक्षर महालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

'शारदातिलक' में भगवती महालक्ष्मी का सप्तविंशत्यक्षर (सत्ताईस अक्षरों वाला) मन्त्र इस प्रकार कहा गया है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्यै नमः।"

इसका विधान निम्नानुसार है—

विनियोग :

अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं नमः शक्तिः सर्वेष्ट सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि।
ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ नमः शक्तये पादयोः।
ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

करन्यास :

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

नेत्रहीन पचाङ्गन्यास :

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ।

(इति नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यास)

उक्त विधि से न्यास करने के बाद ध्यान करें—

ध्यान :

ॐ सिन्दूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्यवारान्निधिं
कोटीरांगदहार कुण्डलकटी सूत्रादिभिर्भूषिताम् ।
हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां
परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ।

पीठ-पूजा :

उक्त विधि से ध्यान कर, पूर्ववत् पीठ-पूजा करके स्वर्णादि निर्मित यन्त्र से को अग्न्युत्तारण पूर्वक आसन-मन्त्र से आसन देकर, पीठ के मध्य में रखकर, पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र द्वारा मूर्ति की कल्पना करके, आवाहन से लेकर पुष्पांजलि दान तक सभी उपचारों से पूजा करके, देवी से आज्ञा लेकर, निम्नानुसार आवरण पूजा करें।

सप्तविंशत्यक्षर लक्ष्मी मन्त्र के पूजन यन्त्र का स्वरूप अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित है—

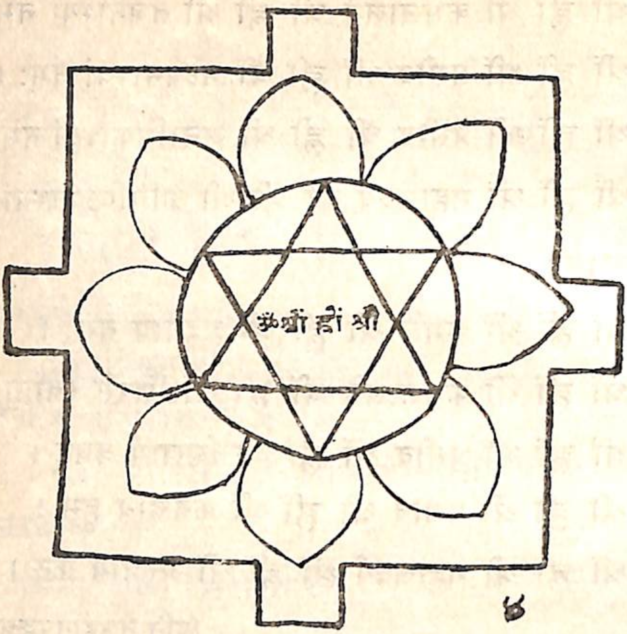

(सप्तविंशत्यक्षर लक्ष्मी का यन्त्र)

आवरण-पूजा :

षट्कोण केसरों में आग्नेय कोण से आरम्भ करते हुए निम्नानुसार मन्त्रोच्चारण करें—

अग्निकोणे—

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ।

निर्ऋति कोणे—

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालयै श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ।

वायव्ये—

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ।

ईशान्ये—

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् ।

देवी के पश्चिम में—

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ।

उक्त विधि से पञ्चाङ्गों की पूजा करने के बाद मूल मन्त्र का उच्चारण करके—

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

यह पढ़कर तथा पुष्पांजलि देकर—

"पूजितास्तर्पिताः सन्तु"

यह कहें ।

(इति प्रथमावरणं)

अष्टदेव पूजा :

इसके बाद पूज्य तथा पूजक के बीच में पूर्व-दिशा प्रकल्पित करके पूर्वादि-क्रम से यन्त्र के आठों दलों में निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें—

ॐ श्रीधराय नमः ।
श्रीधर श्रीपादुकां पूजियामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

ॐ हृषीकेशाय नमः ।
हृषीकेश श्रीपादुकां०······।
ॐ वैकुण्ठाय नमः ।
वैकुण्ठ श्रीपादुकां०······।
ॐ विश्वरूपाय नमः ।
विश्वरूप श्रीपादुकां०······।
ॐ वासुदेवाय नमः ।
वासुदेव श्री पादुकां०······।
ॐ सङ्कर्षणाय नमः ।
सङ्कर्षणाय श्रीपादुकां०······।
ॐ प्रद्युम्नाय नमः ।
प्रद्युम्न श्रीपादुकां०······।

ॐ अनिरुद्धाय नमः ।
अनिरुद्ध श्रीपादुकां०……।

इस प्रकार आठों की पूजाकर पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें।

(इति द्वितीयवरणं)

अष्टदेवी पूजन :

फिर अष्टदलों के मध्य पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अष्ट देवियों का पूजन करें—

ॐ भारत्यै नमः ।
भारती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्र)

ॐ पार्वत्यै नमः ।
पार्वती श्रीपादुकां०……।
ॐ चान्द्र्ये नमः ।
चान्द्री श्रीपादुकां०……।
ॐ शच्यै नमः ।
शची श्रीपादुकां०……।
ॐ दमकाय नमः ।
दमका श्रीपादुकां०……।
ॐ सलिलाय नमः ।
सलिला श्रीपादुकां०……।
ॐ गुग्गुलुवे नमः ।
गुग्गुलु श्रीपादुकां०……।
ॐ कुरुण्टकाय नमः ।
कुरुण्टक श्री पादुकां०……।

फिर, पूर्ववत् पूजा करके पुष्पांजलि प्रदान करें।

(इति तृतीयावरणं)

बाण पूजन :

इसके बाद अष्टदलाग्र में निम्नलिखित मन्त्रों से बाणों का पूजन करें—

ॐ अनुरागाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।

ॐ संवादाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।
ॐ विजयाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।
ॐ वल्लभाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।
ॐ मदाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।
ॐ हर्षाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।
ॐ बलाय महालक्ष्मी बाणाय नमः ।
ॐ तेजसे महालक्ष्मी बाणाय नमः ।

फिर, पूर्ववत् पूजा करके पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति चतुर्थावरण)

इसके पश्चात् भूपूर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि देवताओं तथा वज्र आदि उनके आयुधों का पूजन करें । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन तक पूजा करके जप करना चाहिए ।

पुरश्चरण :

इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप है । जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर योगों को सिद्ध करना चाहिए ।

जो लोग उक्त विधि से देवी की उपासना करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी सदैव निवास करती हैं ।

प्रयोग विधि :

(१) मधु, घृत तथा शर्करायुक्त बेल के फलों से दशांश होम तथा पूर्ववत् मन्त्र-जप करने वाले साधक के घर में लक्ष्मी का स्थायी-वास हो जाता है ।

(२) यदि कोई राजा चन्दन के जल में एक लाख कमलों को सिक्त करके हवन करे तो वह बिना युद्ध किए ही शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेता है ।

(३) दूर्वा, सहदेई, लक्ष्मीबल्ली, विष्णुक्रान्ता, मधुव्रता, मुशली, इन्द्रवारुणी, नागरमोथा, लज्जालु, पीतचन्दन, कपूर, श्वेत चन्दन, बेल, अंकोल, गोरोचन, नागकेसर तथा कूठ को हल्दी के रस में पीस कर १०८ वार मन्त्र का जप करके तिलक लगाने से मन्त्रीगण साधक के वशीभूत हो जाते हैं तथा रात-दिन उसका हित-साधन करने के लिए तत्पर बने रहते हैं ।

(४) अधिक धन की इच्छा रखने वाले साधक को सत्याचरण करते हुए मन्त्र-जप तथा श्री सूक्त का भी जप करना चाहिए। पूर्व की ओर मुख करके भोजन करे तथा पूर्व की ओर मुख करके बैठे एवं सत्य बोले। शुद्ध तथा जितेन्द्रिय होकर गन्ध-पुष्पादि से नित्य पूजा करे। शय्या पर नित्य किसी युवती स्त्री के साथ शयन करे, अकेला न सोये। पानी में नग्न होकर न उतरे। तैल-मर्दन करके भोजन न करे। मुँह पर हल्दी का लेप न करें। कहीं अपवित्रावस्था में शयन न करे। व्यर्थ ही भूमि को न कुरेदे। वेल, गूमा अथवा कमल को सिर पर धारण न करे तथा नमक अथवा तैल को अकेले न खाये। विन्दित अन्न न खाये। मलिन न रहे। गूमा, बेल तथा कमल को कभी पैरों से न लांघे। सहदेई, इन्द्रवारुणी, लक्ष्मीलता, विष्णुक्रान्ता, घी, क्वार, कमल तथा प्रवाल को सदैव मस्तक पर धारण करे।

इस प्रकार के आचारों से युक्त तथा नित्य विष्णुभक्त एवं व्रत में निष्ठावान् साधक देव-दुर्लभ महती समृद्धि को प्राप्त करता है।

६ | द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

'शारदा तिलक' में भगवती महालक्ष्मी का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार बताया गया है—

"ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।"

इस मन्त्र के विनियोग, न्यास, ध्यान तथा पूजा-विधि आदि निम्नानुसार हैं—

विनियोग :

अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीजगन्माता महालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे।
श्री जगन्माता महालक्ष्यै नमः हृदि।
श्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

करन्यास :

मूलमन्त्र से हाथ धोने के बाद—

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यास)

इसके बाद '**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः**' से मस्तकादि चरणान्त व्यापक न्यास करना चाहिए ।

फिर, निम्नानुसार मन्त्र वर्णन्यास करें—

मन्त्रवर्ण-न्यास :

ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि ।

ॐ ह्रीं नमः मुखे ।

ॐ श्रीं नमः हृदये ।

ॐ क्लीं नमः गुह्ये ।

ॐ सौं नमः पादयोः ।

इस प्रकार न्यास करके हृदय पर हाथ रखकर 'सप्तवर्णन्यास' निम्न क्रमानुसार करें—

सप्तवर्ण न्यास :

ॐ जं नमः त्वचि ।

ॐ गत् नमः रक्ते ।

ॐ प्रं नमः मांसे ।

ॐ सूं नमः मेदसि ।

ॐ त्यैं नमः अस्थि ।

ॐ नं नमः मज्जायाम् ।

ॐ मं नमः शुक्रे ।

(इति मन्त्रवर्ण न्यासः)

करन्यास :

ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ सौं वीर्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
(इति करन्यासः)

हृदयादि षडङ्गन्यास :

ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा ।
ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट् ।
ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम् ।
ॐ सौं वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् ।
(इति हृदयादि षडङ्गन्यासः)

उक्त प्रकार से 'न्यास' कर करके निम्नानुसार उद्यान का स्मरण करते हुए उसमें रत्नसिंहासन पर स्थित भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करें ।

उद्यान-स्मरण :

चम्पकाशोक पुन्नागपाटलैरुपशोभितम् ।
लवङ्गमालती बिल्लदेवदारुनमेरुभिः ॥१॥
मन्दारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सुपुस्पितैः ।
चन्दनैः कर्णिकारैश्च मातुलिङ्गैश्च मञ्जुलैः ॥२॥
दाडिमील कुचाङ्कोले पूगैः कुरव कैरपि ।
कदलीकुन्दमदारनालिकेलैरलंकृतैः ॥३॥
अन्यैः सुगन्धि पुष्पाद्यैर्वृक्षसंघैश्च मण्डितम् ।
मालती मल्लिका जातीकेतकीशत पत्रकैः ॥४॥
पारन्तीतुलसीनन्द्यावर्तैर्दमनकैरपि ।
सर्वर्तुकुसुमोपेतैर्नमद्भिरूपशोभितम् ॥५॥
मन्दभारुत संभिन्न कुसुमाभोदिदिङ्मुखम् ।
तस्य मध्ये सदोत्फुल्लैः कुमुदोत्पल पङ्कजैः ॥६॥

सौगन्धि केश्चकह्लाररैर्नवैः कुवलयैरपि ।
हंस सारसकारण्डैर्भ्रमरै श्चक्रनामभिः ॥७॥
अन्यैः कलकलारावैर्विहंगैरुपशोभितम् ।
महासरसि तन्मध्ये पुलिनेऽतिमनोहरे ॥८॥
परितः पारिजाताद्यं मण्डपं मणिकुट्टिभम् ।
उद्यदादित्यसङ्काशं भास्वरं शशिशीतलम् ॥९॥
चतुर्द्वार समायुक्तं हेमप्राकारा शोभितम् ।
रत्नोपक्लृप्ति संशोभि कपाटाष्टक संयुतम् ॥१०॥
नवरत्न समाक्लृप्तं तुङ्गगोपुरतोरणम् ।
हेमदण्डसमालम्बिध्वजादलि परिष्कृतम् ॥११॥
नवरत्नसमावद्धस्तम्भराजि विराजितम् ।
सहस्रदीप संयुक्तं दीपंदण्डविराजितम् ॥१२॥
तप्तहाटक संक्लृप्तवातायन मनोहरम् ।
नानावर्णांसुकोद्बद्धसुवर्ण शतकोटिभिः ॥१३॥
किङ्किणीमल्लिकायुक्तपताकाभिरलंकृतम् ।
जातरूपमयै रत्नविचित्रै रतिविस्तृतैः ॥१४॥
माणिक्य रत्नवैदूर्यं स्वर्णमालावलीयुतैः ।
अन्तरान्तरसम्बद्ध रत्नैर्दृष्टि मनोहरैः ॥१५॥
विचित्रैश्चित्रवर्णैश्च वितानैरुपशोभितम् ।
सर्वरत्न समायुक्तं हेमकुट्टिममुज्ज्वलम् ॥१६॥
केतकी मालती जाती चम्पकोत्पलकेसरैः ।
मल्लिका तुलसी जाती नन्द्यावर्तकदम्बकैः ॥१७॥
एतैरन्यैश्च कुसुमैरलंकृत महीतलम् ।
अम्बुकाश्मीर कस्तूरी मृगनाभितमालकैः ॥१८॥
चन्दनागुरुकर्पूरैरामोदित दिगन्तरम् ।
एवं सञ्चिन्त्यमनसा मण्डपं सुमनोहरम् ॥१९॥

तन्मध्ये भावयेन्मन्त्री पारिजातं मनोहरम् ।
तस्याधस्तात्स्मरेन्मन्त्री रत्नसिंहासनं शुभम् ॥२०॥
तस्मिन्सञ्चिन्तयेद्देवीं महालक्ष्मीं मनोरमाम् ॥२१॥

उक्त विधि से उद्यान का स्मरण करने के बाद निम्नानुसार देवी का ध्यान करें—

ध्यान :

बालार्कद्युतिमिन्दु खण्डविलसत्कोटीरहारोज्ज्वलां
रत्नाकल्प विभूषितां कुचनतां शालैः करैर्मञ्जरीम् ।
पद्मं कौस्तुभरत्नमप्यविरतं सम्बिभ्रतीं सस्मितां
फुल्लाम्भोज विलोचनभययुतां ध्यायेत्परांदेवताम् ॥१॥
सिञ्जन्मञ्जीर संशोभिपदाम्भोज विराजिताम् ।
नवरत्नगणाकीर्णकाञ्चीदाम विभूषिताम् ॥२॥
मुक्तामाणिक्य वैदूर्य सम्बद्धोदर बन्धनाम् ।
विभ्राजमानां मध्येन बलित्रितय शोभिताम् ॥३॥
जाह्नवी सरिदावर्त शोभिनाभि विभूषिताम् ।
पाटीरयङ्क कर्पूर कुंकुमालंकृतस्तनीम् ॥४॥
वारिवाहविनिर्मुक्त मुक्ता दामगरीयसीम् ।
वहन्तीनुत्तरासङ्ग दुकूल परिकल्पिताम् ॥५॥
तप्तकाञ्चन सन्नद्धवैदूर्याङ्गद भूषणाम् ।
पद्मराग स्फुरद्वर्ण कङ्कणाढ्यकराम्बुजाम् ॥६॥
माणिक्य शकलाबद्धमुद्रिकाभिरलंकृताम् ।
तप्तंहाटक संक्लृप्त मालग्रैवेय शोभिताम् ॥७॥
विचित्र विविधाकल्प कम्बुसंकाशक कन्धराम् ।
उद्यद्दिनकराकार मणिताटङ्क मण्डिताम् ॥८॥
रत्नाङ्कितलसत्स्वर्णकर्णपूरोप शोभिताम् ।
जयाविद्रुम लावण्य ललिताधर पल्लवाम् ॥९॥
दाडिमीफल बीजाभ दन्तपंक्ति विभूषिताम् ।
कलङ्ककार्श्य निर्मुक्त शरच्चन्द्रनिभाननाम् ॥१०॥

पुण्डरीकदलाकार नयनत्रय सुन्दरीम् ।
भ्रू लताजितकन्दर्प कर कार्मुक विभ्रमाम् ॥११॥
विलसत्तिलपुष्पश्री विजयोद्यतनासिकाम् ।
ललाटकान्ति विभव विजितार्द्धसुधाकराम् ॥१२॥
सान्द्र सौरभ सम्पन्न कस्तूरीतिलकांकिताम् ।
मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखाम्बुजाम् ॥१३॥
पारिजात प्रसूनश्रीवाहिधम्मिल्लबन्धनात् ।
अनर्घ्यरत्न घटितमुकुटाङ्कित मस्तकाम् ॥१४॥
सर्वलावण्य वसतिं भवनं विभ्रमश्रियः ।
तेजसां जन्मभूमिं तां महालक्ष्मीं मनोहराम् ॥१५॥

उक्त विधि से ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पूर्ववत् पीठ-पूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक आसन-मन्त्र से आसन दे, पीठ के मध्य स्थापित कर, पुनः ध्यान कर, मूल-मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके, देवी से आज्ञा लेकर आवरण-पूजा आरम्भ करनी चाहिए।

द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र के यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—

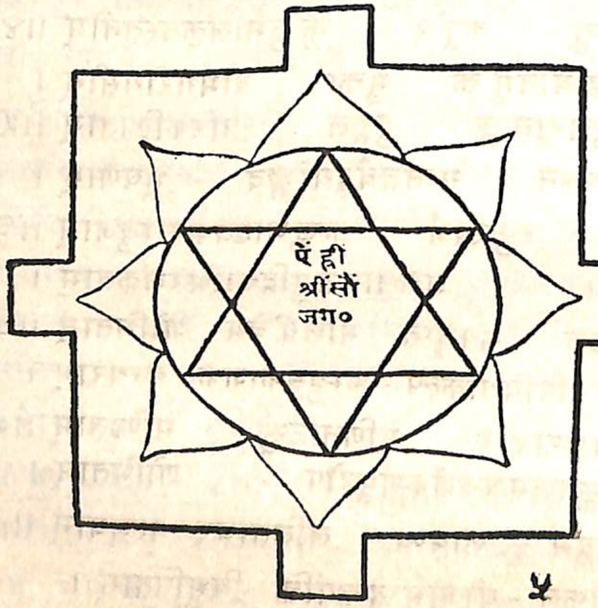

(द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र यन्त्र)

आवरण पूजा :

निम्न क्रमानुसार आवरण-पूजा करनी चाहिए।

देवी के दक्षिण भाग में—

ॐ शङ्करनन्दनाय नम.।

शङ्करनन्दन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

देवी के वाम भाग में—

ॐ पुष्पधन्वने नमः।

पुष्पधन्व श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इसके बाद पुष्पांजलि ले, मूल मन्त्र का उच्चारण करके,

''ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

कह कर पुष्पांजलि दें।

''पूजितास्तर्पिताः सन्तु।''

यह कहें।

(इति प्रथमावरणं)

षडङ्ग पूजा :

इसके बाद षट्कोण केसरों में निम्नलिखित मन्त्रों से अङ्गदेवताओं की षडङ्ग पूजा करें—

अग्निकोण में—

ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः।

हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(एवं सर्वत्र:)

निर्ऋतिकोण में—

ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा।

शिरः श्रीपादुकां०......।

वायव्य कोण में—

ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट्।

शिखा श्रीपादुकां०......।

ईशान कोण में—

ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुंम् ।

कवच श्रीपादुकां०……।

पूज्य पूजक के मध्य में—

ॐ सौवीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् ।

नेत्रत्रय श्रीपादुकां……।

देवी के पश्चिम भाग में—

ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्री पादुकां०……।

पूर्वोक्त विधि से षडङ्गों की पूजा कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें---

(इति द्वितीयावरणं)

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य तथा पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर एवं तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से आठ शक्तियों की निम्नलिखित मन्त्रों से पूजा करें।

अष्टशक्ति पूजा :

ॐ उमायै नमः ।

उमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(एवं सर्वत्रः)

ॐ श्रियै नमः ।

श्री श्रीपादुकां०…।

ॐ सरस्वत्यै नमः ।

सरस्वती श्रीपादुकां०…।

ॐ दुर्गायै नमः ।

दुर्गा श्रीपादुकां०…।

ॐ धरण्यै नमः ।

धरणी श्रीपादुकां०…।

ॐ गायत्र्यै नमः ।

गायत्री श्रीपादुकां०…।

ॐ देव्यै नमः ।

देवी श्रीपादुकां०···।

ॐ उषायै नमः ।

उषा श्रीपादुकां०···।

फिर, पूर्वोक्त प्रकार से इन आठ शक्तियों की पूजा कर पुष्पांजलि प्रदान करें।

(इति तृतीयावरणं)

इसके पश्चात् देवी के दक्षिण में—

ॐ जह्नुसुतायै नमः ।

जह्नुसुता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(एवं सर्वत्रः)

देवी के बांई ओर—

ॐ सूर्य सुतायै नमः ।

सूर्य सुता श्रीपादुकां०···।

फिर, देवी के दक्षिण में पुनः—

ॐ शंख निधये नमः ।

शंखनिधि श्रीपादुकां०···।

फिर, देवी के बाँई ओर पुनः—

ॐ पद्मनिधये नमः ।

पद्मनिधि श्रीपादुकां···।

इसके बाद पश्चिम में छत्रधारी वरुण की पूजा करके पुष्पांजलि प्रदान करें—

(इति चतुर्थावरणं)

नवग्रह पूजा :

इसके बाद अष्टदलाग्रों में पूर्वादि क्रम से—

ॐ सूर्याय नमः ।

सूर्य श्रीपादुकां०···।

ॐ सोमाय नमः ।

सोम श्रीपादुकां०···।

ॐ भौमाय नमः ।

भौम श्रीपादुकां०···।

ॐ बुधाय नमः ।

बुध श्रीपादुकां०··।

ॐ बृहस्पतये नमः ।

बृहस्पति श्रीपादुकां०···।

ॐ शुक्राय नमः ।

शुक्र श्रीपादुकां०···।

ॐ शनैश्चराय नमः ।

शनैश्चर श्रीपादुकां०···।

ॐ राहवे केतवे नमः ।

राहुकेतु श्रीपादुकां०···।

उक्त मन्त्रों से नवग्रहों की पूजा कर पूर्वोक्त विधि से पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

(इति पञ्चमावरणं)

अष्ट दिग्गज पूजा :

इसके बाद भूपुर के भीतर—

ॐ ऐरावताय नमः ।

ऐरावत श्रीपादुकां०···।

ॐ पुण्डरीकाय नमः ।

पुण्डरीक श्रीपादुकां०···।

ॐ वामनाय नमः ।

वामन श्रीपादुकां०···।

ॐ कुमुदाय नमः ।

कुमुद श्रीपादुकां०···।

ॐ अञ्जनाय नमः ।

अञ्जन श्रीपादुकां०···।

ॐ पुष्पदत्ताय नमः ।
पुष्पदन्त श्रीपादुकां०…।
ॐ सार्वभौमाय नमः ।
सार्वभौम श्रीपादुकां०…।
ॐ सुप्रतीकाय नमः ।
सुप्रतीक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों द्वारा आठ दिग्गजों की पूर्वोक्त विधि से पूजा कर, पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति षष्ठावरणं)

इसके बाद भूपुर में इन्द्र आदि देवताओं तथा उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करनी चाहिए ।

पुरश्चरण :

उक्त विधि से आवरण-पूजा कर धूपादि दान से नीराजनान्त तक पूजा करके, पुनः ध्यान करके जप करें ।

इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है । जप का दशांश घृत से होम करें । फिर वेल तथा कमल—प्रत्येक से दस-दस हजार होम करें । इसके बाद शुद्ध सुगन्धित तिल सहित जल से बीस हजार की संख्या में तर्पण तथा अनमोक्त विधि से सुगन्धित एवं सुन्दर फूलों तथा गन्ध, पुष्प, पाद्य आदि से देवी का आदरपूर्वक पूजन करें । 'सामान्य लक्ष्मी-पूजा विधि' प्रकरण में वर्णित पद्धति के अनुसार यह पूजा की जा सकती है ।

जब मन्त्र सिद्धि हो जाय तब प्रयोग सिद्धि करनी चाहिए ।

प्रयोग विधि :

(१) दीर्घायुष्य-लाभ हेतु प्रदीप्त अग्नि में १००८ वार घृतसिक्त दूर्वा द्वारा दस रात्रि तक होम करना चाहिए ।

(२) घृतयुक्त गिलोय से सात दिनों तक १००८ बार होम करने वाला १०० वर्षों तक जीवित रहता है ।

(३) रविवार से प्रारम्भ कर दस रात्रि तक घृतसिक्त तिलों से होम करने वाला दीर्घायु प्राप्त करता है ।

(४) घृतसिक्त मदार की समिधाओं से होम करने वाला आरोग्य प्राप्त करता है ।

(५) सूर्योदय के समय आकण्ठ जल में खड़े होकर दोनों हाथों को ऊपर उठाकर, देवी का ध्यान करके १००८ आहुतियों से होम करने वाला आरोग्य प्राप्त करता है तथा उसकी कामनाएँ भी पूर्ण होती हैं।

(६) चावलों से नित्य होम करने वाले को शीघ्र ही महती लक्ष्मी प्राप्त होती है।

(७) घृतयुक्त लक्ष्मीवल्ली (मेढ़ासींगी) तथा नन्द्यावर्त के पुष्पों एवं पीली सरसों से होम करने वाले साधक को अत्यधिक समृद्धि प्राप्त होती है, साथ ही वह सब प्राणियों में सम्मानित होता है।

(८) खोर का आहार करने वाला, जितेन्द्रिय मन्त्रविद् यदि कालीमिर्च, जीरा तथा नारियल के चूर्ण युक्त गुड़ सहित घृत में पके हुए पुओं से १०८ आहुतियों द्वारा नित्य होम करें तो वह ४९ दिन में ही कुबेर के समान धनी हो जाता है।

(९) गुड़ मिश्रित हविष्य से होम करने वाला साधक धनवान होता है।

(१०) जपापुष्पों से १००८ बार होम करके उसकी भस्म को नागवल्ली (पान) से समन्वित कर, मन्त्र जप करके तिलक लगाने वाला साधक सभी को वश में कर लेता है।

(११) पलाश की समिधाओं तथा पुष्पों से होम करने पर साधक ब्राह्मणों को वश में कर लेता है।

(१२) चमेली के पुष्पों से होम करके साधक राजा को, लाल रंग के शुभ पुष्पों से होम करके वैश्यों को तथा नीले कमलों से होम करके शूद्रों को वश में कर लेता है।

(१३) महुए के फूलों से होम करके साधक स्त्रियों को वश में कर लेता है।

अभिषेक विधि :

यन्त्रभूषित नवपदात्मकमण्डल को लिखकर सर्वसिद्धियों की प्राप्ति हेतु उसका विधिवत् अभिषेक करें, तत्पश्चात् प्रत्येक पद में चन्दन से सर्वाङ्गलिप्त एवं दूर्वा तथा अक्षतों से समन्वित उत्तम लक्षणयुक्त कलशों की स्थापना करें। फिर उन्हें रेशमी वस्त्रों से वेष्टित कर उनमें तीर्थों का जल भर दें।

उत्तम आचार्य को उचित है कि वह एक कर्ष स्वर्ण से कल्पित तथा यन्त्र से संयुक्त पद्म को, मध्य कुम्भ में डाल दें। फिर चन्दन, उशीर, कपूर, जाती, कङ्कोल, कुंकुम, कुठ, अगर, तकाल तथा एला—इन सबको समभाग ले पीसकर, सभी कुंभों में घोल दें तथा रत्न भी डाल दें।

लक्ष्मी, दूर्वा, सदाभद्रा, सहदेई, मधुव्रता, मुशली, शक्रवल्ली, क्रान्ता तथा अपामार्ग – इनके पत्तों को तथा प्रियंगु, मुद्‌ग, गोधूल, व्रीहि, तिल, यव, शालि-तण्डुल तथा माष (उड़द)—इन सबको धोकर उक्त कुंभों में डाल दें।

धात्री, लकुच, बिल्व, कदली तथा नारियल के फलों को भी उनमें डाल दें। पद्म, सौगन्धिक, जाती, मल्लिका, वकुल, चम्पा, अशोक, पुन्नाग, हुलसी तथा केतकी के पुष्प भी उनमें डालें। वट, अश्वरथ, प्लक्ष तथा उदुम्बर वृक्षों के पत्तों तथा सफलान्वित चम्पय के साथ ब्रह्मकूर्च को भी डालकर उन घड़ों के मुँह बन्द करके क्षौमवस्त्रों से ढँक दें।

बीच के कलश में लक्ष्मी का आवाहन करके उनकी पूजा करें। शेष आठ कलशों में उमा की पूजा करें। मनोहर गन्धमय पुष्पों से धूप-दीप के साथ भक्ष्य-भोज्य द्रव्यों को निवेदित उन कुम्भों का स्पर्श करके, मन्त्र का जप करें।

तीन हजार बार जप के बाद साधक संयत साध्य को लाकर स्थण्डिल पर पीठ की स्थापना कर, उस पर उसे रम्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके आदर-पूर्वक बैठाये तथा उसके ऊपर सुहागिन स्त्रियों द्वारा पुष्प तथा अक्षत (चावल) का प्रक्षेपण करायें।

फिर पूजित विप्रों के आशीर्वाद सहित पाँच वाद्यों के बजाये जाने पर शुभ मुहूर्त में महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए, मध्य में स्थित कलश को उठाकर यजमान को स्नान कराके तत्पश्चात् इसी भाँति अन्य कलशों से भी कराये तथा गुरु अपने हाथ से यजमान के मस्तक का स्पर्श करते हुए—"तुम्हारा कल्याण हो, मङ्गल हो, लक्ष्मीजी तुम पर प्रसन्न हों, सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें"—यह आशीर्वाद दे।

फिर, यजमान स्नान करके उठे तथा दो वस्त्र धारण करे—(१) अधोवस्त्र तथा (२) उत्तरीय। तत्पश्चात् यथाविधि आचमन करके गुरु को दण्डवत् प्रणाम करे तथा वस्त्र, आभूषण, धन, धान्य, गाय, भैंस, दास, दासी आदि द्वारा देव बुद्धि से उनका सत्कार करें। तदनन्तर ब्राह्मणों को भोजन करायें। फिर निर्धन, अंधे, लंगड़े, लूले तथा अपंग लोगों को भोजन करायें। फिर अपने घर में बन्धु-बान्धवों सहित गीत-मंगल आदि के द्वारा भारी उत्सव करें।

उक्त विधि से अभिषेक कराने वाला साधक स्वयं को कृतार्थ अनुभव करता है। वह अभिषिक्त होकर शत्रुओं को जीत लेता है। पदाभिलाषी राजपुत्र पद प्राप्त करता है। वन्ध्या-स्त्री अभिषिक्त होकर बुद्धिमान् पुत्र को जन्म देती है।

महारोग, कृत्या-द्रोह अथवा कोई दैवी-बाधा उपस्थित होने पर 'अभिषेक' करना चाहिए। यह मनुष्यों को समस्त सम्पत्तियाँ देने वाला, सब प्रकार के सौभाग्य तथा सिद्धियों को देने वाला, सब रोगों का शमन करने वाला, स्त्रियों के गर्भ का रक्षक, दीर्घायु दाता, शिशु-रक्षक, प्रसूता रक्षक, रजोधर्म नष्ट हो जाने वाली स्त्रियों के पुष्प तथा गर्भ का रक्षक एवं समीप आये हुए शत्रुओं से भयभीत राजा के शत्रुओं को नष्ट करने वाला है।

७ सिद्धलक्ष्येकादशाक्षर मन्त्र प्रयोग

भगवती सिद्धलक्ष्मी का एकादशाक्षर (ग्यारह अक्षरों वाला) मन्त्र निम्नानुसार है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्यै नमः ।"

इस मन्त्र का विधान निम्नानुसार है—

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीसिद्धि लक्ष्मी मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःख दारिद्र्यनाशनार्थं सर्वं कार्यं सिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्ध लक्ष्मी मन्त्र जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास :

ॐ हिरण्यगर्भ ऋषये नमः शिरसि ।
अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।
श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्योनमः हृदि ।
श्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

कर-न्यास :

ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ सिद्ध लक्ष्म्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

हृदयादि षडङ्गन्यास :

ॐ श्रीं हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ क्लीं शिखायै वषट् ।
ॐ श्रीं कवचाय हुम् ।
ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ नमः अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडङ्गन्यास)

ध्यानम् :

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् ।
त्रिनेत्रां खड्गशूलाभी पद्मचक्र गदाधारम् ।।
पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कार भूषिताम् ।
तेजपुञ्जधरीं श्रेष्ठीं ध्यायेद्बाल कुमारिकाम् ।।

उक्त विधि से ध्यान कर, पूर्वोक्त विधि से पीठ-पूजा कर, स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र अथवा मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर, घृत से उसका अभ्यङ्ग कर, उस पर दूध तथा जल की धारा देकर, स्वच्छ वस्त्र से पौंछ डालें तथा

"ॐ सिद्धलक्ष्मी पद्मपीठाय नमः ।"

इस आसन-मन्त्र से आसन देकर उसे पीठ के मध्य स्थापित कर, मूलमन्त्र द्वारा आवाहन से लेकर पञ्चोपचारों द्वारा पूजा कर देवी का ध्यान करके मूल मन्त्र का जप करें।

पुरश्चरण :

इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप है । जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिए । इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए ।

चाँदी के दीपक में गौ घृत भरकर, उसमें ११ तन्तुओं वाली पुष्पवर्तिका डालकर '**दीपं समर्पयामि**' कहते हुए उसे जलाकर रखे, फिर पूर्व दिशा की ओर मुख करके शक्कर का नैवेद्य देकर तथा स्फटिक की माला लेकर, देवी को हृदय में धारण कर, उनका ध्यान तथा मन्त्रार्थ को स्मरण करते हुए प्रातः, मध्याह्न तथा सायं तीनों संध्याओं में मूल मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करें तथा जप के आरम्भ एवं अन्त में 'सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्र' का पाठ करें। स्तोत्र आगे दिया गया है ।

८ | ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

'मन्त्र महोदधि' में ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र इस प्रकार कहा गया है—

"ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः ।"

यह सप्तदशाक्षर (सत्रह अक्षरों वाला) मन्त्र है।

विनियोग :

अस्य ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टिश्छन्दः ज्येष्ठा-लक्ष्मीर्देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः समाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

इसके बाद मूल-मन्त्र से हाथ धोकर निम्नानुसार न्यास करें।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि ।
अष्टिश्छन्दसे नमो मुखे ।
ज्येष्ठालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि ।
ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ।
श्रीं शक्तये नमः पादयोः ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

करन्यास :

ऐं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाय नमः ।
ज्येष्ठा लक्ष्मि तर्जनीभ्यां नमः ।
स्वयंभुवे मध्यमाभ्यां नमः ।

ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ।
ज्येष्ठायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

हृदयादिषडङ्गन्यास :

ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ।
ज्येष्ठा लक्ष्मि शिरसे स्वाहा ।
स्वयंभुवे शिखायै वषट् ।
ह्रीं कवचाय हुम् ।
ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट् ।
नमः अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडङ्गन्यासः)

मन्त्रवर्ण सर्वाङ्गन्यास :

ॐ ऐं नमः शिरसि ।
ॐ ह्रीं नमः भ्रूमध्ये ।
ॐ श्रीं नमो मुखे ।
ॐ ज्येष्ठ लक्ष्म्यै नमः हृदि ।
ॐ स्वयम्भुवे नमः नाभौ ।
ॐ ह्रीं नमः आधारे ।
ॐ ज्येष्ठायै नमः जानुनि ।
ॐ नमः नमः पादयोः ।

इसके बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान :

उद्यद्भास्कर सन्निभा स्मितमुखीरक्ताम्बरा लेपना
सत्कुम्भधनभाजनंसृणिमथोपा शंकरैर्बिभ्रती ।
पद्मस्था कमलेक्षणा दृढ़कुचा सौन्दर्यवाराग्निधि
र्ध्यातव्या सकलाभिलाषफलदा श्री ज्येष्ठलक्ष्मीरियम् ॥

पीठ पूजा :

इसके पश्चात् पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि पर तत्त्वान्त पीठ-देवताओं को स्थापित करें—

"ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः।"

इस मन्त्र से पीठ-देवताओं की पूजा कर, नव पीठ शक्तियों की निम्नानुसार पूजा करें। फिर इन्हें वक्ष्यमाण गायत्री-मन्त्र से आसन दें।

यथा पूर्व दिशादि क्रम से—

ॐ लोहिताक्ष्यै नमः।

ॐ विरूपायै नमः।

ॐ करालयै नमः।

ॐ नील लोहितायै नमः।

ॐ समदायै नमः।

ॐ वारुण्यै नमः।

ॐ पुष्ट्यै नमः।

ॐ अमोघायै नमः।

मध्य में—

ॐ विश्वमोहिन्यै नमः।

उक्त विधि से नवपीठ शक्तियों की पूजा करने के पश्चात् स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र अथवा मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत में उसका अभ्यङ्ग करें तथा उस पर दुग्धधारा एवं जलधारा डालकर, स्वच्छ वस्त्र से पौंछकर निम्नलिखित गायत्री मन्त्र द्वारा उसे पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में स्थापित कर, प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादिपुष्पान्त उपचारों द्वारा पूजन कर, देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा प्रारम्भ करें।

आसन प्रदान करने का गायत्री मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात्।"

आवरण-पूजा :

सर्वप्रथम हाथ में पुष्पांजलि ले, मूलमन्त्र का उच्चारण करके,

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये।

अनुज्ञांदेहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे॥

यह पढ़ते हुए पुष्पांजलि दें। फिर षट्कोण केसरों में, आग्नेय आदि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशा में निम्नानुसार मन्त्रों का उच्चारण करते हुए आवरण पूजा आरम्भ करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी के पूजन का यन्त्र नीचे प्रदर्शित है—

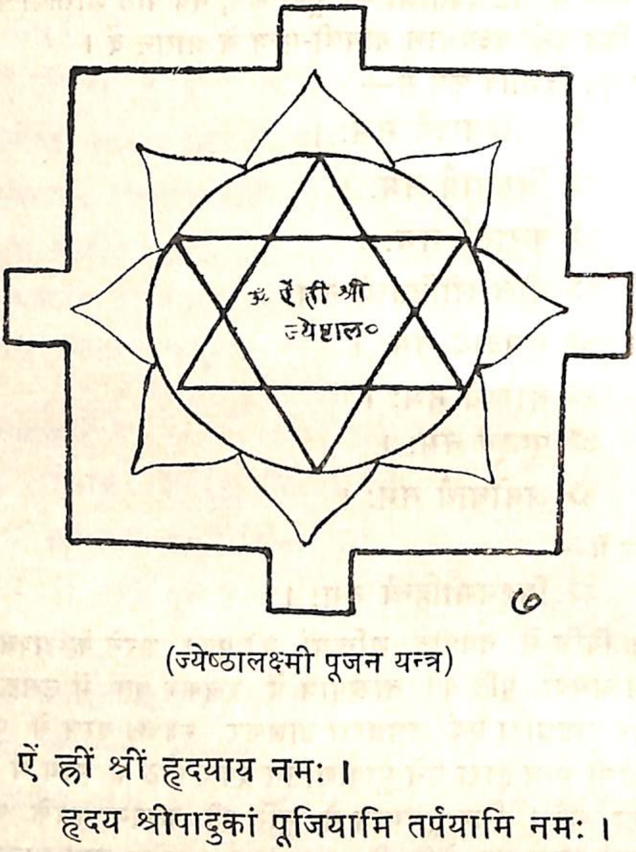

(ज्येष्ठालक्ष्मी पूजन यन्त्र)

षडङ्गपूजा :

ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः।

हृदय श्रीपादुकां पूजियामि तर्पयामि नमः।

(इति सर्वत्रः)

ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा।

शिरः श्रीपादुकां पूजयामि०···।

स्वयंभुवे शिखायै वषट्।

शिखा श्रीपादुकां पूजयामि०···।

ह्रीं कवचाय हुम्।

कवच श्रीपादुकां पूजयामि०···।

ज्येष्ठायै नेत्र त्रयाय वौषट् ।

नेत्र त्रय श्रीपादुकां पूजयामि०···।

नमः अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि०···।

उक्त विधि से षडङ्गों की पूजा कर, पुष्पांजलि हाथ में ले, मूलमन्त्र का उच्चारण करके—

अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

यह पढ़कर पुष्पांजलि दें, तथा—

'पूजितास्तर्पिताः सन्तु'

यह कहें ।

(इति प्रथमावरणं)

अष्टमातृका पूजन :

इसके बाद पूजा तथा पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करते हुए, प्राची क्रम से—

ॐ ब्राह्मयै नमः ।

ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इति सर्वत्रः)

ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

माहेश्वरी श्रीपादुकां०···।

ॐ कौमार्यै नमः ।

कौमारी श्रीपादुकां०··· ।

ॐ वैष्णव्यै नमः ।

वैष्णवी श्रीपादुकां०···।

ॐ वाराह्यै नमः ।

वाराही श्रीपादुकां०···।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

इन्द्राणी श्रीपादुकां०···।

ॐ चामुण्डायै नमः ।
चामुण्डा श्रीपादुकां०…।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
महालक्ष्मी श्रीपादुकां०…।

उक्त विधि से अष्टमातृकाओं का पूजन कर, पूर्वोक्त प्रकार से पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति द्वितीयावरणं)

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दिक्पाल तथा वज्रादि उनके आयुधों की पूजा कर पुष्पांजलि दें । आवरण पूजा समाप्त करके धूपदान से लेकर नमस्कारान्त उपचारों से पूजा और जप करें ।

पुरश्चरण :

इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप है । घृत युक्त खीर से जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करें । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है । मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें ।

एक लाख जप करके उसका दशांश घृत मिश्रित खीर से होम करके वक्ष्यमाण पीठ पर महालक्ष्मी का पूजन करके, जप आदि करने से सिद्ध मन्त्र अभीप्सित फल देता है ।

९ | वसुधा लक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

'मन्त्रमहोदधि' में वसुधा लक्ष्मी मन्त्र निम्नानुसार कहा गया है, साथ ही इसे 'ज्येष्ठा लक्ष्मी के वित्तीय मन्त्र' की संज्ञा दी गई है।

ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नंमेदेह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ।

विनियोग :

अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी (अथवा—वसुसा ज्येष्ठा लक्ष्मी) मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः वसुधाश्रियौ दैवते ग्लौं बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्ट प्राप्तो जपे विनियोगः।

इसके बाद निम्नानुसार न्यास करें।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे।
वसुधाश्री देवतायै नमो हृदि।
ग्लौं बीजाय नमो लिङ्गे।
श्रीं शक्तये नमः पादयोः।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

(इति ऋष्यादिन्यास)

करन्यास :

ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं अंङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ अन्नं देहि ग्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लौं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

पञ्चाङ्ग न्यास :

ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः ।

ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा ।

ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै: वषट् ।

ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम् ॥

ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट् ।

उक्त प्रकार से न्यास करने के बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान :

कल्पद्रुमाधोमणि वेदिकायां
समास्थिते वस्त्र विभूषणाढ्ये ।
भूमिश्रियौ वाञ्छितवामदक्षे
संचिन्तयेद्देव मुनीन्द्र वंघे ॥

भावार्थ—कल्पवृक्ष के नीचे मणि वेदिका पर वाम तथा दक्षिण भाग में विराजमान, वस्त्र तथा आभूषणों से अलंकृत एवं देवता तथा मुनियों से वंदित भूमि एवं श्री का मैं ध्यान करता हूँ ।

पीठशक्ति-पूजा :

ध्यानोपरान्त मानसोपचार से पूजन कर, विधिवत् शंख स्थापित कर, सामान्य पूजा पद्धति के अनुसार निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पीठ के मध्य पीठ-देवताओं का पूजन करना चाहिए । यथा—

पीठ के मध्य में—

ॐ आधार शक्तये नमः ।

ॐ प्रकृतये नमः ।

ॐ कूर्माय नमः ।

ॐ अनन्ताय नमः ।

ॐ पृथिव्यै नमः ।

ॐ क्षीर समुद्राय नमः ।

ॐ श्वेतद्वीपाय नमः ।

ॐ मणिमण्डपाय नमः ।

ॐ कल्पवृक्षाय नमः ।

ॐ मणिवेदिकायै नमः ।

ॐ रत्नसिंहासनाय नमः ।

फिर आग्नेय आदि कोणों में निम्नलिखित मन्त्रों से धर्म आदि का पूजन करें—

ॐ धर्माय नमः—आग्नेये ।

ॐ ज्ञानायनमः—नैऋत्ये ।

ॐ वैराग्याय नमः—वायव्ये ।

ॐ ऐश्वर्याय नमः—ईशान्ये ।

फिर, पूर्व आदि दिशाओं में अधर्म आदि का पूजन करना चाहिए, यथा—

ॐ अधर्माय नमः—पूर्वे ।

ॐ अज्ञानाय नमः—दक्षिणे ।

ॐ अवैराग्याय नमः—पश्चिमे ।

ॐ अनैश्वर्याय नमः—उत्तरे ।

इसके बाद पुनः पीठ के मध्य में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा अनन्त आदि का पूजन करना चाहिए। यथा—

ॐ अनन्ताय नमः ।

ॐ पद्माय नमः ।

ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः ।

ॐ सोममण्डलाय षोडश कलात्मने नमः ।

ॐ बह्नि मण्डलाय दशकलात्मने नमः ।

ॐ सं सत्त्वाय नमः ।

ॐ रं रजसे नमः ।

ॐ तं तमसे नमः ।

ॐ आं आत्मने नमः ।

ॐ अं अन्तरात्मने नमः ।

ॐ पं परमात्मने नमः ।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ।

फिर, पूर्वादि केसरों में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आठ दिशाओं एवं मध्य भाग में पीठ शक्तियों का पूजन करें । यथा—

ॐ विमलायै नमः ।

ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ।

ॐ ज्ञानायै नमः ।

ॐ क्रियायै नमः ।

ॐ योगायै नमः ।

ॐ प्रह्वयै नमः ।

ॐ सत्यायै नमः ।

ॐ ईशानायै नमः ।

मध्य में—

ॐ अनुग्रहायै नमः ।

इसके बाद—

"ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्म संयोग योगपद्म पीठात्मने नमः ।"

इस मन्त्र द्वारा दोनों देवियों को इस पूजित पीठ पर आसन देकर, मूलमन्त्र का आवाहन कर, पाद्यादि उपचारों से पञ्चपुष्पांजलि दान पर्यन्त विधिवत् पूजन करें ।

इससे पश्चात् देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करें । वसुधा लक्ष्मी के पूजन यन्त्र का स्वरूप आगे प्रदर्शित है—

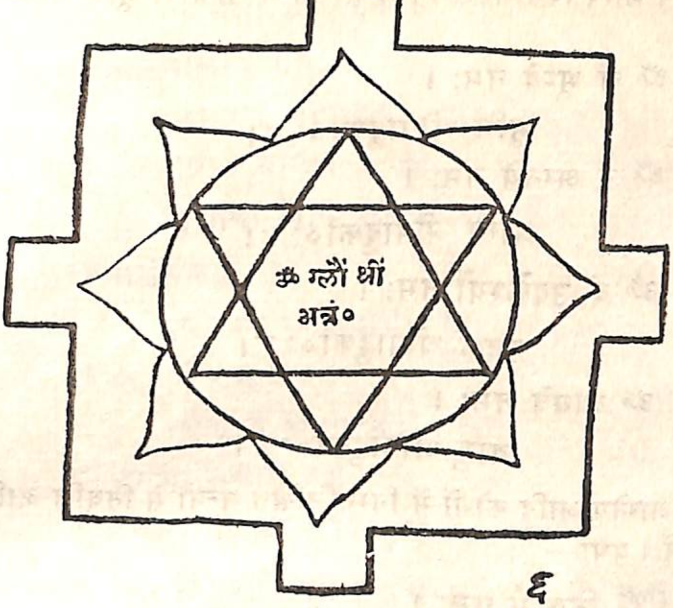

(वसुधा लक्ष्मी पूजन यन्त्र)

आवरण पूजा :

सर्वप्रथम केसरों में निम्नलिखित मन्त्रों से अङ्गपूजा करें—

ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः ।

हृदय श्रीपादुकां०…।

ॐ अन्नं देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा ।

शिरः श्रीपादुकां०…।

ॐ अनाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट् ।

शिखा श्रीपादुकां०…।

ॐ यमान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम् ।

कवच श्रीपादुकां०…।

ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्रीपादुकां०…।

फिर पूर्व आदि दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा भूमि आदि का पूजन करें—

ॐ लं भूम्यै नमः ।

भूमि श्रीपादुकां०…।

ॐ रं अग्नये नमः ।

अग्नि श्रीपादुकां०…।

ॐ वं उदकेभ्यों नमः ।

उदक श्रीपादुकां०…।

ॐ वायवे नमः ।

वायु श्रीपादुकां०…।

फिर आग्नेय आदि कोणों में निम्नलिखित मन्त्रों से निवृत्ति आदि कलाओं का पूजन करें । यथा—

ॐ निवृत्यै नमः ।

निवृत्ति श्रीपादुकां०…।

ॐ प्रतिष्ठायै नमः ।

प्रतिष्ठा श्रीपादुकां०…।

ॐ विद्यायै नमः ।

विद्या श्रीपादुकां०…।

ॐ शान्त्यै नमः ।

शान्ति श्रीपादुकां०…।

फिर अष्टदलों में पूर्व आदि दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों से बलाका आदि ८ शक्तियों की पूजा करनी चाहिए । यथा—

ॐ बलाकायै नमः ।

बलाका श्रीपादुकां०…।

ॐ विमलायै नमः ।

विमला श्रीपादुकां०…।

ॐ कमलायै नमः ।
कमला श्रीपादुकां०…।
ॐ वनमालायै नमः ।
वनमाला श्रीपादुकां०…।
ॐ विभीषायै नमः ।
विभीषा श्रीपादुकां०…।
ॐ मालिकायै नमः ।
मालिका श्रीपादुकां०…।
ॐ शांकर्यै नमः ।
शाङ्करी श्रीपादुकां०…।
ॐ वसुमालिकायै नमः ।
वसुमालिका श्रीपादुकां० ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों की तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके मन्त्र-जप करें ।

पुरश्चरण :

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । जप का दशांश घृत-सिक्त अन्न का होम है । होम से दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें । इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें ।

प्रयोग विधि :

(१) एक लाख मन्त्रों का जप करके, जप का दशांश घृत-सिक्त अन्न से होम करके, वैष्णव पीठ पर वसुधा लक्ष्मी का पूजन करने से महती धन-सम्पदा प्राप्त होती है ।

(२) घृत-सिक्त तिल तथा बेल की समिधाओं से होम करने पर धन-लाभ होता है ।

(३) इस मन्त्र का जप करने वाले को प्रतिदिन घृत सहित खीर, बेलपत्र तथा फलों से होम करना चाहिए स्वयं कुबेर-यन्त्र —"ॐ **वैश्रवणाय स्वाहा**" से बरगद की समिधाओं द्वारा दस बार होम करे एवं होम के समय अग्नि के मध्य कुबेर का निम्नानुसार ध्यान करें—

कुबेर ध्यान मन्त्र :

घनपूर्णं स्वर्णकुम्भं तथा रत्नकरण्डकम् ।
हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकरपादं च तुन्दिलम् ।।
वटाधस्ताद्रत्नवीणेपविष्टं सुस्मिताननम् ।
एवं कृत हुतो सन्त्री लक्ष्म्या जयति वित्तपम् ।।

इसके बाद स्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए।

इस मन्त्र के प्रयोग से साधक की दरिद्रता दूर होती है तथा विपुल धन-सम्पत्ति का लाभ होता है।

१० लक्ष्मी के अन्य मन्त्र

तेईस अक्षर का मन्त्र

प्राकृत ग्रंथ में लक्ष्मीजी का त्रयोविंशत्यक्षर अर्थात् तेईस अक्षरों वाला मन्त्र निम्नानुसार कहा है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं लक्ष्मी रागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।"

विधान—इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपने मात्र से ही लक्ष्मी प्रसन्न होकर साधक को धन प्रदान करती हैं।

त्रिशक्ति का मंत्र

"श्रीं ह्रीं क्लीं।"

विधान—इस मन्त्र के साथ 'श्रीपादुकां पूजयामि नमः' लगाने से पूजन मन्त्र बन जाता है। इसकी गणना 'लक्ष्मी-पंचक' की देवियों के मन्त्र के अन्तर्गत की जाती है।

सर्व साम्राज्या का मन्त्रा

"श्रीं स्ह्क्लह्रीं श्रीं।"

टिप्पणी—यह मन्त्र भी 'लक्ष्मी पंचक' की देवियों में एक का है।

उक्त सभी मन्त्रों के साधन हेतु पूर्वोक्त किसी भी विधि का उपयोग किया जा सकता है।

महालक्ष्मी-मन्त्र

"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।"

विधि :

प्रातः कृत्यादि पूर्वोक्त 'ऋष्यादि न्यासान्त' समस्त कर्म करके 'कराङ्ग न्यास करें। यथा—

श्रीं ह्लीं श्रीं कमले श्रीं ह्लीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
,, ,, ,, कमलालये श्रीं ह्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
,, ,, ,, प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्।
,, ,, ,, प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं अनामिकाभ्यां हुं।
,, ,, ,, महालक्ष्मि श्रीं ह्लीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
,, ,, ,, नमः महालक्ष्मि श्रीं ह्लीं श्रीं अस्त्राय फट्।''

इसी प्रकार 'हृदयादि षडङ्गन्यास' करने के बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान :

सिन्दूरारुणकान्तिमब्ज वसतिं सौन्दर्यवारां निधि
कोटीरांगद हार कुण्डलकटी सूत्रादिभिर्भूषिताम्।
हस्ताब्जैर्वसु पात्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां
परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः।

उक्त विधि से ध्यान कर, मानसोपचारों से पूजा कर शंख-स्थापन करें। फिर पूर्ववत् पीठ-पूजा कर ध्यान-आवाहनादि पञ्च-पुष्पांजलि दान, दान पर्यन्त समस्त कार्य कर, आवरण-पूजा आरम्भ करें। अग्न्यादि कोणों में, मध्य में तथा चारों दिशाओं में निम्नानुसार अङ्ग पूजा करें—

अङ्ग-पूजा :

श्रीं ह्लीं श्रीं कमले श्रीं ह्लीं श्रीं हृदयाय नमः।
,, ,, ,, कमलालये श्रीं ह्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा।
,, ,, ,, प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं शिखायै वषट्।
,, ,, ,, प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं कवचाय हुं।
,, ,, ,, महालक्ष्मि श्रीं ह्लीं श्रीं नेत्र त्रयाय वौषट्।
,, ,, ,, नमः श्रीं ह्लीं श्रीं अस्त्राय फट्।

इसके बाद मूल-भाग में पूर्वादि क्रम से—

ॐ श्रीधराय नमः ।
ॐ हृषीकेशाय नमः ।
ॐ वैकुण्ठाय नमः ।
ॐ विश्वरूपाय नमः ।
ॐ वासुदेवाय नमः ।
ॐ सङ्कर्षणाय नमः ।
ॐ प्रद्युम्नाय नमः ।
ॐ अनिरुद्धाय नमः ।

इन देवताओं की तथा दलों के मध्य में—

ॐ भारत्यै नमः ।
ॐ पार्वत्यै नमः ।
ॐ चान्द्र्यै नमः ।
ॐ शच्यै नमः ।
ॐ दमकाय नमः ।
ॐ सलिलाय नमः ।
ॐ गुग्गुलवे नमः ।
ॐ कुरुकण्टकाय नमः ।

इन देवताओं और दलों के अग्र भाग में—

ॐ अनुरागाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।
ॐ विसवादाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।
ॐ विजयाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।
ॐ वल्लभाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।
ॐ मदाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।
ॐ हर्षाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।

ॐ बलाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।
ॐ तेजाय महालक्ष्मी वाणाय नमः ।

इनके बाहर इन्द्रादि दिक्पालों तथा उनके वज्रादि अस्त्रों की पूजा करनी चाहिए । तदनन्तर धूपादि देकर विसर्जनान्त समस्त कर्म सम्पन्न करने चाहिए ।

पुरश्चरण :

इस मन्त्र के पुरश्चरण में एक लाख जप करना चाहिए । जप के अन्त में संस्कृत-अग्नि में घृत-मधु-शर्करा युक्त विल्व फलों द्वारा पूर्वोक्त प्रणाली से क्रमशः दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए ।

११ | सामान्य पूजा विधि

लक्ष्मी पूजन के नियम

आद्याशक्ति के रूप में भगवती लक्ष्मी का पूजन सर्वप्रथम भगवान् विष्णु ने ही किया था। तत्पश्चात् ब्रह्मा, इन्द्र, कुबेर आदि देवताओं ने भी उनका पूजन किया। भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी से आरम्भ कर एक पक्ष अर्थात् पन्द्रह दिनों तक ब्रह्माजी ने लक्ष्मीजी का पूजन किया था। उसी समय से लक्ष्मी-पूजा तीनों लोकों में प्रचलित हुई है।

श्री विष्णु ने चैत्र, पौष तथा भाद्रपद मास में एवं मनुमहाराज ने पौष मास की संक्रान्ति के दिन लक्ष्मी-पूजन किया था, अतः ये तीन महीने लक्ष्मी-पूजन के लिए विशेष शुभ माने जाते हैं। इन महीनों के शुक्ल पक्ष में वृहस्पतिबार के दिन लक्ष्मी-पूजन करना विशेष फलप्रद होता है। यदि वृहस्पतिवार को तिथि, नक्षत्र आदि का शुभ योग न हो तो इन महींनों के रविवार अथवा सोमबार को लक्ष्मी-पूजन करना चाहिए। पंचमी, दशमी अथवा पूर्णिमा तिथि वाले गुरुवार को लक्ष्मी-पूजन का विशेष माहात्म्य है।

पौष मास के शुक्ल-पक्ष की दशमी, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तथा भाद्रपद मास की पूर्णिमा—ये तिथियाँ लक्ष्मी-उपासना के लिए अ यन्त शुभ मानी गई हैं।

जो व्यक्ति दीपावली को लक्ष्मी-पूजन करना चाहें, वे दिन में निर्जल-व्रत रखकर सन्ध्या के समय लक्ष्मी-पूजनोपरान्त केवल फलाहार अथवा दुग्धाहार करें। सन्ध्या हो जाने पर रात्रि से दूसरे दिन प्रातःकाल तक भगवती महालक्ष्मी की प्रसन्नता हेतु दीप-दान करना चाहिए। रातभर जागरण भी करना चाहिए तथा दीपकों के प्रकाश से अपने घर के प्रत्येक भाग को आलोकित बनाये रखना चाहिए।

दूसरे दिन दूध-दही से पार्वण श्राद्ध कर, भगवती की प्रसन्नता के लिए दीप-दान करना चाहिए तथा श्वेत वस्त्र धारण करके भोजन करना चाहिए। इसदिन

लक्ष्मीजी का पूजन श्वेत कमलों तथा श्वेत रंग के अन्य पुष्पों से करना चाहिए एवं अपने शरीर पर श्वेत वस्त्र ही धारण करने चाहिए।

दीपावली की अमावस्या को प्रदोश-काल में लक्ष्मी-पूजन तथा दीप-दान करने का नियम है। यदि अमावास्या तिथि दो दिन हो तथा दूसरे दिन अमावास्या तिथि केवल एक दण्ड रात्रि तक ही रहे तो पहले दिन को छोड़कर दूसरे दिन ही लक्ष्मी-पूजन करना चाहिए।

दीपावली को लक्ष्मी-पूजन करने के लिए पूजनकर्ता को उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए तथा देवी की प्रसन्नता के लिए दीपावली की रात्रि को नदी, पर्वत, चौराहा, श्मशान आदि स्थानों में भी प्रज्ज्वलित दीपक रखने चाहिए।

प्रतिपदा, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी तथा अमावास्था को लक्ष्मी-पूजन का निषेध किया गया है, परन्तु कार्तिक मास की अमावास्या को महालक्ष्मी का पूजन करना विशेष शुभ माना गया है।

प्रथम मास, संक्रान्ति, अपराह्न काल तथा रात्रि के समय भी लक्ष्मी का पूजन करना वर्जित है, परन्तु दीपावली की रात्रि के समय ही लक्ष्मीजी की आराधना, उपासना तथा पूजन करने की आज्ञा शास्त्रों ने दी है।

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा पूर्वाभाद्रपदा—इन चारों नक्षत्रों में तथा कृष्णपक्ष में लक्ष्मी-पूजन का निषेध है, परन्तु कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की अमावास्या की रात्रि के समय लक्ष्मी-पूजन करना शुभ माना गया है।

भगवती लक्ष्मी की पूजा में घण्टा नहीं बजाना चाहिए। छिन्दि तथा कांचन-पुष्प द्वारा भी लक्ष्मीजी का पूजन नहीं करना चाहिए। सामान्य लक्ष्मी-पूजन में लाल रंग के कमल पुष्प सर्वाधिक शुभ माने गये हैं। परन्तु दीपावली के पूजन में श्वेत-कमल अथवा श्वेत रंग के पुष्पों का ही प्रयोग करना चाहिए।

ऐसी मान्यता है कि दीपावली की रात्रि में भगवती लक्ष्मी विश्व-भ्रमण पर निकलती हैं तथा जिन स्थानों पर अपनी पूजा-आराधना होते हुए देखती हैं, वहीं-वहीं अपना निवास बना लेती हैं। अतः दीपावली को लक्ष्मी-पूजन अवश्य करना चाहिए। हमारे देश में दीपावली के दिन लक्ष्मी-पूजन की प्रथा सहस्रों वर्षों से प्रचलित हैं।

लक्ष्मीजी का आसन कमल है तथा उनका वाहन 'उलूक' पक्षी है। उनके शरीर का वर्ण गौर है तथा चार भुजाएँ हैं। वे अपने मस्तक पर मुकुट तथा शरीर पर दिव्य वस्त्रालंकारों को धारण करती हैं।

सामान्य पूजा विधि

सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, स्वच्छ तथा धुले हुए वस्त्र धारण कर, आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें और शिखा में गाँठ बाँधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें, भगवती महालक्ष्मी की प्रतिमा तथा इस पुस्तक के दूसरे पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को चौकी के ऊपर वस्त्र बिछाकर, स्थापित करें। पूजन-सामग्री को एकत्र कर समीप ही रख लें। कलश में जल भर कर उसे पूर्व दिशा की ओर स्थापित करदें तथा घृत का दीपक जला कर धूपबत्ती, अगरबत्ती आदि जलादें। तत्पश्चात् सर्वप्रथम गणेशजी का ध्यान करें, क्योंकि प्रत्येक शुभ कार्य की निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए श्रीगणपति का प्रथम स्मरण करना चाहिए। तदुपरान्त स्वस्तिवाचन, भूत शुद्धि, पवित्रीकरण आदि प्रारम्भिक क्रियाएँ सम्पन्न करके यथा-विधि लक्ष्मीजी का पूजन करें। दीपावली को विशेष पूजन की विधि, जो आगे दी गई है, उसके अनुसार कार्य करें। पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, चालीसा, आरती आदि का पाठ करें। क्रमानुसार पूजन की विधि निम्नानुसार है—

"सर्वप्रथम हाथ में अक्षत, जल तथा पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए श्रीगणेशजी का ध्यान करें। दीपावली को भी गणेशजी तथा लक्ष्मीजी दोनों का पूजन किया जाता है। गणेशजी की प्रतिमा को लक्ष्मीजी की प्रतिमा के वामाङ्ग में रखना चाहिए, क्योंकि गणेशजी पार्वती-पुत्र होने के कारण लक्ष्मीजी के भी पुत्र समान ही हैं।"

श्री गणेश-ध्यान मन्त्र :

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक: ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक: ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन: ।
द्वादशै:तानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटश्चैव विघ्न तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।

श्रीगणेशजी का ध्यान करने के पश्चात् हाथ के अक्षत, पुष्प तथा जल को पूजा-चौकी पर श्रीगणेशजी के उद्देश्य से निक्षिप्त करदें। तदुपरान्त पुनः हाथ में जल लेकर अग्रानुसार 'स्वस्तिवाचन' का पाठ करें—

स्वस्ति-वाचन :

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा: विश्ववेदा: । स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्ट नेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।१।।

ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा: । पय: स्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम् ।।२।।

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसि विष्णोध्र ुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्ता ।।३।।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवताऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।।४।।

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्ति: पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्व ७ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति सामाशान्ति रेधि ।।५।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ।।

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्तिर्भवतु ।।

टिप्पणी—उक्त 'स्वस्ति-वाचन' में तथा आगे वर्णित मन्त्रों में जहाँ ॅ तथा ७ इस प्रकार के चिह्न हों, वहाँ 'ग्वं' की भाँति उच्चारण करना चाहिए। जैसे—'सर्व ७ शान्ति' का उच्चारण 'सर्वग्वं शान्ति' होगा।

स्वस्तिवाचनोपरान्त आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से तीन बार आचमन करें तथा तीन बार अपने मस्तक पर थोड़ा-थोड़ा जल छिड़कें। तदुपरान्त दोनों हाथों को शुद्ध जल से धोलें।

पवित्रीकरण का मन्त्र :

ॐ अपवित्र: पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तर: शुचि: ।

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़ककर आचमन करें। फिर हाथ धो डालें। तदुपरान्त 'भूत-शुद्धि' के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें —

भूत-शुद्धि का मन्त्र :

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

'भूत-शुद्धि' के उपरान्त दाँये हाथ में जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर निम्नलिखित 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करें—

संकल्प-वाक्य :

हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत देशैक पुण्य क्षेत्रे षष्ठि संवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, गुरौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुण विशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न, 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मा इत्यादि) ऽहं धमर्थि काम मोक्ष हेतवे श्री लक्ष्मी पूजनमहं करिष्ये ।

टिप्पणी—उक्त 'संकल्प-वाक्य' में जहाँ-जहाँ 'अमुक' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ-वहाँ क्रमशः तत्कालीन संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, वार, सूर्यादि की राशि तथा अपने गोत्र, अपने नाम एवं अपनी जाति का उच्चारण करना चाहिए। जैसे—उत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, वैशाख मासे, शुक्ल पक्षे, द्वितीयां, भरणी नक्षत्रे, गुरु वासरे, वशिष्ठ गोत्रोत्पन्न ज्ञानेन्द्र दीक्षित शर्माऽहं' आदि । ब्राह्मण को अपने नाम के आगे 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं, वैश्य को 'गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं' शब्द का उच्चारण करना चाहिए।

'सङ्कल्प-वाक्य' के पश्चात् दाँये हाथ में चावल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए श्रीलक्ष्मीजी का 'ध्यान' करना चाहिए—

ध्यान के मन्त्र :

या श्रीः पद्मासनस्था विपुल कटितटी पद्मपत्रायताक्षी ।
गंभीरावर्त्तनाभितनुभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ॥

या लक्ष्मी दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्थापितां हेम कुंभैः ।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतुगृहे सर्वमाङ्गल्य युक्ता ।।१।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपम-शिवनी व्याप्त्तम । इष्णन्निषाणमुंमऽइषाण सर्वलोकमऽइषाण ।। मक्ष्म्यै नमः ।।२।।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कार भूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।३।।
पद्मासन स्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।४।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।५।।

ध्यानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए लक्ष्मीजी का 'आवाहन' करें—

आवाहन का मन्त्र :

सर्वलोकस्य जननी वीणा पुस्तक धारिणी ।
सर्वदेवमयीमीशा देव्यामावाहयाम्यह्यं ।।

'आवाहन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवती को 'आसन' प्रदान करें—

आसन का मन्त्र :

तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणि विराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ।।

'आसन' के बाद निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके 'पाद्य' देने हेतु पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य का मन्त्र :

''सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यंगन्धादिभिर्युतम् ।
मयादत्तं गृहाणेदं भगवती भक्त वत्सले ।।

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' देने के लिए पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य का मन्त्र :

अष्टगंध समायुक्तं स्वर्णपात्र प्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाणमद्दत्तं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते ।।

'अर्घ्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के निमित्त जल का निक्षेप करें—

आचमन का मन्त्र :

सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मा विष्णु शिवादिभिः ।
स्तुता ददाम्याचमनं महालक्ष्म्यै मनोहरम् ।।

'आचमन' के बाद 'स्नान' हेतु निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल का निक्षेप करें—

स्नान का मन्त्र :

पंचमृत समायुक्तं जाह्नवीं सलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्व जननी स्नानार्थं भक्तवत्सले ।।

टिप्पणी—यदि पंचामृत हो तो पहले उसी में लक्ष्मीजी की धातु-प्रतिमा, यन्त्र अथवा सिक्के को डुबकी देकर स्नान कराना चाहिए, पत्पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराना चाहिए। यदि मिट्टी की मूर्ति का पूजन किया जा रहा हो तो उस स्थिति में केवल जल का ही निक्षेप करना चाहिए।

स्नानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र का जोड़ा' समर्पित करना चाहिए—

वस्त्र युग्म का मन्त्र :

"दिव्याम्बरं नूतनंहि क्षौमंत्वति मनोहरम् ।
दीयमानं मयादेवि गृहाण जगदम्बिके ।।"

'वस्त्र-युग्म' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'उपवस्त्र' अर्थात् 'कंचुकी' समर्पित करनी चाहिए—

उपवस्त्र का मन्त्र :

कञ्चुकी उपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम् ।
गृहाणत्वं मयादत्तं मङ्गलाः जगदीश्वरी ।।

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क का मन्त्र :

कपिलं दधि कुन्देन्दु धवलं मधु संयुतम् ।
स्वर्ण पात्र स्थितं देवि मधुपर्क गृह्राण मे ।।

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' सर्मपित करें—

आभूषण का मन्त्र :

रत्नकङ्कणवैदूर्य मुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नेनमनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे ।।

'आभूषण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'श्वेत चन्दन' समर्पित करें—

श्वेत चन्दन का मन्त्र :

श्री खण्डागरु कर्पूर मृगनाभि समन्वितम् ।
विलेपनं गृहाणत्वं नमोऽस्तुभक्तवत्सले ।।

'श्वेत चन्दन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'रक्त चन्दन' (लाल चन्दन) समर्पित करें—

रक्त चन्दन का मन्त्र :

रक्तचन्दन सम्मिश्रं पारिजात समुद्भवम् ।
मयादत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध संयुतम् ।।

'रक्त चन्दन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मन्त्र :

सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूर तिलकं प्रिये ।
भक्त्यादत्तं मयादेवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र :

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुम कामरूपिणम् ।
अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ।।

'कुंकुम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सुगन्धित तैल' एवं 'इत्र' समर्पित करें—

सुगन्धित तैल का मन्त्र :

तैलानि च सुगंधीनि द्रव्याणि विविधानि च ।
मयादत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरी ।।

'सुगन्धित तैल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र :

अक्षतान्निर्मलां शुद्धाम् मुक्तामणि समन्विताम् ।
गृहाण त्वं महादेवि देहि मे निर्मलांधियम् ।।

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प तथा कमल' समर्पित करें—

पुष्प का मन्त्र :

मन्दार पारिजाताद्यं पाटलं केतकीं तथा ।
मेरुवामोगरं चैव गृहणाशु मनोऽस्तुते ।।"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मन्त्र :

पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहणत्वं सुरेश्वरि ।।

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दूर्वा' समर्पित करें—

दूर्वा का मन्त्र :

विष्णवादि सर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनाम् ।
क्षीरसागर सम्भूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ।।

'दूर्वा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अबीर-गुलाल' समर्पित करें—

अबीर-गुलाल का मन्त्र :

अबीरं च गुलालं च चोबा चन्दनमेव च ।
अबीरेणार्चिता देवी ह्यत: शान्ति प्रयच्छ च ।।

'अबीर-गुलाल' के बाद निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करनी चाहिए—

धूप का मन्त्र :

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्य: गन्ध उत्तम: ।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र :

कर्पूरवर्त्ति संयुक्तं घृत युक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरी ।।

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य का मन्त्र :

नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्य भोज्य समन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं महालक्ष्म्यै: नमोऽस्तुते ।।

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ऋतुफल' समर्पित करें—

ऋतुफल का मन्त्र :

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णा: सन्तु मनोरथा: ।।

'फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनार्थं जल' का निक्षेप करें—

आचमनीय मन्त्र :

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितं ।
आचम्यतामिदं देवि प्रसीद त्वं सुरेश्वरि ।।

'आचमनीय जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र :

एलालवङ्ग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र :

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसौः ।
अनन्तपुण्य फलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ।।

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नीराजन' (आरती) करें—

नीराजन का मन्त्र :

चक्षुदं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरी ।।

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मन्त्र :

यानिकानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे ।।

'प्रदक्षिणा' के बाद निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नमस्कार' निवेदित करें—

नमस्कार का मन्त्र :

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मयादेवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

'नमस्कार' के बाद दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पांजलि' प्रदान करें—

पुष्पांजलि के मन्त्र :

केतकी जाति कुसुमैर्मल्लिका मालती भवैः ।
पुष्पांजलिर्मयादत्ततावत्प्राप्यै नमो ऽस्तुते ।।

'पुष्पांजलि' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रार्थना' करें—

प्रार्थना का मन्त्र :

सुरा सुरेन्द्रादिकिरीट मौक्तिकै
र्युतं सदायस्तवपादपङ्कजम् ।।
परावरं पातु वरं सुमङ्गलं,
नमामि भक्त्या तव काम्य सिद्धये ।।

दीपावली पर विशेष-पूजन

दीपावली पर विशेष पूजन के समय बही-खाता, कलम-दावात, तराजू, तिजोरी, मानदण्ड (पैमाने) आदि का भी पूजन किया जाता है। बही-खाते तथा लेखनी को सरस्वती एवं दावाद को कालीजी का प्रतीक माना जाता है। तिजूरी, तराजू, मानदण्ड आदि की पूजा कुबेर के प्रतीक रूप में की जाती है।

इन वस्तुओं का पूजन करते समय इन पर रोली, चन्दन, चावल, पुष्प आदि छिड़क देने चाहिए। कलम, तराजू, मानदण्ड आदि में कलावा बाँध देना चाहिए और उन पर सिन्दूर अथवा रोली से स्वस्तिक-चिह्न बना देना चाहिए। दावात में बताशे का एक टुकड़ा तोड़कर डाल देना चाहिए। बही खातों के भीतर पहले पृष्ठ पर रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक काढ़ने तथा सादा एवं साबुत पान रखने की भी प्रथा है। इनके पूजन के अवसर पर जिन विशेष मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है, वे निम्नलिखित हैं—

बही खाता, पूजन का मन्त्र :

याकुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणा वरदण्डमण्डित करा या श्वेत पद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ।।

लेखनी पूजन मन्त्र :

लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना ।
लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम् ।।
लेखन्यै ते नमस्ते ऽस्तु लाभकर्त्र्यै नमोनमः ।।

पुस्तके चर्चिता देवी सर्वं विद्यान्नदाभव ।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धि कुरु सर्वदा ।।
कृष्णानने कृष्णजिह्वे चित्रगुप्तकर स्थिते ।
पुष्पांजलि गृहाणत्वं सदैव वरदाभव ।।

श्री कुबेर प्रार्थना मन्त्र :

देवप्रियश्च नाथस्य कोषाध्यक्ष महामते ।
ध्यायेऽहं प्रभुं श्रेष्ठं कुबेरं धनदायकम् ।।
क्षमस्व मम दौरात्म्यं कृपासिन्धो सुरःप्रियः ।
धनदोऽसि धनंदेहि अपराधांश्च नाशय ।।
महाराज कुबेर त्वं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।
दीनोपि च दया यस्य जायतुं वै महाधनः ।।

तुला (तराजू) पूजन मन्त्र :

त्वं तुले सर्वदेवानां प्रमाणामिह कीर्तिता ।
अतस्त्वांपूजयिष्यामि धमार्थं सुख हेतवे ।।
पदार्थ मानसिद्ध्यर्थे ब्रह्मणा कल्पिता पुरा ।
तुलानामेति कथितां संख्या रूपामुपास्महे ।।

तिजोरी पूजन का मन्त्र :

धनदाय नमस्तुभ्यं निधि पद्मधिपाय च ।
भवन्तु त्वत्प्रदानं मे धन धान्यादि सम्पदा ।।
कुबेराय नमस्तुभ्यं नानाभाण्डार संस्थिता ।
यत्र लक्ष्मीभवेद्देवि धनंचिह्न नमोऽस्तुते ।।

मानदण्ड (गज पैमाना आदि) पूजन का मन्त्र :

ब्रह्मदण्डं त्वमेवासि ब्रह्मणानिर्मितं च तत् ।
तस्मात्स्व तत्पदे तुभ्यं मानदण्ड नमोऽस्तुते ।।

अन्य वस्तुओं के पूजन का मन्त्र :

त्वमेव सर्वभूतानां साक्षि भूतं च वस्त्वसि ।
तस्मात् तुभ्यं नमः सद्यो ब्रह्माविष्णु शिवात्मकम् ।।

श्रीलक्ष्मी चालीसा

दोहा—

मातुलक्ष्मी करि कृपा, करहु हृदय महँ वास ।।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु जनकी आस ।।

सौरठा—

यही मोर अरदास, हाथ जोरि बिनती करूँ ।।
सब बिधि करहु सुपास, जगत जननि जगदम्बिका ।।

चौपाई—

सिन्धुसुता मैं सुमिरौं तोही । ज्ञान बुद्धि विद्या देहु मोही ।।
तुम समान नहि कोउ उपकारी । सब बिधि पुरबहु आस हमारी ।।
जय जय जगत जननि जगदम्बा । सबकी तुमही हो अवलम्बा ।।
तुमही हो घट घट की बासी । बिनती यही हमारी खासी ।।
जगजननी जय सिन्धु कुमारी । दीनन की तुम हो हितकारी ।।
बिनवौ नित्य तुमहि महरानी । कृपा करहु जग जननि भवानी ।।
केहि विधि अस्तुति करौं तिहारी । सुधि लीजै अपराध बिसारी ।।
कृपादृष्टि चितवहु मम ओरी । जगत जननि बिनती सुनु मोरी ।।
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता । संकट हरहु हमारे माता ।।
क्षीर सिन्धु जब विष्णु मथायो । चौदहरत्न सिन्धु उपजायो ।।
तिन रत्नन महँ तुम सुखरासी । सेवा कीन्ह बनीं प्रभुदासी ।।
जब जब जन्म जहाँ प्रभु लीन्हा । रूप वदल तहँ सेवा कीन्हा ।।
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा । लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ।।
जब तुम प्रकटि जनकपुर माँहीं । सेवा कीन्ह हृदय पुलकाहीं ।।
अपनावा तोहि अन्तरयामी । विश्वविदित त्रिभुवन करस्वामी ।।
तुम सम प्रबल शक्ति नहि आनी । कहँ लगि महिमा कहहुँ बखानी ।।
मन क्रम बचन करै सेवकाई । मनवांछित फल सहजै पाई ।।

तजि छल कपट और चतुराइ । पूजहि विविध भाँति मन लाई ।।
और हाल मैं कहहुँ बुझाई । जो यह पाठ करै मन लाई ।।
ताकहँ कोऊ कष्ट न होई । मनवांछित फल पावै सोइ ।।
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि । त्रिविध ताप भव बन्धन हारिणि ।।
जो चालीसा पढ़ें पढ़ावै । ध्यान लगावै सुनै सुनावै ।।
ताकहँ कोउ न रोग सतावै । पुत्र आदि धन सम्पति पावै ।।
पुत्रहीन धन सम्पतिहीना । अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना ।।
विप्र बुलाइ कैं पाठ करावै । शंका मन महँ तनिक न लावै ।।
पाठ करावै दिन चालीसा । तापर कृपा करहिं जगदीशा ।।
सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै । कमी नाँहि काहू की आवै ।।
बारहमास करै जो पूजा । ता सम धनो और नहि दूजा ।।
प्रतिदिन पाठ करहि मन माँही । तासम जगत मनहुँ कोउ नाहीं ।।
बहुविधि का मैं करहुँ बड़ाई । लेहु परीक्षा ध्यान लगाई ।।
करि विश्वास करै ब्रत नेमा । होइ सिद्ध उपजै अति प्रेमा ।।
जय जय जय लक्ष्मी महारानी । सब महँ व्यापक तुम गुणखानी ।।
तुम्हरो तेज प्रवल जग माँहीं । तुम सम कोउ दयालु कहुँ नाहीं ।।
मो अनाथ की सुधि अब लीजै । संकट काटि भक्ति बर दीजै ।।
भूलचूक करु छिमा हमारी । दरसन दीजै दसा निहारी ।।
बिनु दरसन व्याकुल अति भारी । तुमहि अक्षत पावत दुख भारी ।।
नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है तन में । सब जानत तुम अपने मन में ।।
रूप चतुर्भुज करि निज धारण । कष्ट मोर अब करहु निवारण ।।
केहि प्रकार मैं करहुँ बड़ाई । ज्ञान बुद्धि मोहि नहि अधिकाई ।।
उठि कैं प्रातः करै असनाना । जो कछु बनै करै सो दाना ।।
अष्टमि को व्रत करै जु प्राणी । हरषि हृदय पूजहि महारानी ।।
सोलह दिन पूजा विधि करही । आश्विन कृष्ण जो अष्टमि परही ।।
ताकर सब छूटै दुख दावा । सो जन सुख सम्पत्ति नित पावा ।।

दोहा :

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरहु बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करहु शत्रु को नास ॥१॥

श्रीलक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हर विष्णू धाता ॥
उमा रमा, ब्रह्माणी, तुमहीं जगमाता ॥
सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥
दुर्गारूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता ॥
जो कोइ तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि पाता ॥
तुम पाताल निवासिनि, तुम हो शुभ दाता ॥
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भवनिधि को त्राता ॥
जिस घर में तुम रहतीं, तहँ सद्गुण आता ॥
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता ॥
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता ॥
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहि पाता ॥
लक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता ॥
उर आनन्द समाता, पार उतर जाता ॥

१२ श्री कमला स्तोत्र, कवच आदि

श्री कमला स्तोत्रम्

ओंङ्काररूपिणी देवि विशुद्धसत्त्वरूपिणी ।
देवानां जननी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरी ।।
तन्मात्रञ्चैव भूतानि तव वक्षःस्थलं स्मृतम् ।
त्वमेव वेदगम्या तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसकिन्नरैः ।
स्तूयसे त्वं सदा लक्ष्मि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
लोकातीता द्वैतातीता समस्तभूतवेष्टिता ।
विद्वज्जनकीर्त्तिता च प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
परिपूर्णा सदा लक्ष्मि त्रात्री तु शरणार्थिषु ।
विश्वाद्या विश्वकर्त्री च प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
ब्रह्मरूपा च सावित्री त्वद्दीप्त्या भासते जगत् ।
विश्वरूपा वरेण्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
क्षित्यप्तेजो मरुद्व्योमपञ्चभूतस्वरूपिणी ।
बन्धादेः कारणं त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
महेशे त्वं हेमवती कमला केशवेऽपि च ।
ब्रह्मणः प्रेयसी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
चण्डी दुर्गा कालिका च कौशिकी सिद्धिरूपिणी ।
योगिनी योगगम्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।

बाल्ये च बालिका त्वं हि यौवने युवतीति च ।
स्थविरे वृद्धरूपा च प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
गुणमयी गुणातींता आद्या विद्या सनातनी ।
महत्तत्त्वादिसंयुक्ता प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
तपस्विनी तपःसिद्धिः स्वर्गसिद्धिस्तदर्थिषु ।
चिन्मयी प्रकृतिस्त्वं तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
त्वमादिर्जगतां देवि त्वमेव स्थितिकारणम् ।
त्वमन्ते निधनस्थानं स्वेच्छाचारा त्वमेव हि ।।
चराचराणां भूतानां वहिरन्तस्त्वमेव हि ।
व्याप्यव्यापकरूपेण त्वं भासि भक्तवत्सले ।।
त्वन्मायया हृतज्ञाना नष्टात्मानो विचेतसः ।
गतागतं प्रपद्यन्ते पापपुण्यवशात्सदा ।।
तावन्सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा ।
यावन्न ज्ञायते ज्ञानं चेतसा नान्वगामिनी ।।
त्वज्ज्ञानात्तु सदा युक्तः पुत्रदारगृहादिषु ।
रमन्ते विषयान्सर्व्वानन्ते दुःखप्रदान् ध्रुवम् ।।
त्वदाज्ञया तु देवेशि गगने सूर्यमण्डलम् ।
चन्द्रश्च भ्रमते नित्यं प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
ब्रह्मेशविष्णुजननी ब्रह्माख्या ब्रह्मसंश्रया ।
व्यक्ताव्यक्ता च देवेशि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
लचला सर्वगा त्वं हि मायातीता महेश्वरि ।
शिवात्मा शाश्वता नित्या प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
सर्वकायनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी ।
अनन्ता निष्कला त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
सर्वेश्वरी सर्ववन्द्या अचिन्त्या परमात्मिका ।
भुक्तमुक्तिप्रदा त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।

ब्रह्माणी ब्रह्मलोके त्वं वैकुण्ठे सर्वमङ्गला ।
इन्द्राणी अमरावत्यामम्बिका वरुणालये ।।
यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा ।
महानन्दाग्निकोणे च प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
नैर्ऋत्यां रक्तदन्ता त्वं वायव्यां मृगवाहिनी ।
पाताले वैष्णवीरूपा प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
सुरसा त्वं मणिद्वीपे ऐशान्यां शूलधारिणी ।
भद्रकाली च लङ्कायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
रामेश्वरी सेतुबन्धे सिंहले देवमोहिनी ।
विमला त्वं च श्रीक्षेत्रे प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
कालिका त्वं कालिघट्टे कामाख्या नीलपर्वते ।
विरजा ओड्रदेशे त्वं प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
वाराणस्यामन्नपूर्णा अयोध्यायां महेश्वरी ।
गयासुरी गयाधाम्नि प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
भद्रकाली कुरुक्षेत्रे त्वञ्च कात्यायनी व्रजे ।
महामाया द्वारकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
क्षुधा त्वं सर्वजीवानां वेला च सागरस्य हि ।
महेश्वरी मथुरायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
रामस्य जानकी त्वञ्च शिवस्य मनमोहिनी ।
दक्षस्य दुहिता चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
विष्णुभक्तिप्रदा त्वं च कंसासुरविनाशिनी ।
रावणनाशिनी चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ।।
लक्ष्मीस्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
सर्वज्वरभयं नश्येत्सर्वव्याधिनिवारणम् ।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यमापदुद्धारकारणम् ।
त्रिसंध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्सततः नरः ।।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो तथा तु सर्वसङ्कटात् ।
मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ॥
समस्तं च तथा चैकं यः पठेद्भक्तितत्परः ।
स सर्वदुष्करं तीर्त्वा लभते परमां गतिम् ॥
सुखदं मोक्षदं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
स तु कोटितीर्थफलं प्राप्नोति नात्र संशयः ॥
एका देवी तु कमला यस्मिस्तुष्टा भवेत्सदा ।
तस्याऽसाध्यं तु देवेशि नास्ति किंचिज्जरत्रये ॥
पठनादपि स्तोत्रस्य किं न सिद्ध्यति भूतले ।
तस्मात्स्तोत्रवरं प्रोक्तं सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥

॥ इति श्री कमला स्तोत्रम् ।

श्री महालक्ष्म्यष्टक स्तवः

इन्द्र उवाच :

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।

।। इति इन्द्र कृतः महालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णः ।।

श्री लक्ष्मीस्तोत्रम्

क्षमस्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे ।
शुद्धसत्त्वस्वरूपे च कोपादिपरिवर्जिते ।।
उपमे सर्वसाध्वीनां देवीना देवपूजिते ।
त्वया विना जगत्सर्वं मृततुल्यं च निष्फलं ।।
सर्वसम्पत्स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी ।
रासेश्वर्यधिदेवी त्वं त्वत्कलाः सर्वयोषितः ।।
कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धुकन्यका ।
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं मर्त्यलक्ष्मीश्च भूतले ।।
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्देवदेवी सरस्वती ।
गङ्गा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मलोकतः ।।

कृष्णप्राणाधिदेवी त्वं गोलोके राधिका स्वयं ।
रासे रासेश्वरी त्वं च वृन्दावनवने बने ।।
कृष्णप्रिया त्वं भाण्डीरे चन्द्रा चन्दनकानने ।
विरजा चम्पकवने शतशृङ्गे च सुन्दरी ।।
पद्मावती पद्मवने मालती मालतीवने ।
कुन्ददन्ती कुन्दवने सुशीला केतकीवने ।।
कदम्बमाला त्वं देवी कदम्बकाननेऽपि च ।
राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मीर्गृहे गृहे ।।
इत्युक्त्वा देवताः सर्वे मुनयो मनवस्तथा ।
रुरुदुर्नम्रवदनाः शुष्ककण्ठोष्ठतालुकाः ।।
इति लक्ष्मीस्तवं पुण्यं सर्वदेवैः कृतं शुभं ।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय स वै सर्वं लभेद्ध्रुवं ।।
अभार्यो लभते भार्यां विनीतां च सुतां सतीं ।
सुशीलां सुन्दरीं रम्यामतिसुप्रियवादिनीं ।।
पुत्रपौत्रवतीं शुद्धां कुलजां कोमलां वरां ।
अपुत्रो लभते पुत्रं वैष्णवं चिरजीवनम् ।।
परमैश्वर्ययुक्तं च विद्यावन्तं यशस्विनम् ।
भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भ्रष्टश्रीर्लभते श्रियं ।।
हतबन्धुर्लभेद्बन्धुं धनभ्रष्टो धनं लभेत् ।
कीर्तिहीनो लभेत्कीर्ति प्रतिष्ठां च लभेद्ध्रुवं ।।
सर्वमङ्गलदं स्तोत्रं शोकसन्तापनाशनम् ।
हर्षानन्दकरं शश्वद्धर्ममोक्षसुहृत्प्रदम् ।।

।। इति लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्री सिद्धलक्ष्मी स्तोत्रम्

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीसिद्धिलक्ष्मीस्तोत्र मन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवता:, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्ति:, क्लीं कोलकं, मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदु:खदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रपाठे विनियोग: ।

ऋष्यादि-न्यास :

ॐ हिरण्यगर्भऋषये नम: शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नम: मुखे । श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्योनमो हृदि । श्रीं बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नम: पादयौ: । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ । विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।

कर-न्यास :

श्री सिद्धलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नम: । ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नम: । क्लीं अमृतानन्दायै मध्यमाभ्यां नम: । श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नम: । ह्रीं तेज:प्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नम: । क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकर पृष्ठाभ्यां नम: ।

षडङ्ग-न्यास :

ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै हृदयाय नम: । ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं अमृतानन्दायै शिखायै वषट् । ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै कवचाय हुं । ॐ ह्रीं तेज:प्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट् ।

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नम:'—मन्त्र से तालत्रय कर दिग्बन्धन करें । फिर ध्यान करें ।

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् ।
त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदाधराम् ॥१॥

पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम् ।
तेजपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम् ॥२॥

स्तोत्र :

ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदयमव्ययम् ।
विष्णुमानन्दमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम् ॥१॥
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां सदात्यानन्ददायिनीम् ।
श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्द्दिनीम् ॥२॥
तेज:प्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम् ।
ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं कालिकारूपशोभिनीम् ॥३॥
अकारे लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययं ।
मकार: पुरुषोऽव्यक्तो देवीप्रणव उच्यते ॥४॥
सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभं ।
तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम् ॥५॥
ॐकारं परमानन्दं सदैव सुखसुन्दरीं ।
सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा ॥७॥
तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा ।
पञ्चमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा ॥८॥
वाराही सप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा ।
नवमी खड्गिनी प्रोक्ता दशमं चैव देविका ॥९॥
एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंसवाहिनी ।
एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठन्ति सदा नरा: ॥१०॥
सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते नात्र कार्या विचारणा ।
एकमासं द्विमासं च त्रिमासं माश्चतुष्टयं ॥११॥

पञ्चमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत् ।
ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामयपीडितः ॥१२॥
जन्मान्तरसहस्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ।
दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥१३॥
धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च ।
शाकिनीभूतवेतालसर्पव्याघ्रनिपातने ॥१४॥
राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबन्धने ।
ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकं ॥१५॥
स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते ।
सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥१६॥

॥ इति श्री ब्रह्मपुराणे श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रं ॥

श्री लक्ष्मी सूक्तं

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरां शुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमंधनस्य सोमनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां सूक्तजापिनाम् ॥
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।।

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च मय श्रीर्देवी देवता ।।
ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ।।

श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते । धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ।।

।। इति श्री लक्ष्मी सूक्तम् ।।

श्री सूक्तं

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।।
ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीं ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहं ।।
अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीं ।
श्रियन्देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ।।

कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।

उपैतु मां देवसख: कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ।।
क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।
मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री: श्रयतां यश: ।।
कर्द्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रमकर्द्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।
आप: सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीतं वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।।
आर्द्रां य: करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।

ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।।

य: शुचि: प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रिय: पञ्चदशर्चं च श्रीकाम: सततं जपेत् ।।

।। इति श्री सूक्तं ।।

श्री कमला अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्राम्

श्री शिव उवाच :

शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने ।
प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत् ॥१॥
महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी ।
महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्दिनी ॥२॥
कालरात्रिः कुहूः पूर्णानन्दाऽद्या भद्रिका निशा ।
जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी ॥३॥
शचीन्द्राणी शक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा ।
महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही ॥४॥
वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षःस्थलस्थिता ।
विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा ॥५॥
शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शङ्खधारिणी ।
गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया ॥६॥
पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णुप्रियङ्करी ।
गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता ॥७॥
गया गङ्गा च यमुना गोमती गरुडासना ।
गण्डकी सरयूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी ॥८॥
नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी ।
किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता ॥९॥
ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता ।
कोटिब्रह्मांडमध्यस्था कोटिब्रह्मांडकारिणी ॥१०॥
श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा ।
इन्दिरा सिन्धुनतया मातङ्गी लोकमातृका ॥११॥
त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ।
तरुणी च तमोहन्त्री मङ्गला मङ्गलायना ॥१२॥

मधुकैटभमथनी शुम्भासुरविनाशिनी ।
निशुम्भादिहरा माता हरिशङ्करपूजिता ।।१३।।
सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी ।
शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी ।।१४।।
गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा ।
त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपतारुण्यपूरिता ।।१५।।
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चंद्रिका चंद्रपूजिता ।
चन्द्रा शशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा ।।१६।।
सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी ।
इति ते कथितं देवि रमानाम-शताष्टकम् ।।१७।।
त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः ।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोत्यसंशयः ।।१८।।
इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो,
वैकुण्ठपत्न्याः परमादरेण ।
धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात्
प्रयास्यति श्रीपदमन्तकाले ।।१९।।

।। इति कमलाया अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ।।

श्री कमला कवचम्

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदाशिवः ।।१।।
नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः ।
स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रविशारदः ।।२।।
विद्यार्थिनां सदा सेव्या धनदात्रीविशेषतः ।
धनार्थिभिः सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा ।।३।।

विनियोग :

अस्याश्चतुरक्षरी विष्णुवल्लभाया: कवचस्य श्री भगवान शिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो वाग्भवी शक्तिर्देवता वाग्भवं बीजं लज्जा रमा कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्य-कवित्व-सर्वसिद्धिसमृद्धये पाठे विनियोगः ।

ऐङ्कारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा ।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शाङ्करी ।।४।।
जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि ।
ओष्ठाधरे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः ।।५।।
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी ।।६।।
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती ।
हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः ।।७।।
पृष्टदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ।
उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः ।।८।।
जानुचक्रे पदद्वद्वे घुटिकेंगुलिमूलके ।
स्वधातुप्राणशक्त्यात्मसीमन्ते मस्तके पुनः ।।९।।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती ।।१०।।
तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदावऽतु ।
ऋद्धिः पातु महादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा ।।११।।
वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी ।
रमा पातु महा देवी पातु माया स्वराट् स्वयं ।।१२।।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी ।
शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ।।१३।।
शैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदावऽतु ।
त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदावऽतु ।।१४।।

पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदावऽतु ।
नवदुर्गा सदा पान्तु कामाक्षी सर्वदावऽतु ।।१५।।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम ।
मात्रा पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः ।।१६।।
सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा ।
पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ।।१७।।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये ।
यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम् ।।१८।।
शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरी ।
न्यूनांगे चातिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन ।।१९।।
न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत् ।
कुलीनाय महेच्छाय दुर्गाभक्तिपराय च ।।२०।।
वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम् ।
निजशिष्याय शांताय धनिने ज्ञानिने तथा ।।२१।।
दद्यात् कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम् ।
शनौ मङ्गलवारे च रक्तचन्दनकैस्तथा ।।२२।।
यावकेन लिखेन्मन्त्रं सर्वतन्त्रसमन्वितम् ।
विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः ।।२३।।
स्वशुक्रैः परशुक्रैर्वा नानागन्धसमन्वितैः ।
गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ।।२४।।
सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने ।
आश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च ।।२५।।
पूर्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मङ्गलवासरे ।
विलखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये ।।२६।।
आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः ।
इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्रयोगे तथैव च ।।२७।।

कौलके बालके चैव वणिजे चैव सत्तमः ।
शून्यागारे श्मशाने च विजने च विशेषतः ॥२८॥
कुमारीं पूजयित्वादौ यजेद्देवीं सनातनीम् ।
मत्स्यैर्मांसैः शाकसूपैः पूजयेत्परदेवताम् ॥२९॥
घृताद्यैः सोपकरणैः पुष्पधूपैर्विशेषतः ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पूजयेत्परमेश्वरीं ॥३०॥
अखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम् ।
तदाधरेन्महाविद्यां शङ्करेण प्रभाषिताम् ॥३१॥
मारणद्वैषणादीनि लभते नात्र संशयः ।
स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः ॥३२॥
गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया ।
अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥३३॥
पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा
जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम् ।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र-
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय ॥३४॥

॥ इति विश्वसारतन्त्रे कमलात्मिका कवचम् ॥

श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे ।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ॥१॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया ।
पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीः पद्मधारिणी ॥२॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत् ।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह ॥३॥

॥ इति श्री लक्ष्मीस्तोत्रम् ॥

श्री महालक्ष्मी पञ्जर-स्तोत्रम्

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी पञ्जर महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः, श्रियै इति कीलकं, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे लक्ष्मी पञ्जर स्तोत्रजपे विनियोगः ।।

करन्यास :

ॐ श्रीं ह्लीं विष्णुवल्लभायै अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ श्रीं ह्लीं जगज्जनन्यै तर्जनीभ्यां नमः । ॐ श्रीं ह्लीं सिद्धिसेवितायै मध्यमाभ्यां नमः । ॐ श्रीं ह्लीं सिद्धिदात्र्यै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ श्रीं ह्लीं वाञ्छितपूरिकायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ श्रीं ह्लीं श्रीं श्रियै नमः स्वाहेति करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास :

ॐ श्रीं ह्लीं विष्णुवल्लभायै हृदयाय नमः । ॐ श्रीं ह्लीं जगज्जनन्यै शिरसे स्वाहा । ॐ श्रीं ह्लीं सिद्धिसेवितायै शिखायै वषट् । ॐ श्रीं ह्लीं सिद्धिदात्र्यै कवचाय हुम् । ॐ श्रीं ह्लीं वाञ्छितपूरिकायै नेत्राभ्यां वौषट् । श्रीं ह्लीं श्रीं श्रियै नमः स्वाहेत्यस्त्राय फट् ।

ध्यान :

ॐ वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजांबूनदाभां ।
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलांगीम् ।।
बीजापूरं कनककलशः हेमपद्मं दधानामाद्यां ।
शक्तिं भुक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ।।१।।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि महालक्ष्मि हरिप्रिये ।
प्रसादं कुरु देवेशि मयि दुष्टेऽपराधिनि ।।२।।
कोटिकन्दर्पलावण्यां सौन्दर्य्यैकस्वरूपताम् ।
सर्वमङ्गल-माङ्गल्यां श्रीरामां शरणं व्रजे ।।३।।

मूलमन्त्र-षट्क्रम :

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णुवल्लभायै महामायायै कं खं गं घं ङं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष धनं धान्यं श्रियं समृद्धि देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।।१।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै वात्सल्यनिधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष श्रियं प्रतिष्ठां वाक्सिद्धि मे देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।।२।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-सेवितायै सकलाभीष्ट-दान-दीक्षितायै टं ठं डं ढं णं नमस्ते नमस्ते मा पाहि पाहि रक्ष रक्ष सर्वतोऽभयं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।।३।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धिदात्र्यै महा अचिन्त्यशक्तिकायै तं थं दं धं नं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष मे सर्वाभीष्टसिद्धि देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।।४।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो वाञ्छितपूरिकायै सर्वसिद्धि-मूलभूतायै पं फं बं भं मं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष मे मनोवाञ्छितां सर्वार्थभूतां सिद्धि देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।।५।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कमले कमलालये मह्यम् प्रसीद प्रसीद महालक्ष्मि तुभ्यं नमो नमस्ते जगद्धितायै यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमस्ते नमस्ते मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष मे वश्याकर्षण मोहनस्तंभनोच्चाटनताडना-चिन्त्यशक्तिवैभवं देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।।६।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं बीजरूपायै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं विष्णुवल्लभायै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सिद्ध्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं बुद्ध्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धृत्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं मत्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कान्त्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐ क्लीं शान्त्यै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वतोभद्ररूपायै नमः स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ऐ क्लीं श्रीं श्रियै नमः स्वाहा । ॐ नमो भगवति ब्रह्मादि-वेदमातर्वेदोद्भवे वेदगर्भे सर्वशक्तिशिरोमणे श्रीं हरि-

वल्लभे ममाभीष्टं पूरय पूरय मां सिद्धिभाजनं कुरु कुरु अमृतं कुरु कुरु अभयं कुरु कुरु सर्वं कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल मे सुतशक्ति दीपय दीपय ममाहितान् नाशय नाशय असाध्य कार्यं साधय साधय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ग्लौं ग्लौं ग्लौं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

(इति लक्ष्मीमाला मन्त्रः १०८ जपं कुर्यात् ।।)

लक्ष्मी कवचम् :

ॐ शिरो मे रक्षताद् देवी पद्मा पङ्कजधारिणी ।
भालं पातु जगन्माता लक्ष्मीः पद्मालया च मे ।।१।।
मुखं पायान्महामाया दृशौ मे भृगुकन्यका ।
घ्राणं सिन्धु सुता पायान्नेत्रे मे त्रिष्णुबल्लभा ।।२।।
कण्ठं रक्षतु कौमारी स्कन्धौ पातु हरिप्रिया ।
हृदयं मे सदा रक्षेत्सर्वशक्तिविधायिनी ।।३।।
नाभिं सर्वेश्वरी पायात्सर्वभूतालया च मे ।
कटिश्च कमला पातु ऊरू ब्रह्मादि देवता ।।४।।
जंघे जगन्मयी रक्षेत्पादौ सर्वं सुखावहा ।
श्री बीज वास निरता सर्वाङ्गे जनकात्मजा ।।५।।
सर्वतोभद्ररूपा मामव्याद् दिक्षु विदिक्षु च ।
विषमे सङ्कटे दुर्गे पातु मां व्योमवासिनी ।।
इतीदं पञ्जरं लक्ष्म्या गुह्याद् गुह्यतरं महत् ।।६।।
गोपनीयं प्रयत्नेन न दद्याद्यस्य कस्य च ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं फलाहारी जितेन्द्रियः ।।७।।
ध्यायेल्लक्ष्मीपदं प्रीत्या, तस्य किञ्चिन्न दुर्लभं ।
विष्णोर्नाम्ना सहस्रेण सम्पुटीकृत्य यः पठेत् ।।८।।
पञ्चायुत प्रयत्नेन स सिद्धस्स्याद्यथा हरिः ।
विल्वपीठे लिखेद्यन्त्रं षट्कोणं मन्त्रसंयुतम् ।।९।।

तत्र सम्पूजयन्देवीं तदग्रे पाठमाचरेत् ।
हरिद्रा-मालया संख्यां कुर्वन्नित्यमतन्द्रितः ।।१०।।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति यद्यद्वाञ्छति सत्वरम् ।।११।।

।। इति श्री अथर्वणरहस्ये श्रीलक्ष्मीपञ्जरस्तोत्रं समाप्तं ।।

श्री प्रसन्नवरदा श्रीलक्ष्मीस्तोत्रम्

जय पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपतिप्रिये ।
जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणि ।।१।।
महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं शुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।२।।
पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे ।
सर्वभूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरु ।।३।।
जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।
दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोस्तु ते ।।४।।
नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्यधारिणि ।
वसुदृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम् ।।५।।
रक्ष त्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे ।
दरिद्रात्त्राहि मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि ।।६।।
नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि ।
ब्रह्मादयो नमन्ते त्वां जगदानन्ददायिनि ।।७।।
विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते ।
आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धिं कुरु मे सदा ।।८।।
अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः ।
चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः ।।९।।

नमः प्रद्युम्नजननिमातस्तुभ्यं नमो नमः ।
परिपालय भो मातर्मांतुभ्यं शरणागतम् ।।१०।।
शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये ।
त्राहि-त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे ।।११।।
पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ति गुणा नरे ।
शीलत्वं नैव शोभेत महालक्ष्मि त्वया विना ।।१२।।
तावद्विराजते रूपं तावच्छील विराजते ।
तावद्गुणा नराणाञ्च यावल्लक्ष्मी प्रसीदति ।।१३।।

लक्ष्मि त्वयालंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्याः ।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः ।।१४।।

लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम् ।
लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वाल्लक्ष्मीर्विशिष्यते ।।१५।।

लक्ष्मि त्वद्गुणकीर्तनेन कमला भूयात्यलं जिह्मतां, रुद्राद्या रविचन्द्र देवपतयो वक्तुञ्च नैव क्षमाः । अस्माभिस्तव रूपलक्षणगुणा वक्तुं कथं शक्यते, मातर्मां परिपाहि विश्वजननि कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम् ।।१६।।

दीनार्तिभीतं भवतापपीड़ितं धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम् ।
कृपानिधित्वान्मम लक्ष्मि सत्वरं धनप्रदानाद्धननायकं कुरु ।।१७।।

मां विलोक्य जननि हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमागतम् ।
देहि मे झटिति लक्ष्मि कराग्रं वस्त्रकाञ्चनवरान्नमद्भुतम् ।।१८।।

त्वमेव जननी लक्ष्मि पिता लक्ष्मि त्वमेव च ।
भ्राता त्वं च सखा लक्ष्मि विद्या लक्ष्मि त्वमेव च ।।१९।।
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि त्राहि त्राहि सुरेश्वरि ।
त्राहि त्राहि जगन्मातर्दरिद्रात्त्राहि वेगतः ।।२०।।
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं नमो नमः ।
धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पत्तिदायिनी ।।२१।।

दरिद्रार्णवमग्नोऽहं निमग्नोऽहं रसातले ।
मज्जन्तं मां करे धृत्वा सूद्धर त्वं रमे द्रुतम् ।।२२।।
किं लक्ष्मि बहुनोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः ।
अन्यन्मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये ।।२३।।
एतच्छ्रुत्वाऽगस्तिवाक्यं हृष्यमाणा हरिप्रिया ।
उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाहं तव सर्वदा ।।२४।।
यत्त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः ।
शृणोति च महाभागस्तस्याहं वशवर्तिनी ।।२५।।
नित्यं पठति यो भक्त्या त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति ।
ऋणश्च नश्यते तीव्रं वियोगं नैव पश्यति ।।२६।।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
गृहे तस्य सदा स्थास्ये नित्यं श्रीपतिना सह ।।२७।।
सुखसौभाग्यसम्पन्नो मनस्वी बुद्धिमान् भवेत् ।
पुत्रवान् गुणवान्श्रेष्ठो भोग भोक्ता च मानवः ।।२८।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्म्यगस्तिप्रकीर्तितम् ।
विष्णुप्रसादजननं चतुर्वर्गफलप्रदम् ।।२९।।
राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः ।
भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा ।।३०।।
न शस्त्रानलतोयौघाद्भयं तस्य प्रजायते ।
दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परम् ।।३१।।
मन्दुराकरिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः ।
पठेत्तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम् ।।३२।।
सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा ।
अगस्तिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया ।।३३।।

।। इत्यगस्तिविरचितं लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ।।

सद्यःफलदा लक्ष्मीस्तवहृदयम्

श्रीमत्सौभाग्य जननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ।
सर्वकामफलवाप्ति साधनैकसुखावहाम् ॥१॥
श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः ।
नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्यावलोकय ॥२॥
सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं समागच्छ सन्निधिम् ।
वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥३॥
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते ।
विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥४॥
क्षीराब्धिसंस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे ।
त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ॥५॥
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्ण हिरण्मयि ।
समागच्छ समागच्छ स्थित्वा सुपुरतो मम ॥६॥
स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले ।
प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्ना वरदा भव ॥७॥
श्रीधरे श्रीमहाभूमे त्वदन्तस्थ महानिधिम् ।
शीघ्रमुद्धृत्य पुरतः प्रदर्शय समर्पय ॥८॥
वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धे कृपामयि ।
त्वत्कुक्षिगत सर्वस्वं शीघ्रं मे तु प्रदर्शय ॥९॥
विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिव ।
त्वद्गर्भगत हेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ॥१०॥
अत्रोपविश्य लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्यमयि ।
सुस्थिरा भव सप्रीत्या प्रसन्नवरदा भव ॥११॥
सादरे मस्तके हस्तं मम तव कृपयार्पय ।
सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥१२॥

यथा वैकुण्ठनगरे यथैव क्षीरसागरे ।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ।।१३।।
आद्यालक्ष्मि महालक्ष्मि विष्णुवामाङ्कसंस्थिते ।
प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ।।१४।।
समागच्छ महालक्ष्मि धनधान्यसमन्विते ।
प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ।।१५।।
दया सुदृष्टिं कुरुतां मयि श्रीः ।
सुवर्णवृष्टिं कुरु मे गृहे श्रीः ।।१६।।
महालक्ष्मीः समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा शतवारं धनी भवेत् ।।

।। इति श्री सद्यःफलदा लक्ष्मी स्तव हृदयं ।।

श्री कमला स्तोत्रम्

श्रीपुरन्दर उवाच :

नमः कमलावासिन्यै नारायण्यै नमो नमः ।
कृष्णप्रियायै सततं महालक्ष्म्यै नमो नमः ।।१।।
पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः ।
पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः ।।२।।
सर्वसम्पत्स्वरूपिण्यै सर्वाराध्यै नमो नमः ।
हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमो नमः ।।३।।
कृष्णवक्षःस्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः ।
चन्द्रशोभायस्वरूपायै रत्नपद्मे च शोभने ।।४।।
सम्पत्त्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः ।
नमो वृद्धिस्वरूपायै वृद्धिदायै नमो नमः ।।५।।

वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्यालक्ष्मी: क्षीरसागरे ।
स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये ॥६॥

गृहलक्ष्मीश्च गृहिणी गेहे च गृहदेवता ।
सुरभि: सागरे जाता दक्षिणा यज्ञकामिनी ॥७॥

अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालया ।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्यदाने स्वधा स्मृता ॥८॥

त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा ।
शुद्धसत्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायणा ॥९॥

क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा शारदा शुभा ।
परमार्थप्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा ॥१०॥

यया विना जगत्सर्वं भस्मीभूतमसारकम् ।
जीवन्मृतं च विश्वं च शश्वत्सर्वं यया विना ॥११॥

सर्वेषां च परा माता सर्वबांधवरूपिणी ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी ॥१२॥

यथा माता स्तनांधानां शिशूना शैशवे सदा ।
तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपत: ॥१३॥

मातृहीन: स्तनांधस्तु स च जीवति दैवत: ।
त्वया हीनो जन: कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम् ॥१४॥

सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मां प्रसन्ना भवांबिके ।
वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि ॥१५॥

अहं यावत्त्वया हीनो बन्धुहीनश्च भिक्षुक: ।
सर्वसंपद्विहीनश्च तावदेव हरिप्रिये ॥१६॥

ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम् ।
प्रभावं च प्रतापं च सर्वाधिकारमेव च ॥१७॥

जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्यमेव च ।

श्री नारायण उवाच :

इत्युक्त्वां च महेन्द्रश्च सर्वैः सुरगणैः सह ॥१८॥
प्रणमाम साश्रुनेत्रो मूर्ध्ना चैव पुनः पुनः ।
ब्रह्मा च शङ्करश्चैव शेषो धर्मश्च केशवः ॥१९॥
सर्वे चक्रुः परीहारं सुरार्थे च पुनः पुनः ।
देवेभ्यश्च वरं दत्वा पुष्पमालां मनोहराम् ॥२०॥
केशवाय ददौ लक्ष्मीः संतुष्टा सुरसंसदि ।
ययुर्देवाश्च संतुष्टाः स्वं स्वं स्थानं च नारद ॥२१॥
देवी ययौ हरेः स्थानं दृष्टा क्षीरोदशायिनः ।
ययतुश्चैव स्वगृहं ब्रह्मेशानौ च नारदः ॥२२॥
दत्वा शुभाशिषं तौ च देवेभ्यः प्रीतिपूर्वकम् ।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसन्ध्यं य पठेन्नरः ॥२३॥
कुबेरतुल्यः स भवेद्राजराजेश्वरो महान् ।
पञ्चलक्षजपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥२४॥
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं तु सन्ततम् ।
महासुखी च राजेंद्रो भविष्यति न संशयः ॥२५॥

॥ इति श्री कमला स्तोत्रम् ॥

श्री कमलात्मिकोपनिषत्

अथ लोकान् पर्यटन् सनत्कुमारो ह वैदेहः । पुण्यर्चिताल्लोकानतीत्य वैष्णवंधाम दिव्यगणोपेतं । विद्रुमवेदिकामणिमुक्तागणार्चितं प्राप । तत्रापश्यन् महामायां पराद्ध्र्यवस्त्राभरणोत्तरीयां पर्यङ्कस्था पारे चरन्तीमादिदेवं भगवन्तं परमेश्वरं दृष्ट्वा च तां गद्गदवाक्प्रफुल्लरोमा स्तोतुमुपचक्रमे ॥

वाचं मे दिशतु श्रीर्देवी मनो मे दिशतु वैष्णवी । ओजस्तेजो

बलं दाक्ष्यं बुद्धेर्वैभवमस्तु मे ।। त्वत्प्रसादाद् भगवति प्रज्ञानं मे ध्रुवं भवेत् । शन्नो दिशतु श्रीर्देवी महामाया । वैष्णवी शक्तिराद्या यामासाद्य स्वयमादिदेवो भगवान् परावरज्ञस्तिथा सम्भिन्नो लोकांस्त्रीन् सृजत्यवत्यत्ति च । यद् भ्रूविक्षेपबलमापन्नो ह्यब्जयोनिस्तदितरे चामरा मुख्याः सृष्टिचक्रप्रणेतारः सम्बभूवुः या वै वरदा स्वोपायां सुप्रसन्ना सुखयति सहस्रपुरुषान् ये लोकाः सन्ततमानमन्ति शिरसा हृदये न च तामेकां लोकपूज्यां न ते दुर्गतिं यान्ति भूताः ।।

अथ महत्या सम्वृद्ध्या साम्राज्येन पुत्रैः पौत्रैरन्वितो भूमिपृष्ठे शतं समास्त इज्याभिरिष्ट्वा देवान् पितॄन मनुष्यानथ भूरिदक्षिणाभिस्त्वत्प्रसादान्महान्तो गच्छन्ति वैष्णवं लोकमपुनर्भवाय ये राजर्षयो ब्रह्मर्षयस्तेऽपि चासत्-कृत् त्वां प्रागसन्त एव सुखमामनन्ति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय किं पुनरिहादिदेवो भगवान् नारायणस्त्वामाधिदेवाखिलं करोति । किं वर्णये त्वां सहस्रकृत्वो नमस्ते ।।

य इमा ऋचः पठन्ति प्रातरुत्थाय भूरि दान तेषां किञ्चिदिहि यावशिष्टय्यदैश्वर्यं दुर्लभं प्राणिनां हि ।।

।। इति कमलात्मिकोपनिषत् सम्पूर्णा ।।

श्रीमहालक्ष्मी हृदयम्

विनियोग :

आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीहृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, अनुष्टुबादिनानाछन्दांसि, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिध्यर्थं जपे विनियोगः ।

न्यास :

ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुबादिनानाछन्देभ्यो नमः मुखे । आद्यादिमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदये । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।

ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । ऐं कीलकाय नमः नाभौ । ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ।

कर-न्यास :

ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास :

ॐ श्रीं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ऐं शिखायै वषट् । ॐ श्रीं कवचाय हुँ । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ।

'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं' इति दिग्बन्धः ।

ध्यानम् :

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया ।
हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये ॥

सम्पूज्य प्रार्थयेत् :

शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि ।
मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥

'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यं कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा' इति मन्त्रं जपित्वा स्तोत्रं पठेत् । यथा—

वन्दे लक्ष्मीं परिशिवमयीं शुद्धजांबूनदाभां ।
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीं ॥
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधाना-
माद्यांशक्ति सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥१॥
श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीं ।
सर्वकामफलावाप्ति साधनैकसुखावहां ॥२॥

स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसः ।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीं ॥३॥

समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं,
समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्तकल्याणकरीं महाश्रियम्,
भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥४॥

विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं,
विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहराम् ।
अनन्तसामोदसुखप्रदायिनीं,
नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥५॥

समस्तभूतान्तरसंस्थिता त्वं,
समस्तभोक्त्रीश्वरि विश्वरूपे ।
तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु,
त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्री ॥६॥

दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्रि,
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः,
कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीं ॥७॥

अम्बं प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या,
मां त्वत्कृपा-द्रविण गेहमिमं कुरुष्व ।
आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहन्त्रि,
त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥८॥

शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै,
कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै,
धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥९॥

शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै,
रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै ।
भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै,
मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥१०॥
लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै,
सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धपूजितायै ।
धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै,
गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायकायै ॥११॥
देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै,
भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्तिविनाशनायै ।
दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै,
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥१२॥
सुतीव्र - दारिद्र्य - विदुःख - हन्त्र्यै,
नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै ।
श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै,
नमो नमस्सर्वविभूतिदायै ॥१३॥
जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी,
जयतु जयतु पद्मा पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या ।
जयतु जयतु विद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था,
जयतु जयतु सम्यक्सर्वसम्पत्करी श्रीः ॥१४॥
जयतु जयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या,
जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा ।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या,
जयतु जयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था ॥१५॥
जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था,
जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा ।

जयतु जयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी,
जयतु जयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये ।।१६।।
यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या,
रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः ।
जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः,
प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते ।।१७।।
लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं,
विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये ।
तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनी श्रीरमां,
समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्यसंसूचिकाम् ।।१८।।
कलया ते यथा देवि जीवंति सचराचराः ।
तथा सम्पत्करे लक्ष्मि सर्वदा सम्प्रसीद मे ।।१९।।
यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां सन्न्यवेशयत् ।
तथैव स्वकलां लक्ष्मि मयि सम्यक् समर्पय ।।२०।।
सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे ।
अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम् ।।२१।।
मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला ।
सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः ।।
वसेत्सत्ये लोके मम वचसि लक्ष्मीवरकला ।
श्रियश्श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः ।।२२।।
तावन्नित्यं ममांगेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत् ।
सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रिया ।।२३।।
सर्वमङ्गलसम्पूर्णा सर्वैश्वर्यसमन्विता ।
आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ।।२४।।
अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका ।
सर्वैश्वर्यप्रदामेस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता ।।२५।।

अलक्ष्मीं हरतु:क्षिप्रं तम: सूर्यप्रभा यथा ।
वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता ।।२६।।
ऐश्वर्य-मङ्गलोत्पत्तिस्त्वत्कलायां निधीयते ।
मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव ।।२७।।
भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि ।
त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोस्तु ते ।।२८।।
पुनासि मां त्वं कलयैवयस्मादत: समागच्छ ममाग्रतस्त्वम् ।
परम्पदं श्रीर्भवसुप्रसन्ना मय्यच्युतेन प्रविशादिलक्ष्मि ।।२९।।
श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रत: ।
नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्याऽवलोकय ।।३०।।
सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम् ।
वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ।।३१।।
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते ।
विष्णुना सहिते देवि जगन्मात: प्रसीद मे ।।३२।।
क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे ।
त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ।।३३।।
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णहिरण्मये ।
समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम ।।३४।।
स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले ।
प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव ।।३५।।
श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्त:स्थं महानिधिम् ।
शीघ्रमुद्धृत्य परत: प्रदर्शय समर्पय ।।३६।।
वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्ध्रि कृपामयि ।
त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे सम्प्रदर्शय ।।३७।।
विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे ।
त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ।।३८।।

रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मे पुरः ।
न जाने परमं रूपं मातर्मे संप्रदर्शय ।।३६।।
आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः ।
मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम् ।।४०।।
देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते ।
मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात् ।।४१।।
उत्तिष्ठ जागृहि त्वंमे समुत्तिष्ठ सुजागृहि ।
अक्षयान् हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान् ।।४२।।
निक्षेपान् मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः ।
समुन्नतानना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात् ।।४३।।
मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात् ।
प्रसीद श्रेयसान्दोग्ध्रि लक्ष्मि मे नयनाग्रतः ।।४४।।
अत्रोपविश लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मयि ।
सुस्थिरा भव सम्प्रीत्या प्रसीद वरदा भव ।।४५।।
आनीय त्वं तथा देवि निधीन् मे संप्रदर्शय ।
अद्य क्षणेन सहसा दत्वा संरक्ष मां सदा ।।४६।।
मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि ।
अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।४७।।
समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे ।
प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ।।४८।।
लक्ष्मि भुवं गता भासि यत्र यत्र हिरण्मयी ।
तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय ।।४९।।
क्रीडते बहुधा भूमौ परिपूर्णहिरण्मये ।
मम मूर्द्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय ।।५०।।
फलद्भाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि ।
प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे ।।५१।।

अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते ।
वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते ॥५२॥
समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा ।
करुणारसनिष्पन्द-नेत्रद्वय-विलासिनी ॥५३॥
सन्निधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके ।
करुणासुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु ॥५४॥
सर्वराजगृहे लक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते ।
स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु ॥५५॥
सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयार्पय ।
सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥५६॥
आद्यादि श्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामाङ्कसंस्थिते ।
प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ।५७॥
प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे ।
अचला भव सम्प्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे ॥५८॥
यावत्तिष्ठन्ति वेदाश्च यावत्वन्नाम तिष्ठति ।
यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि ॥५९॥
चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्द्धते सा दिने दिने ।
तथा दया ते मय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥६०॥
यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे ।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥६१॥
योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना ।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥६२॥

नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते नारायणोपि तव हृत्कमले यथाऽस्ते । नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव तौ तिष्टतां हृदि ममापि दयावति श्रीः ॥६३॥

विज्ञानवृद्धि हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यवृद्धि कुरु मे गृहे श्रीः ।
दया सुवृद्धि कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धि कुरु मे गृहे श्रीः ॥६४॥

न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्तचिन्तामणिकामधेनो ।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥६५॥

आद्यादि माये त्वमजाण्डबीजं त्वमेव साकार-निराकृति स्त्वम् ।
त्वया धृताश्चाब्जभवाण्डसङ्घान् चित्रं चरित्रं तव देवि विष्णोः ॥६६॥

ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः ।
महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ॥६७॥

अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्ता सूक्तानि यानि च ।
तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥६८॥

भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः ।
इति सञ्चिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे ॥६९॥

अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः ।
इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरण व्रजे ॥७०॥

तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित् ।
इति सञ्चिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम् ॥७१॥

त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते ।
यावत्सम्पूर्णकामः स्यात्तावद्देहि दयानिधे ॥७२॥

क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना ।
न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः ॥७३॥

यथाहि पुत्र वात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी ।
वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीर्णयति वत्सला ॥७४॥

यदि स्यान्तत्र पुत्रोऽहम् माता त्वं यदि मामकी ।
दया पयोधरस्तन्य सुधाभिरभिषिञ्च माम् ॥७५॥

मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे ।
पांसूनां वृष्टिविन्दूनां दोषाणाञ्च नमेमितिः ॥७६॥

पापिनामहमेवान्यो दयालूनान् त्वमग्रणीः ।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ।।७७।।
विधिनाहन्न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ।
आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ।।७८।।
कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः ।
विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे ।।७९।।

माता पिता त्वं गुरु सद्गतिः श्रीस्त्वमेव सञ्जीवनहेतुभूता ।
अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये ।।८०।।

आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना विशुद्धविज्ञानसुखैकदोग्ध्री ।
अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना ।।८१।।

अशेषवाग् जाड्यमलाप हन्त्री नवन्नवं स्पष्ट सुवाक् प्रदायिनी ।
ममेह जिह्वाग्र सुरङ्ग नर्त्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ।।८२।।

समस्तसम्पत्सु विराजमाना, समस्ततेजश्चयभासमाना ।
विष्णुप्रिये त्वम् भव दीप्यमाना, वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना ।।८३।।

सर्वं प्रदर्शे सकलार्थदे त्वं प्रभा सुलावण्य दया प्रदोग्ध्री ।
सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ।।८४।।

सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः सर्वेश्वरी सर्वभयाप हन्त्री । सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ।।८५।।

समस्त-विघ्नौघ-विनाशकारिणी समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा ।
अनन्त-सौभाग्य-सुखप्रदायिनी हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ।।८६।।

देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं देवाधिनाथ भव देवगणाभिवन्द्ये । मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना ।।८७।।

मा वत्सभैरभयदानकरोऽर्पितस्ते मौलौ ममेति मम दीनदयानुकम्पे । मातः समर्पय मुदा करुणाकटाक्षं माङ्गल्यबीजमिह नः सृज जन्प्रमातः ।।८८।।

कटाक्ष इह कामधुक्तव मनस्तु चिन्तामणिः करः सुरतरुः सदा नवनिधिस्त्वमेवेन्दिरे । भवेत्तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं मुखं तव कलानिधिर्विविध वाञ्छितार्थप्रदम् ।।८९।।

यथा रसस्पर्शनतोऽयसोपि सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते । कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाममङ्गलानामपि मङ्गलं त्वम् ।।९०।।

देहीति नास्तीति वचः प्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये । अतः सदाऽस्मिन्न भयप्रदा त्वं सहैव पत्या मयि सन्निधेहि ।।९१।।

कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या श्रीस्ते कलामयि रसेन रसायनेन । आस्तां यतो मम च दृक् शिरपाणिपादस्पृष्टाः सुवर्णवपुषः स्थिरजङ्गमाः स्युः ।।९२।।

आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्मपत्नी त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि । आद्यादिलक्ष्मि त्वदनुग्रहेण पदे पदे मे निधिदर्शनं स्यात् ।।९३।।

आद्यादि लक्ष्मीहृदयं पठेद्यः स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति ।
महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यस्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति ।।९४।।

यस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद् विष्णुवल्लभा ।
तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत् ।।९५।।
इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम् ।
जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ।।९६।।
त्रिकालमेककालं वा नरो भक्ति-समन्वितः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम् ।।९७।।
महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत् ।।९८।।
अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम् ।
ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम् ।।९९।।
नरेण वाऽथवा नार्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते ।
जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते ।।१००।।

य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे रमोत्सवे सन्निहितेसु भक्त्या ।
पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या लभेत्स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम् ।।१०१।।
य एकभक्तोन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी ।
स मन्दभाग्योपि रमाकटाक्षाद् भवेत् सहस्राक्षशताधिकश्रीः ।।१०२।।
श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमन्त्रार्थदृढैकनिष्ठाम् ।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मातः परमं पदं श्रीः ।।१०३।।
पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम् ।
सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं प्रदेहि मे लक्ष्मि पुनः पुनस्त्वम् ।।१०४।।
वादार्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं वयः स्थिरत्वं ललनासुभोगं ।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि जन्मजन्मनि ।।१०५।।
सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीर्विभूतिवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
शिरोबीजं—ॐ यं हं कं लं पं श्रीं ।
ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासां ।
विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।।१०६।।
बीजापूरं सरसिजयुगलं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं ।
भर्त्रायुक्तां मुहुरभयदां मह्यमप्यच्युतश्रीः ।।१०७।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ।।१०८।।

।। इति श्री अथर्वणरहस्ये श्रीलक्ष्मीहृदयस्तोत्रं समाप्तं ।।

श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम्

ॐ तामाह्वयामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम् ।
एह्येति देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये ।।१।।
आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा ।
आयाह्यायाहि धर्मार्थकाममोक्षमये शुभे ।।२।।

एवंविधैः स्तुतिपदैः सत्यैस्सत्यार्थसंस्तुता ।
कनीयसी महाभागा चन्द्रेण परमात्मना ॥३॥
निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः ।
उत्पन्नमात्रौ तावास्तां शिवकेशवसंश्रितौ ॥४॥

सनत्कुमारस्तमृषिं समाभाष्य पुरातनम् ।
प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम् ॥५॥
अथेद्दशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्कथम् ।
मुक्तिर्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥६॥

सनत्कुमार उवाच :

पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत् ।
सृष्टिं नानाविधां कृत्वा पश्चाच्चिन्तामुपेयिवान् ॥७॥
किमाहाराः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यन्ति भूतले ।
तथैव चासान्दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत् ॥८॥

दारिद्र्यान्मरणं श्रेयस्त्विति सञ्चिन्त्य चेतसि ।
क्षीरोदस्योत्तरे कूले जगाम कमलोद्भवः ॥९॥
तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरम् ।
ददर्श पुण्डरीकाक्षं वासुदेवं जगद्गुरुम् ॥१०॥

सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनम् ।
सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुम् ॥११॥
सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदविमले जले ।
अनन्तभोगशयनं विश्रान्तं श्रीनिकेतनम् ॥१२॥

कोटिसूर्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरम् ।
योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावास सुरेश्वरम् ॥१३॥
जगदुत्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणम् ।
लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमण्डलमण्डितम् ॥१४॥

आयुधैर्देहवद्भिश्च चक्राद्यैः परिवारितम् ।
दुर्निरीक्ष्यं सुरैः सिद्धैर्महायोनिशतैरपि ॥१५॥
आधारं सर्वशक्तीनां परं तेजः सुदुस्सहम् ।
प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसम्भवः ॥१६॥
शिरस्यञ्जलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाच ह ।
मनोवांछित सिद्धि त्वं पूरयस्य महेश्वर ॥१७॥
जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥१८॥
सर्वेश्वर जयानन्द सर्वावास परात्पर ।
प्रसीद मम भक्तस्य छिंधि सन्देहजं तमः ॥१९॥
एवं स्तुतः स भगवान् ब्राह्मणाऽव्यक्तजन्मना ।
प्रसादाभिमुखः प्राह हरिर्विश्रान्तलोचनः ॥२०॥

श्री भगवानुवाच :

हिरण्यगर्भ तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवांछितम् ।
तद्वक्ष्यामि न सन्देहो भक्तोसि मम सुव्रत ॥२१॥
केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः ।
प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवन्तं जनार्दनम् ॥२२॥
चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव ।
परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतम् ॥२३॥
दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परम् ।
सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत् ॥२४॥
श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतम् ।
नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युतः ॥२५॥
त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।
इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः ॥२६॥

श्रीभगवानुवाच :

महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुरुष: प्रभो: ।
भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैषाऽनपायिनो ।।२७।।
एकैव वर्त्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधिते: ।
सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता ।।२८।।
सर्वैश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी ।
प्राणशक्ति: परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि ।।२६।।
शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता परा कला ।
अहं तस्या: परं नाम्नां सहस्रमिदमुत्तमम् ।।३०।।
शृणुष्वावहितो भूत्वा परमैश्वर्यभूतिदम् ।
देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम् ।।३१।।
श्री: पद्मा प्रकृति: सत्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया ।
केवला निष्फला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा ।।३२।।
व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमा मतोद्भवा ।
निर्व्योमा व्योममध्यस्था पञ्चव्योमपदाश्रिता ।।३३।।
अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी ।
नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा ।।३४।।
ज्ञानशक्ति: कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्ति: शिखावहा ।
स्नेहाभाषा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला ।।३५।।
अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी ।
शक्तिर्विभिन्नसर्वार्ति: समुद्रपरितोषिणी ।।३६।।
मूर्ति: सनातनी हार्द्दी निस्तरङ्गा निरामया ।
ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकासिनी ।।३७।।
स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पार्चि: सुनिर्मला ।
स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता ।।३८।।

अकलङ्का निराधारा निस्सङ्कल्पा निराश्रया ।
असङ्कीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा ।।३९।।
अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यन्त्रा यन्त्रवाहिनी ।
अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा ।।४०।।
अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी ।
अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ।।४१।।
अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी ।
एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी ।।४२।।
सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः ।
इश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा ।।४३।।
अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा ।
नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा ।।४४।।
तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्वांशुमालिनी ।
अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी ।।४५।।
अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा ।
सन्धानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी ।।४६।।
लक्ष्यीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरपूरणेन वा ।
अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः ।।४७।।
सत्या प्रह्वा क्रियायोग्या ह्यपर्णाह्लादिनी शिवा ।
सम्पूर्णाह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा ।।४८।।
रजोवत्यर्कप्रतिभाऽकर्षिणी कर्षिणी रसा ।
परा वसुमती देवी कान्तिः शान्तिर्मतिः कला ।।४९।।
कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः ।
सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा ।।५०।।
अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा ।
धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा ।।५१।।

शुद्धा ध्वनि: सृति: सृष्टिर्विकृति: कृष्टिरेव च ।
प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी ।।५२।।
अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी ।
अनन्तरूपाऽनन्तात्माऽनन्तस्थाऽनन्तसम्भवा ।।५३।।
महाशक्ति: प्राणशक्ति: प्राणदात्री रतिम्भरा ।
महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा ।।५४।।
प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धि गोचरा ।
नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी ।।५५।।
सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका ।
सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी ।।५६।।
नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना ।
व्यक्ताऽव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता ।।५७।।
सङ्कल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा ।
भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता ।।५८।।
प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा ।
कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी ।।५९।।
निरूपोद्भिन्नसन्ताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया ।
महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया ।।६०।।
महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना ।
प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करी ।।६१।।
चिन्ता बुद्धिर्यश: प्रज्ञा शान्तिराप्तातिवर्द्धिनी ।
प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा ।।६२।।
काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा ।
सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला ।।६३।।
वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा ।
हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता ।।६४।।

योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा ।
महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया ।।६५।।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा ।
त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ।।६६।।
सुतारा तारिणी तारा दुर्गा सन्तारिणी परा ।
सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा ।।६७।।
गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्यासुशोभिता ।
अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी ।।६८।।
आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका ।
गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा ।।६९।।
विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा ।
सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी ।।७०।।
इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा दया मतिः ।
श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीःश्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ।।७१।।
अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा ।
प्रतिज्ञासन्ततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी ।।७२।।
स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा ।
सन्ध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती ।।७३।।
कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया ।
सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी ।।७४।।
सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना ।
हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा ।।७५।।
चन्द्रा हिरण्मयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा ।
त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरवरार्चिता ।।७६।।
त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी ।
पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता ।।७७।।

पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता ।
विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा ।।७८।।
विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना ।
महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता ।।७९।।
कालसङ्कर्षिणी घोरा तत्त्वसङ्कर्षिणी कला ।
जगत्सम्पूरणी विश्वा महा वभवभूषणा ।।८०।।
वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता ।
नृसिंह भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ।।८१।।
ऐन्द्री कामधनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा ।
दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना ।।८२।।
गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना ।
महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा ।।८३।।
युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला ।
त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी ।।८४।।
महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना ।
शङ्खिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचरेश्वरी ।।८५।।
भद्रकाली चैव वीरा कौमारी भवमालिनी ।
कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका ।।८६।।
वालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका ।
अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना ।।८७।।
वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा ।
महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया ।।८८।।
उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी ।
सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया ।।८९।।
सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी ।
हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा ।।९०।।

सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी ।
पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा ॥९१॥
महाधना च या श्रृङ्गी कार्द्दमी कम्बुकन्धरा ।
आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा ॥९२॥
वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा ।
कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी ॥९३॥
णोगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी ।
कंसविद्रावणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा ॥९४॥
कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया ।
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥९५॥
बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता ।
घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना ॥९६॥
महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना ।
सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी ॥९७॥
आर्या यशोदासुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा ।
दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी ॥९८॥
भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी ।
क्षीराब्धितनया पद्म कमला धरणीधरा ॥९९॥
रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी ।
प्रज्ञाधाराऽमिताबुद्धिर्वेद माता यशोवती ॥१००॥
समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला ।
अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरागतिः ॥१०१॥
दीक्षा वोक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला ।
अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता ॥१०२॥
सुदीप्ता लेलिहाना च कराला विश्वपूरका ।
विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया ॥१०३॥

उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिन्दुमालिनी ।
क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा ।।१०४।।
हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा ।
आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया ।।१०५।।
मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा ।
सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमङ्गला ।।१०६।।
श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना ।
हंसा हीनकरी हंसी हृद्या हृत्कमलालया ।।१०७।।
सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायते क्षणा ।
सावित्री सत्यसङ्कल्पा कामदा कामकामिनी ।।१०८।।
दर्शनीया दृशा दृश्या स्पृश्या सेव्या वराङ्गना ।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना ।।१०९।।
आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी ।
श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा ।।११०।।
अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी ।
निश्रेणि: सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता ।।१११।।
बला बलाधिका देवी गौमती गोकुलालया ।
तोषणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना ।।११२।।
उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी ।
कूष्माण्डीदारुणा चण्डा किराती नन्दनालया ।।११३।।
कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी ।
सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्द्दिनी ।।११४।।
जगन्माता भयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा ।
काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा ।।११५।।
धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी ।
गान्धर्वी रेवती गङ्गा शकुनी विमालनना ।।११६।।

इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया।
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया ॥११७॥
जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना।
मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता ॥११८॥
व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजोज्वला।
रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया ॥११९॥
श्रवणा श्रावणा नेत्रा रसनाप्राणचारिणी।
विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना ॥१२०॥
वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्द्धिनी।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥१२१॥
गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्या सर्वकामसमृद्धिदा ॥१२२॥
सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता।
सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः ॥१२३॥
अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तु देवता।
मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना ॥१२४॥
अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा।
राजश्रीरूपसहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता ॥१२५॥
जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम्।
सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया ॥१२६॥
धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी।
कद्रूर्द्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी ॥१२७॥
महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा।
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी ॥१२८॥
तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती।
रत्ना रत्नावलीभूता शतधामा शतापहा ॥१२९॥

त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्द्दिनी घोषवर्जिता ।
साध्याऽदितिर्दितिर्द्देवी मृगवाहा मृगाङ्कगा ॥१३०॥
चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नाकराश्रया ।
हिरण्यरजतद्वन्द्वा शङ्खभद्रासनस्थिता ॥१३१॥
गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया ।
मरीचिश्चीरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा ॥१३२॥
सुसूक्ष्मा निर्वृतिस्थूला निवृत्तारातिरेव च ।
मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा ॥१३३॥
दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी ।
भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला ॥१३४॥
साङ्गा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः ।
कपिला नीररक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिङ्गिनी ॥१३५॥
अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा ।
सम्पूर्णमण्डला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा ॥१३६॥
जया पुष्टिकरी च्छाया मानसा हृदयोज्ज्वला ।
सुवर्णकारिणी श्रेष्ठा मृतसञ्जीवनी रणे ॥१३७॥
विशल्यकरणी शुभ्रा सन्धिनी परमौषधिः ।
ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा ॥१३८॥
विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका ।
नित्योदिता नित्यहृष्टा नित्यकामकरीषिणी ॥१३९॥
पद्माङ्का वज्रजिह्वा व वक्रदण्डा विभासिनी ।
विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी ॥१४०॥
मानिनी मङ्गला मान्या मानिनी मानदायिनी ।
विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥१४१॥
हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी ।
प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोभिज्ञा वदन्मतिः ॥१४२॥

यसोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धिनी ।
अमृताधारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची ।।१४३।।
संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यामृता प्रभा ।
आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता ।।१४४।।
सर्वार्थसाधनकरी धानुर्द्धारणिकामला ।
करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया ।।१४५।।
सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी ।
माला काञ्चनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा ।।१४६।।
प्रक्रियापरमा भोक्त्री क्षोभिका च सुखोदया ।
विजृम्भणा च वज्राख्या श्रृङ्खला कमलेक्षणा ।।१४७।।
जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा ।
मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा ।।१४८।।
धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा ।
धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता ।।१४९।।
सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा ।
सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्य शक्तिर्गुहालया ।।१५०।।
हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्रसुधारिणी ।
व्यौमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मग्रमन्मयी ।।१५१।।
गङ्गा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती ।
तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी ।।१५२।।
बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी ।
ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा ।।१५३।।
काम्यचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी ।
हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना ।।१५४।।
अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा ।
सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया ।।१५५।।

सर्वाङ्गयोनि: साऽव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी ।
विष्णुवक्ष:स्थलगता किमत: परमुच्यते ॥१५६॥
परा निर्महिमा देवी हरिवक्ष:स्थला श्रया ।
सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम ॥१५७॥
इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्या: प्रोक्तं शुभावहम् ।
परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागत: ॥१५८॥
यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणुयाद्वापि पद्मज ।
शुचि: समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वित: ॥१५९॥
श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनै: ।
भोगैश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम् ॥१६०॥
तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधर प्रियाम् ।
ततो नामसहस्रेण तोषयेत्परमेश्वरीम् ॥१६१॥
नानारत्नावलीस्तोत्रमिदं य: सततं पठेत् ।
प्रसादाभिमुखी लक्ष्मी: सर्वं तस्मै प्रयच्छति ॥१६२॥
यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूता: शक्तयो विश्वगा: सदा ।
कारणत्वं न तिष्ठन्ति जगत्यस्मिंश्चराचरे ॥१६३॥
तस्मात्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा ।
सुप्रीता शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि ॥१६४॥
एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युत: प्रभु: ।
तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा ॥१६५॥
तथैवैका परा शक्ति:श्रीस्तस्य करुणाश्रया ।
ज्ञानादिषड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृति: परा ॥१६६॥
एकैकशक्ति:श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्त्तते ।
परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी ॥१६७॥
अनन्तनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका ।
जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥१६८॥

तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी ।
सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् ॥१६९॥
योयो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः ।
याया तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥१७०॥
प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते ।
अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः ॥१७१॥
अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः ।
महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम् ॥१७२॥
ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मी संशुद्धचेतसः ।
पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठंस्तोत्रमिदं क्रमात् ॥१७३॥
दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् ।
सकामानाञ्च फलदामकामानाञ्च मोक्षदाम् ॥१७४॥
पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम् ।
महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः ॥१७५॥

करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना,
क्वचिदमलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः ।
क्वचिदपि दयिताङ्गे चामरव्यग्रहस्ता,
क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रती हेमकान्तिः ॥१७६॥

॥ इति श्री ब्रह्मपुराणे काश्मीर वर्णने हिरण्यगर्भ हृदये सर्वकामप्रदायकं पुरुषोत्तम प्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

१३ | # कामधेनु तन्त्रम्

प्रथम पटल

ॐ नमः परदेवतायै

श्री पार्वत्युवाच :

देवदेव महादेव सर्वागम-विशारद ।
अधुना देवदेवेश पञ्चाशद्वर्णमुत्तमं ।
तत्त्वं रूपं महादेव कथयस्व दयानिधे ।
कृपया कथयेशान यद्यहं तव वल्लभा ।

श्री महादेव उवाच :

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि रहस्यमतिगोपनं ।
येन विज्ञान-मात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।
अज्ञात्वा मन्त्रतत्त्वानि महाविद्यां जपेत्तु यः ।
सर्वं तस्य वृथा देवि किं तस्य जपपूजनैः ।
ध्यानावधारणे चैव तथा योगसमाधिना ।
वर्णज्ञानं यदा नास्ति किं तस्य जपपूजनैः ।
मम कण्ठे स्थितं बीजं पञ्चाशद्वर्णमद्भुतं ।
नानावर्ण-युतं शुद्धं तन्त्राणां सारमुत्तमम् ।
पञ्चाशन्मातृकां देवीं नानाविद्यामयीं सदा ।
नानाविद्यामयीं देवीं महाविद्यामयीं तथा ।

सर्ववर्णमयीं देवीं सर्वदेवमयीं परां ।
सर्वदेवमयीं सौम्यां ब्रह्माण्डजननीं परां ।
प्रणम्य बहुधा भक्त्या निगदामि शृणु प्रिये ।
अकारादि-क्षकारान्ता मातृकाबीजरूपिणी ।
विसर्गश्चैव विन्दुश्च त्रिशक्तिब्रह्मविग्रहः ।
वर्णात्तु जायते ब्रह्मा तथा विष्णुः प्रजायते ।
रुदश्च जायते देवि जगत्संहारकारकः ।
मम कण्ठस्थिता या सा शारदा वामलोचना ।
तस्या गर्भस्थिता देवि वीजानि विविधानि च ।
विधृत्य कण्ठदेशे तु शिवोऽहं कमलानने ।
शृणु तत्त्वं अकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।
पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तित्रय-समन्वितं ।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।
विन्दुतत्त्वमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।।अ१।।

।। इति श्रीकामधेनुतन्त्रे देव-देवी-संवादे प्रथमः पटलः ।।

द्वितीय पटलः

श्री महादेव उवाच :

आकारं परमाश्चर्यः शङ्खज्योतिर्मयं प्रिये ।
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रः स्वयं प्रिये ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली ।।आ२।।
इकारं परमानन्दं सुगन्धकुसुमच्छवि ।
हरिब्रह्ममयं वर्णं सदा रुद्रयुतं प्रिये ।
सदा शक्तिमयं देवि गुरुब्रह्म स्वयं तथा ।

सदाशिवमयं वर्णं परब्रह्म-समन्वितं ।
हरिब्रह्मात्मकं वर्णं गुणत्रय-समन्वितं ।
इकारं परमेशानि मूर्तिर्वै कुण्डली स्वयम् ।।इ३।।

ईकारं परमेशानि स्वयं परमकुण्डली ।
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रमयं सदा ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लताकृति ।
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।।ई४।।
उकारं परमेशानि तारः कुण्डलिनी स्वयं ।
पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं देवि चतुर्वर्गप्रदायकं ।।उ५।।
ऊकारं देवदेवेशि वीजं परमदुर्लभं ।
शङ्खकुन्दसमाकारं स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणयुतं वर्णं तथा त्रयगुणात्मकं ।
विन्दुत्रययुतं वर्णं पीतविद्युल्लता तथा ।
धर्मार्थकाममोक्षं च सदा सुखप्रदायकं ।।ऊ६।।
ऋकारं परमेशानि कुण्डली मूर्तिमान् स्वयं ।
अत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्रश्चैव वरानने ।
सदाशिवयुतं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतं ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं चतुर्ज्ञानलयं सदा ।
रक्तविद्युल्लताकारं ऋकारं प्रणमाम्यहं ।।ऋ७।।
ॠकारं परमेशानि स्वयं परमकुण्डली ।
पीतविद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा ।
चतुर्ज्ञानमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
चतुर्ज्ञानमय वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्ति सहितं वर्णं प्रणमामि सदा प्रिये ।।ॠ८।।

लृकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली परदेवता।
अत्र ब्रह्मादयं सर्वे तिष्ठन्ति सततं प्रिये।
पञ्चदेवमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं सदा।
पञ्चप्राणयुतं वर्णं तथा गुणत्रयात्मकं।
विन्दुत्रयात्मकं वर्णं पीतविद्युल्लता तथा ।।लृ९।।
लॄकारं परमेशानि पूर्णचन्द्रसमप्रभं।
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा।
गुणत्रयात्मकं वर्णं तथा विन्दुत्रयात्मकं।
चतुर्वर्गप्रदं देवि स्वयं परमकुण्डली ।।लॄ१०।।
एकारं परमं दिव्यं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः।
बन्धूककुसुमप्रख्यं पञ्चदेवमयं सदा।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं तथा विन्दुत्रयात्मकं।
चतुर्वर्गप्रदं देवि स्वयं परमकुण्डली ।।ए११।।

।। इति कामधेनु-तन्त्रे देव-देवी सम्वादे द्वितीयः पटलः ।।

तृतीय पटलः

ऐकारः परमं दिव्यं महाकुण्डलिनी स्वयं।
कोटिचन्द्रप्रतीकाशं पञ्चप्राणमयं सदा।
ब्रह्मविष्णुमयं वर्णं विन्दुत्रयसमन्वितं ।।ऐ१२।।
ओकारं चञ्चलापाङ्गि पञ्चदेवमयं सदा।
रक्तविद्युल्लताकारं त्रिगुणात्मानमीश्वरं।
पञ्चप्राणमयं वर्णं नमामि देवमातरं।
एतद्वर्णं महेशानि स्वयं परमकुण्डली ।।ओ१३।।
रक्तविद्युल्लताकारं औकारं कुण्डली स्वयं।
अत्र ब्रह्मादयः सर्वे तिष्ठन्ति सतत् प्रिये।

पञ्चप्राणमयं वर्णं सदाशिवमयं सदा ।
सदा ईश्वरसंयुक्तं चतुर्वर्गप्रदायकं ।।औ१४।।
अंकारं विन्दुसंयुक्तं पीतविद्युत्समप्रभं ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं ब्रह्मादिदेवतामयं ।
सर्वज्ञानमयं वर्णं त्रिन्दुत्रयसमन्वितं ।
शक्तित्रयमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली ।।अं१५।।
अ:कारं परमेशानि विसर्गसहितं सदा ।
अ:कारं परमेशानि रक्तविद्युत्प्रभामयं ।
पञ्चदेवमयो वर्णः पञ्चप्राणमयः सदा ।
सर्वज्ञानमयो वर्णः आत्मादितमसंयुतः ।
विन्दुत्रयमयो वर्णः शक्तित्रयमयः सदा ।
किशोरवयसः सर्वे गीतवाद्यादितत्पराः ।
शिवस्य युवती एता मूर्तिमत्कुण्डली स्वयं ।।अ:१६।।
अधुना सम्प्रवक्ष्यामि करतत्वमनुत्तमं ।
रहस्यं परमाश्चर्यं त्रैलोक्यानां च संश्रृणु ।
वामरेखा भवेद्ब्रह्मा विष्णुर्दक्षिणवीथिका ।
अधोरेखा भवेद्रुद्रो मात्रा साक्षान्महेश्वरी ।
कुण्डली अंकुशाकारा मध्ये शून्यः सदाशिवः ।
जवायावकसङ्काशा वामे रेखा वरानने ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशा दक्षरेखा च मूर्तिमान् ।
अधोरेखा वरारोहे महामारकतद्युतिः ।
शङ्खकुन्दसमा कीर्तिन्मात्रा साक्षात् सरस्वती ।
कुण्डली अंकुशा या तु कोटिविद्युल्लताकृतिः ।
कोटिचन्द्रप्रतीकाशा मध्ये शून्यं सदाशिव ।
शून्यगर्भे स्थिता काली कैवल्यपददायिनी ।
ककाराज्जायते सर्वं कामं कैवल्यमेव च ।

अर्थश्च जायते देवि तथा धर्मश्च नान्यथा ।
ककारः सर्ववर्णानां मूलप्रकृतिरेव च ।
ककारः कामदा कामरूपिणी स्फुरदव्यया ।
कामिनी या महेशानि स्वयं प्रकृतिसुन्दरी ।
माता सा सर्वदेवानां कैवल्यपददायिनी ।
ऊर्ध्वकोणे स्थिता कामा ब्रह्मशक्तिरितीरिता ।
वामकोणे स्थिता ज्येष्ठा विष्णुशक्तिरितीरिता ।
दक्षकोणे स्थिता विन्दु रौद्री संहाररूपिणी ।
ज्ञानार्था सा तु चावङ्कि केन चतुष्टयात्मिका ।
इच्छाशक्तिर्भवेत् ब्रह्मा विष्णुश्च ज्ञानशक्तिमान् ।
क्रियाशक्तिर्भवेत् रुद्रः सर्वः प्रकृतिमूर्तिमान् ।
आत्मविद्या शिवैस्तत्वैः सदासाराप्रतिष्ठितैः ।
आसनं त्रिपुरादेव्याः ककारं पञ्चदेवतां ।
ईश्वरो यस्तु देवेशि त्रिकोणे तस्य संस्थितिः ।
त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमं ।
केवलं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता ।
ॐ शयनागार-सिन्दूर-सदृशीं कामिनीं परां ।
चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजितां ।
कदम्बकोरकाकारस्तनद्वयविभूषितां ।
रत्नकेयूराङ्गदैश्च भूषणैरुपशोभितां ।
रत्नहारैः पुष्पहारैः शोभितां परमेश्वरीं ।
एवं हि कामिनीं ज्ञात्वा ककारं दशधा जपेत् ।
प्रफुल्लं च ततो ध्यात्वा जपस्य फलभाक् भवेत् ।
एतत्ते कथितं देवि ककारस्तत्वमुत्तमं ।

।। इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे तृतीयः पटलः ।।

चतुर्थ पटल

श्री महादेव उवाच :

ककारं परमेशानि कुण्डलीत्रयसंयुतं ।।क १।।
खकारं परमाश्चर्यं शङ्खकुन्दसमप्रभं ।
कोगतश्वयुतं शून्यं विन्दुत्रयसमन्वितं ।
गुणत्रययुतं देवि पञ्चदेवमयं सदा ।
त्रिशक्तिसंयुतं वर्णं खकारं प्रणमाम्यहं ।।ख २।।
गकारं परमेशानि पञ्चदेवात्मकं सदा ।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं निरीहं निर्मलं सदा ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये ।
अरुणादित्यसङ्काशं कुण्डलीं प्रणमाम्यहं ।।ग ३।।
गकारं चञ्चलापाङ्गि चतुष्कोणात्मकं सदा ।
पञ्चदेवमयं वर्णं अरुणादित्यसन्निभं ।
निर्गुणं त्रिगुणोपेतं सदा त्रिगुणसंयुतं ।
सर्वगं सर्वदं शान्तं घकारं प्रणमाम्यहं ।।घ ४।।
ङकारं परमेशानि स्वयं परमकुण्डलो ।
सर्वदेवमयं वर्णं त्रिगुणं लोललोचने ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं ङकारं प्रणमाम्यहं ।।ङ ५।।
चवर्णं शृणु सुश्रोणि चतुर्वर्गप्रदायकं ।
कुण्डलीसहितं देवि स्वयं परमकुण्डली ।
सततं कुण्डलीयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं प्रिये ।।च ६।।
छकारं परमाश्चर्यं स्वयं परमकुण्डली ।
सततं कुण्डलीयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा ।

पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्ति सहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतं ।
पीतविद्युल्लताकारं छकारं प्रणमाम्यहं ।।छ ७।।
जकारं परमेशानि या स्वयं मध्यकुण्डली ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं सदा त्रिगुणसंयुतं ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं प्रिये ।।ज ८।।
झकारं परमेशानि कुंडली मोक्षरूपिणी ।
रक्तविद्यल्लताकारं सदा त्रिगुणसंस्थितं ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।।झ ९।।
सदा ईश्वरसंयुक्त ञकारं शृणु सुन्दरी ।
रक्तविद्युल्लताकारं स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।।ञ १०।।
टकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।
कोटिविद्युल्लताकारं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणयुतं वर्णं गुणत्रयसमन्वितं ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।।ट ११।।
ठकारं चंचलापाङ्गि कुण्डली मोक्षरूपिणी ।
पीतविद्युल्लताकारं सदा त्रिगुणसंयुतं ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।।ठ १२।।
डकारं चञ्चलापाङ्गि सदा त्रिगुणसंयुतं ।
पंचदेवमयं वर्णं पंचप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।

चतुर्ज्ञानमयं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतं ।
पीतविद्युल्लताकारं डकारं प्रणमाम्यहं ।।ड १३।।
ढकारं परमाराध्यं या स्वयं कुण्डली परा ।
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा
सदा त्रिगुणसंयुक्तं आत्मादितत्वसंयुतं ।
रक्तविद्युल्लताकारं ढकारं प्रणमाम्यहं ।।ढ १४।।
णकारं परमेशानि स्वयं परमकुण्डली ।
पीतविद्युल्लाताकारं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं देवि सदा त्रिगुणसंयुक्तं ।
आत्मादितत्वसंयुक्तं महामोहप्रदायकं ।।ण १५।।

।। इति श्रीकामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे चतुर्थः पटलः ।।

पञ्चम पटल

श्री महादेव उवाच :

तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतं ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभं ।।त १६।।
थकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली मोक्षरूपिणी ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं सदा ।
अरुणादित्यसङ्काशं थकारं प्रणमाम्यहं ।।थ १७।।
दकारं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकं ।
पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं देवि त्रिविन्दुसहितं सदा ।

आत्मादितत्त्वसंयुक्तं स्वयं परमकुण्डली ।
रक्तविद्युल्लाताकारं दकारं हृदि भावय ।।द १८।।

धकारं परमेशानि कुण्डली मोक्षरूपिणी ।
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्प्राणमयं देवि त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं धकारं हृदि भावय ।
पीतविद्युल्लताकारं चतुर्वर्गप्रदायकं ।।ध १९।।

नकारं शृणु चार्वङ्गि रक्तविद्युल्लाकृति ।
पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं हृदि भावय पार्वति ।।न २०।।

अत:परं प्रवक्ष्यामि पकारं मोक्षदायकं ।
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं शरच्चन्द्रसमप्रभं ।
पञ्चदेवमयं वर्गं स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिगुणारहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतं ।
महामोक्षप्रदं वर्णं हृदि भावय पार्वति ।।प २१।।

फकारं शृणु चार्वङ्गि रक्तविद्युल्लतोपमं ।
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं सदा त्रिगुणसंयुतं ।
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा ।।फ २२।।

बकारं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकं ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं सदा चामृतनिर्मितं ।
स्वयं कुडलिनी साक्षात सततं प्रणमाम्यहं ।।ब २३।।

भकारं शृणु चार्वङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।
महामोक्षप्रदं वर्णं अरुणादित्यसन्निभं ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिबिन्दुसहितं प्रिये ।।भ २४।।
मकारं शृणु चार्वङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।
अरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकं ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
आत्मादितत्त्वसंयुक्तं हृदिस्थं प्रणमाम्यहं ।।म २५।।
यकारं श्रृणु चार्वङ्गि चतुष्कोणमयं सदा ।
पलालधूमसङ्काशं स्वयं परमकुण्डली ।
पञ्चप्राणमयं वर्णं पंचदेवमयं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं तथा ।
प्रणमामि सदा वर्णं मूर्तिमान् मोक्षमव्ययं ।।य २६।।

।। इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे पंचमः पटलः ।।

षष्ठ पटल

श्री महादेव उवाच :

रकारं चंचलापाङ्गि कुण्डलीद्वयसंयुतं ।
रक्तविद्युल्लताकार पंचदेवात्मकं सदा ।
पंचप्राणमयं वर्णं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं देवि आत्मादितत्त्वसंयुतं ।
सर्वतेजोमयं वर्णं सततं प्रणमाम्यहं ।।र २७।।
लकारं चंचलापाङ्गि कुण्डलीत्रयसंयुतं ।
पीतविद्युल्लताकारं सर्वरत्नप्रदायकं ।

पंचदेवमयं वर्णं पंचप्राणात्मकं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं त्रिविन्दुसहितं हि सा ।
आत्मादितत्वसहितं हृदि भावय सर्वदा ।।ल २८।।
वकारं चंचलापाङ्गि कुण्डली मोक्षमव्ययं ।
पंचप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतं ।
पंचदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतोपमं ।
चतुर्वर्गमयं वर्णं सर्वसिद्धिप्रदायकं ।
त्रिशक्तिसहितं देवि त्रिविन्दुसहितं सदा ।।व २९।।
शकारं परमेशानि स्वर्णवर्णं शुचिस्मिते ।
रक्तवर्णप्रभाकारा स्वयं परमकुण्डली ।
चतुर्वर्गप्रदां देवि शकारं ब्रह्मविग्रहं ।
पंचदेवमयं वर्णं पंचप्राणात्मकं प्रिये ।
रजः सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा ।
त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुक्तं ।।श ३०।।
षकारं शृणु चार्वङ्गि कोणषट्कमयं सदा ।
रक्तचन्द्रप्रतीकाशं स्वयं परमकुण्डली ।
चतुर्वर्गप्रदं वर्णं सुधानिर्मितविग्रहं ।
पंचदेवमयं वर्णं पंचप्राणामयं सदा ।
रजःसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं परं ।
सर्वदेवमयं वर्णं हृदि भावय पार्वति ।।ष ३१।।
सकारं शृणु चार्वङ्गि शक्तिबीजं परात्परं ।
कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीत्रयसंयुतं ।
पंचदेवमयं देवि पंचप्राणमयं सदा ।
रजः सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा ।

त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतं ।
प्रणम्य सततं देवि हृदि भावय सुन्दरि ।।स ३२।।
हकारं श्रृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकं ।
कुण्डलीत्रयसंयुक्तं रक्तविद्युल्लतोपमं ।
रजःसत्वतमोयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्ण त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं हृदि भावय सुन्दरि ।।ह ३३।।
क्षकारं श्रृणु चार्वङ्गि कुण्डलीत्रयसंयुतम् ।
चतुर्वर्गमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा ।
पञ्चप्राणात्मकं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा ।
त्रिविन्दुसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतम् ।
शरच्चन्द्रप्रतीकाशं हृदि भावय सुन्दरि ।।क्ष३४।।
अकारादि-क्षकारान्तं स्वयं परमकुण्डली ।
सर्वं चराचर विश्वं वर्णात्तु जायते ध्रुवम् ।
नानाशास्त्रं पुराणं च इतिहासं च सुन्दरि ।
वेदं च स्मृतिशास्त्रं च अन्यानि यानि कानि च ।
अक्षराज्जायते सर्वं परंब्रह्म स्वयं शिवे ।।

।। इति कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसम्वादे षष्ठः पटलः ।।

सप्तम पटल

श्री महादेव उवाच :

रहस्यं परमाश्चर्यं सदा मम हृदि स्थितं ।
अतःपरं प्रवक्ष्यामि मन्त्रतत्त्वं पृथक्-पृथक् ।
मातृकाया वरारोहे सावधानावधारय ।
अतः परं जपेन्मन्त्रं पञ्चाशन्मातृकां पृथक् ।

अतस्त्वमविकारी स्यान्नात्र कार्या विचारणा।
इति ते कथितं देवि प्रयोगं मन्त्रमुत्तमं।
एतन्मन्त्रं बिना देवि इष्टं मन्त्रं जपेन्नरः।
सर्वं तस्य भवेद्व्यर्थं सर्वं व्यर्थकदर्शनम्।
एतन्मन्त्रं प्रथमतो दशधा प्रजपेत् प्रिये।
ततस्तु प्रणवं दत्वा मातृकां प्रजपेत पृथक्।
प्रयोगं परमाश्चर्यं सावधानावधारय।

तद्यथा—

ॐ अं ॐ ॐ आं ॐ ॐ इं ॐ ॐ ईं ॐ ॐ उं ॐ ॐ ऊं ॐ ॐ ऋं ॐ ॐ ॠं ॐ ॐ लृं ॐ ॐ ॡं ॐ ॐ एं ॐ ॐ ऐं ॐ ॐ ओं ॐ ॐ औं ॐ ॐ अं ॐ ॐ अः ॐ। ॐ कं ॐ……

एवं क्षकारपर्यन्तं प्रणवैः पुटितं सदा।
प्रत्येकमेव चार्वङ्गि दशधा दशधा जपेत्।
प्रत्येकं जपमात्रेण प्रत्येकं ध्यानमाचरेत्।
अथवा सर्ववर्णानामेकीकृत्य वरानने।
प्रजपेद्दशधा मन्त्रं स्वमन्त्रं प्रजपेत्ततः।
तथा च सर्ववर्णानां ध्यानं वक्ष्यामि संश्रृणु।
कोटिचन्द्रप्रतीकाशां पुण्डरीकोपरिस्थितां।
भ्रमद् भ्रमरलीलाभां नयनत्रयराजितां।
नानाशास्त्रप्रवक्त्रीं च विद्याभ्यासमयीं सदा।
नानावाद्यमयीं देवीं श्वेतां शुक्लपरिष्कृतां।
शुक्लाभरणदीप्ताङ्गीं शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीं।
ब्रह्माण्डं दर्पणे यस्य वामहस्तस्य पार्वति।
तद्वच्छूकशिशुं प्रेक्ष्य क्षुद्रदर्पणमुच्यते।
एवं ध्यात्वा जगद्धात्रीं मातृकां जगदम्बिकां।
प्रजपेद्दशधा मन्त्रमेकधा वा जपेत्त यः।

सर्वसिद्धिमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
एषा ते कथिता विद्या मातृका परमात्मिका ।
यत्कृत्वा साधको याति दुर्लभं मोक्षमव्ययम् ।
प्रत्येकेनाथवा देवि एकैकैव वरानने ।
रहस्यं शृणु चार्वङ्गि सुगोप्यं भुवनत्रये ।
इष्टविद्यां सकृत स्मृत्वा मनसा परमेश्वरि ।
यस्य मन्त्रस्य यद् ध्यानं कृत्वा देवि प्रयत्नतः ।
तन्मन्त्रं दशधा जप्त्वा इष्टध्यानं ततः प्रिये ।
इष्टमन्त्रं प्रजप्त्वा वै सर्वसिद्धि ततो लभेत् ।
अनेन विधिना देवि मन्त्रश्चैतन्यमाप्नुयात् ।
चैतन्यरहितं मन्त्रमेकधा तु स्मरेत्तु यः ।
कोटिपुरश्चरं याति नान्यथा वरवर्णिनि ।

श्री महादेव उवाच :

अपरं शृणु चार्वङ्गि वर्गाष्टकमनुत्तमम् ।
वर्णाष्टकं बिना देवि कोटिपुरश्वरं यदि ।
सर्वं तस्य वृथा देवि अन्ते च नरकं ब्रजेत् ।
अकचटतपयशा इत्येदष्टवर्गकम् ।
मन्त्रस्यादौ च अन्ते अकारं बिन्दुसंयुतम् ।
दत्वा तमेव भक्त्या च अष्टोत्तरशतं जपेत ।
अनेन विधिना देवि आदित्याभं समाचरेत् ।
ताबज्जपेद्वरारोहे यावल्लक्षं समाप्यते ।
ततो मन्त्रं वरारोहे ध्रुवं जीवत्वमाप्नुयात् ।
जीवत्वं हि विना देवि न पुरश्चरणं चरेत् ।
जीवत्वं हि बिना देवि यदि कुर्यात् पुरश्चरम् ।
विफला तस्य सा सर्वा पूर्वपुण्यं विनश्यति ।

वर्गाष्टकेन सहितं प्रत्यहं प्रजपेत् शतम् ।
सदैव सहसा भद्रे सर्वं मन्त्रं च सिध्यति ।
किं तस्य ध्यानपूजायां पुरश्चर्यां च किं पुनः ।
कृत्वा तु जीवं मन्त्रस्य विद्यां च वरवर्णिनि ।
विद्यायाश्च तथा देवि यः कुर्यात् प्राणनिर्णयं ।
तत्क्षणाद् यान्ति चार्वङ्गि पुरश्चर्यां शतं शतम् ।
विशेषतः कलियुगे जम्बुद्वीपस्य भारते ।
प्राणान्यासं विना देवि न जपेत् साधकः क्वचित् ।
वैष्णवेषु च मन्त्रेषु शैवेषु शक्तिमन्त्रेषु ।
गणेशसौरमन्त्रे च प्राणान्यासं प्रशस्यते ।
किं तस्य जपपूजासु होमादिषु च किं प्रिये ।
प्राणतत्वं महेशानि यो जानाति स पूजकः ।
प्राणतत्वं विना देवि देहन्यासं करोति यः ।
स भ्रष्टः स च पापिष्ठो रौरवं नरकं व्रजेत् ।
आलोक्य तन्मुखं देवि सूर्यदर्शनमाचरेत् ।।

।। इति कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे सप्तमः पटलः ।।

अष्टम पटल

श्री महादेव उवाच :

एतत्ते कथितं भद्रे रहस्यं परमं तु यत ।
तन्त्रोक्तं सर्वतन्त्रेषु मातृकायाः पृथक् पृथक् ।
पञ्चाशद्वर्णसंकेतं पञ्चाशत्तत्त्वमुत्तमं ।
सर्वदेवमयं तत्त्वं सर्वज्ञानमयं तथा ।
बिन्दुतत्वमयं देवि अहं तत्वमयं तथा ।
सर्वशक्तिमयं तत्त्वं सर्वप्राणमयं तथा ।

गर्भतत्वमयं देवि केवलं कलिका तथा ।
कुसुमस्य यदा देवि कलिकां गन्धसंयुतां ।
अदृश्यं सर्वभूतानां तथा गन्धं शुचिस्मिते ।
पुष्पस्य कलिकामध्ये यथा ज्योतिः प्रदीप्यते ।
तथैव कलिकावीजे नवतत्वं च विद्यते ।
कोटिविद्युत्प्रतीकाशां मातृकां प्रणमाम्यहं ।
निरावाधां निर्गुणां च गुणानां गुणमातृका ।
माता सा सर्वविद्यानां सर्वागमप्रतिष्ठिता ।
सर्वासां वेदविद्यानां ब्रह्माण्डानां च पार्वति ।
माता सा गीयते देवि पंचाशन्मातृका च सा ।
मन्त्रतत्वं च विद्यां च सर्ववर्णविनिश्चयम् ।
पंचाशद्युवतीरूपा मातृका शवमव्यया ।
मातृका परमेशानि काली साक्षान्न संशयः ।
कुतो ब्रह्मा कुतो विष्णुः कुतो रुद्रश्च ईश्वरः ।
सदाशिवः कुतो देवि ते सर्वे शववत् प्रिये ।
शववत् सर्वदेवं च ब्रह्माण्डं शववत् सदा ।
अतएव वरारोहे विष्णुमन्त्रं यथा तथा ।
शिवमन्त्रं यथा देवि गणेशं सौरमेव च ।
शक्तिमन्त्रं च विद्यां च पंचाशद् युवतीमयं ।
पुराणं च तथा वेदं स्मृतिशास्त्रं तथैव च ।
एतत्तत्वं वरारोहे युवतीरूपमद्भुतम् ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
ते सर्वे चंचलापाङ्गि मातृका जायते प्रिये ।
समस्तजननी देवी मातृकाजननी परा ।
कटाक्षलक्षसंयुक्ता महाशक्तिः प्रगीयते ।
मातृकावर्णरहितं ब्रह्माण्डं शववत् प्रिये ।

गीतं वाद्यं श्रुति नाट्यं आलापं वरवर्णिन ।
सर्वा हि युवतीरूपं ध्यानमार्गे प्रतिष्ठितं ।
एतत्ते कथितं देवि कालिकावीजमुत्तमं ।
उभयोः सङ्गमं देवि प्रफुल्लं भवति प्रिये ।
बहवः संगमे देवि प्रफुल्लं मोक्षमव्ययं ।
यत्र मन्त्रेषु विद्यासु प्रफुल्लं भवति ध्रुवं ।
प्रफुल्लं शृणु चार्वाङ्गि जपयज्ञं समाचरेत् ।
प्रफुल्लरहितं देवि विद्यामन्त्रं यदि प्रिये ।
केवलं कालिकाबीजं वर्णैर्वर्णैः पृथक्-पृथक् ।
ध्यात्वा सिद्धिमवाप्नोति नान्यथा सुरपूजिते ।
प्रफुल्लात् कालिकाद्वापि कृष्णादीन् जायते ध्रुवं ।
युवती या समाख्याता सा महाकुण्डली परा ।
वर्णारूपमयी देवी कुण्डली परदेवता ।
पञ्चाशद्वर्णतत्वं च विद्यामन्त्रं जपेत्तु यः ।
सर्वं हि विफलं तस्य शववत् तज्जपं भवेत् ।
चैतन्यरहितं देवि तज्जपं शवमेव तत् ।
ज्ञात्वा प्रणम्य कुर्वीत जपपूजादिकं प्रिये ।
हरिर्हि निर्गुणः साक्षात् सगुणा परकुण्डली ।
तस्मात्तु युवतीदेहात हरेरुत्पत्तिरेव च ।
सर्वासां देवदेवीनां बीजं जन्मस्थलं सदा ।
बीजात्तु जायते ब्रह्मा शून्यरूपी सनातनः ।
अतएव महेशानि ब्रह्मणः कारणं परा ।
ज्ञात्वा तन्त्रमिदं देवि जप-पूजां करोति यः ।
प्राणन्यासविधिं कृत्वा जपपूजां करोति यः ।
स शिवः परमब्रह्म स एव पुरुषोत्तमः ।
स एव दिव्यो वीरश्च स एव भैरवः स्वयं ।

स एव धन्यो देवेशि त्रैलोक्ये स चराचरे ।
स सूर्यो देवि पूज्यश्च सद्गुरुश्च न चान्यथा ।
उद्धर्तुं चैव संहर्तुं समर्थः सोपि नान्यथा ।
अज्ञात्वो तन्त्रमेतत्तु जपयज्ञं करोति यः ।
सर्वं तस्य वृथा देवि पशुरेव न संशयः ।
सर्वेषु च गुरुर्देवि शिष्योपि पशुवत सदा ।
श्रुत्वा तस्य मुखे विद्यां मन्त्रं वा नगनन्दिनि ।
सिक्तो भवति चार्वाङ्गि किं तस्य जप-पूजने ।
एवं विधं गुरुं त्यक्त्वा श्रुत्वा पशुमुखात प्रिये ।
पूर्वमन्त्रं परित्यज्य गृह्णीयाद् गणनापरं ।
स भ्रष्टः स च पापिष्ठः कथं मन्त्रमुपास्महे ।
मन्त्रस्य गणनाद्देवि यत पापं प्राप्नुयान्नरः ।
तत् पापं शृणु चार्वाङ्गि नरकं चोत्तरोत्तरं ।
यत् पापं प्राप्नुयाद्देवि स्वयम्भूलिंगचालने ।
तत् पापं कोटिगुणितं गणनाद्देवमन्त्रयोः ।
तस्मात्तु गणनां देवि वर्जयेन्मतिमान्नरः ।
त्यक्त्वा शैववैष्णवेषु सौरे गाणपतौ तथा ।
अन्यत् सर्वासु विद्यासु गणनां वर्जयेन्नरः ॥
॥ इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादेऽष्टमः पटलः ॥

नवम पटलः

श्री महादेव उवाच :

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि रहस्यं गुह्यमुत्तमं ।
यज् ज्ञात्वा साधको याति दुर्लभं ब्रह्ममन्दिरं ।
इडया पूरयेद्वायुं सुषुम्नान्तर्गतं ततः ।
रेचयेत् पिंगलामार्गे प्राणायामक्रमं प्रिये ।

अनुलोमेन चार्वङ्गि मातृकां युवतीं स्मरेत् ।
पञ्चाशन्मातृकावर्णं साविन्दुं नादसंयुतं ।
उच्चार्य पूरकेनैव ततः इष्टं समुच्चरेत् ।
ततस्तु मातृकावर्णं विलोमेन जपेत प्रिये ।
सुषुम्ना-मध्यदेशे तु चित्रिणी सुवरानने ।
अनुलोम-बिलोमेन मातृकां युवतीं स्मरेत् ।
इष्टमन्त्रं ततो जप्त्वा विलोमं कुरु यत्नतः ।
अनेनैव बिधानेन रेचयेत् पिंगला-पथे ।
एव द्वादशधा कृत्वा प्रत्यहं वरर्वाणिनि ।
त्रिसन्ध्यां चञ्चलापाङ्गि यः कुर्यात् कमलानने ।
जीवन्यासं भवेत्तस्य मन्त्रसिद्धिश्च नान्यथा ।
एकधा वा महेशानि कलौ संख्या चतुर्गुणा ।
प्रत्यहं दशधा कृत्वा शिवतुल्यो भवेन्नरः ।
॥ इति श्रीकामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे नवमः पटलः ॥

दशम पटलः

श्री महादेव उवाच :

ललाटतत्वं चार्वङ्गि अकारं सर्वदा प्रिये ।
आकारं मुखतत्वं तु शृणुष्व वरवर्णिनि ।
इकारं दक्षनेत्रञ्च ईकारं वामनेत्रके ।
उकारं दक्षकर्णे स्यादूकारं वामकर्णके ।
ऋकारं दक्षनासा च ॠकारं वामनासके ।
लृकारं दक्षगण्डं स्यात् लॄकारं वामगण्डकं ।
एकारं अधरं तत्वं ऐकारं ओष्ठ एव च ।
ओकारं ऊर्ध्वदस्तं स्यात् औकारश्चाधदन्तकम् ।

अंकारं शिरसस्तत्त्वं अ:कारं मुखमण्डलम् ।
ककारादि पञ्चतत्त्वं दक्षबाहो प्रशस्यते ।
वामबाहो चकारादि पञ्चतत्त्वं च तिष्ठति ।
दक्षपादे टकारादि पञ्चतत्त्वं वरानने ।
तकारादि पञ्चतत्त्वं वामपादे प्रशस्यते ।
पकारं दक्षपार्श्वं च फकारं वामपार्श्वके ।
बकारं पृष्ठतत्त्वञ्च भकारं नाभिरेव च ।
मकारं उदरं तत्त्वं यकारं हृदयं तथा ।
रकारं स्कन्धतत्वञ्च लकारं वाममेव च ।
घाटतत्त्वं बकारञ्च शकारं दक्षबाहुषु ।
वामबाहो षकारञ्च सकारं दक्षपादकम् ।
वामपादं हकारञ्च क्षकारं शिरसोपरि ।
अकारं बीजतत्वं च तकारं प्रणवेन च ।
मकारञ्च सकारञ्च मण्डितं हि तथैव च ।
अहंकार: पकार: स्यात फकारो मनसस्तथा ।
नकारं शब्दतत्त्वञ्च दंधं रूपं प्रशस्यते ।
गकारं पादतत्त्वञ्च छकारोपस्थमेव च ।
उकारं आकाशतत्वञ्च ऊकारं श्रोत्रमेव च ।
त्वक् तत्वं च जकार: स्यात् झकार: पादमेव च ।
ककार: पृथिवीतत्वं खकारो ज्ञानतत्वक: ।
शकारं हृत्पुण्डरीकं षकारं तत्वमण्डलं ।
सकारञ्च तथा चन्द्रं रकारं वह्निमण्डलम् ।
परमेष्टि तथा तत्वं यकारं सुरपूजिते ।
लकारं पृथिवीतत्त्वं हकारञ्च शिरस्तथा ।
षकारं वायुतत्वञ्च ककारं स्वर्गमेव च ।
एतयोर्योगमासाद्य क्षकारं तत्वविग्रहम् ।

तेन अ त म स प फ न द थ ग छ उ ऊ ज
झ क ख श ष स र य ल ह क्ष।

अकारादि-क्षान्तवर्णं तत्वञ्च पञ्चविंशति।
सर्वतत्वमतिगुह्यं परमात्मा सुलोचने।
मातृकाया वरारोहे क्रमान्नामानि संश्रृणु।
ब्रह्माणी चण्डिका रौद्री गौरीन्द्राणी तथैव च।
कौमारी वैष्णवी दुर्गा तथैव नारसिंहिका।
कालिका मुण्डमाला च शिवदूती तथा परा।
वाराही कौशिकी चैव तथा माहेश्वरी प्रिया।
शङ्करी च जयन्ती च मङ्गला कलिमर्द्दिनी।
पालिका चैव मेधा च शिवरूपा च शाम्भवी।
भीमा शान्ता च उग्रा च भ्रामरी रुद्ररूपिणी।
अम्बिका बहुरूपा च क्षेमा क्षेमङ्करी तथा।
धात्रीरूपा स्वधा स्वाहा तथैव वह्निरूपिणी।
अपर्णा च तथा माया घोररूपा प्रियम्वदा।
ब्रह्माण्डवाणी ब्राह्मी च पञ्चाशन्मातृका स्मृता।
इत्येतत् कथितं सम्यक् केवलं तव भक्तितः।
एतास्तु मातृकादेव्या ब्रह्माण्डं सचराचरम्।
व्याप्य तिष्ठति चार्वङ्गि नानामूर्त्तिधराव्यया।
शक्तिमन्त्रे बिष्णुमंत्रे शैवे सौरे च पार्वति।
अन्यत् सर्वेषु मन्त्रेषु गणेशे वरवर्णिनि।
मातृका युवतीरूपा मन्त्रविग्रहरूपिणी।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
ते सर्वे चञ्चलापाङ्गि निश्चलाश्च निरिन्द्रियाः।
देवादीनां बरारोहे मन्त्रं नास्ति कदाचन।

शब्दब्रह्म यदा याति मन्त्रं तन्त्रं तदा भवेत् ।
पञ्चाशत युवती सर्वा शब्दब्रह्मस्वरूपिणी ।
ब्रह्मण: कारणं नास्ति प्रकृतेरन्ति भाविनि ।
प्रकृतेया वरारोहे सा दीक्षा सर्वसम्मता ।
दीक्षायां चञ्चलापाङ्गि प्रशस्ता युवती कला ।
पञ्चाशन्मातृका या सा युवती परिगीयते ।
युवतीरहितं देवि कुतो विद्यां कुतो मनुम् ।
निर्गुणां परम ब्रह्म प्रधाना युवतीगण: ।।

।। इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे दशम: पटल: ।।

एकादश पटल:

श्री शिव उवाच :

यथा ज्ञानं चंद्रसूर्यस्तथा मन्त्रे प्रतिष्ठिता ।
देवीनां ज्योतिष: पुञ्जो वर्त्तन्ते प्रकृते: कला: ।
अथान्तरात्मा परमं ज्ञानात्मा सुवरानने ।
वर्त्तन्ते युवतीरूपा: षोडशप्रकृति: परा: ।
प्रकृति हि बिना देवि ज्ञात्वा ब्रह्मा सनातन: ।
अतएव बरारोहे स एव श्रीसदाशिव: ।
जाग्रतस्वप्नेषु मूर्तिर्या तुरीया वरवर्णिनि ।
तास्ता सर्वा वरारोहे युवती परमा परा ।
कार्यकारणकाले च गणनीया वरानने ।
शून्यात् शून्यं परं शून्यं शून्यरूपं निरञ्जनम् ।
कोटिसूर्यप्रतीकाशं निर्मलं ज्ञानमुत्तमम् ।
हृदि भावय चार्वङ्गि तेज:पुञ्जं महाप्रभम् ।
दलिताञ्जनं पुञ्जाभं वर्णराजं वरानने ।

त्रिभंगललिताकारं चारुचूडाविराजितम् ।
शिखिपुच्छयुतं चूडं भ्रमरैः शोभितं परम् ।
पीतांशुकपरीधानं बनमाला विभूषितम् ।
रत्नकुण्डलसंयुक्तं स्फुरद्गण्डमनोहरम् ।
कदम्बकुसुमोपेतं श्रवणं जनमोहितम् ।
श्रीवत्सकौस्तुभोद्दीप्तं आजानुबाहुराजितम् ।
आरक्तनयनद्वन्द्वं कोटिविद्युत्समद्युतिम् ।
आरक्तचरणद्वन्दं नूपुरारावसंयुतम् ।
आरक्त-करतल-स्वच्छं गुञ्जमाला-विराजितम् ।
शब्दब्रह्ममयं विष्णुं ईकारं शब्दजल्पितम् ।
एवं रूपं समुत्पन्नं हृदि मध्ये बरानने ।
जायते कामबीजात्त् शून्यमध्ये सुलोचने ।
शून्यमध्ये स्थिता देवि कामबीजस्वरूपिणी ।
लकारसंयुता या सा कृष्णमाता प्रगीयते ।
सर्वेषु विष्णुमंत्रेषु कामबीजं परात्परं ।
हृदि शून्ये महेशानि विष्णोमन्त्रं जपेत्प्रिये ।
ततो वै कामबीजात्तु जायते विष्णुविग्रहं ।
अतः काममयं विष्णुं हृदि भावय पार्वति ।
कामिनी या महेशानि विष्णुमाता प्रगीयते ।
अतो विष्णुमातृवर्णं वर्णराजमवाप्नुयात् ।
ककारः कामिनी साक्षात् लकारः पृथिवीश्वरि ।
रतिस्तु मर्द्दिनी साक्षात् नादस्तु योनिरूपिणी ।
बिन्दुःकुण्डलिनीरूपं शिवशक्तिमयं प्रिये ।
इदं बीजं महेशानि विष्णुमाता पराक्षरा ।
निरक्षरो विष्णुदेवः अक्षराज्जायते ध्रुवम् ।
अतएव वरारोहे ब्रम्हणः कारणं परा ।

क्लींकारबीजरूपा या सापरा परिगीयते ।
परात्परतरा सापि वह्निमण्डलसंयुता ।
कामिनी सा महेशानि पृथिवी तस्य आसनम् ।
कदाचित् पृथिवीमध्ये कदाचित् वह्निमण्डले ।
वसते कामिनी देवी नादबिन्दुसमन्विता ।
जन्म लब्धबा महाविष्णु: कूर्चबीजं जपेत् प्रिये ।
अनेन प्रजपेन्मंत्रं हुकारं वरवर्णिनि ।
विष्णोर्विग्रहने तत्तु स्वयं प्रकृति मूर्त्तिमान् ।
प्रकृति: परमाराध्या देवानां नगनन्दिनि ।
हुंकारं परमाश्चर्यं बीजरत्नं शृणु प्रिये ।
षष्ठ स्वर: परिचयो वियद् बीजं शशिप्रभम् ।
तस्योपरि वरारोहे सदा बिन्दं विभावय ।
काम-मन्मथ-कन्दर्प-अक्षर-ध्वजसंज्ञक: ।
मीनकेतुर्महेशानि पञ्चबीजं प्रकीर्तितम् ।
माया कूर्चं वधूबीजं लक्ष्मीबीजं च पार्वति ।
प्रणवश्च महेशानि स्वयं चतुर्दशं तथा ।
संपिण्डवत्तथा देवि येषु यासु च विद्यते ।
तं मन्त्रं अतिसिद्धं स्यात् पर: प्रकृतिरूपिणी ।
एवं बीजं सकृत ध्यात्वा सर्वासां भवति प्रिये ।
तन्मत्रं प्रजपेद्देवि बीजध्यानं पुन: प्रिये ।
एवं हि दशधा कृत्वा मंत्राणां बीजसाधनम् ।
तस्मात् बीजात् समाकृष्य देवतारूपमुद्भवम् ।
देवध्यानं तत: कृत्वा इष्टमंत्रं ततो जपेत् ।
पुनर्ध्यानं देवताया: पुनर्जापं कुरु प्रिये ।

एवं हि दशधा कृत्वा देवादि नाम एव च ।
ततः सप्तच्छदां जप्त्वा कुल्लुकां दशधा जपेत् ।
आद्यन्ते सेतुमंत्रं च दत्वा अष्टोत्तरं जपेत् ।
तन्मंत्रं प्रजपेद्देवि एवं सिद्धिमुपालभे ।

।। इति श्रीकामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे एकादशः पटलः ।।

द्वादश पटल

श्री महादेव उवाच :

अपरेकं प्रवक्ष्यामि रहस्यमतिगोपनम् ।
अकृत्वा ध्यानतत्वं च अष्टतत्वं तथैव च ।
अकृत्वा व्यर्थतां याति नात्र कार्या विचारणा ।
ततो जीवत्वमाप्नोति मंत्रं सिध्यति तत्क्षणात ।
अथवा परमेशानि मन्त्रवर्ण यथा तथा ।
प्रणवं पुटितं कृत्वा अनुलोम-विलोमतः ।
तदैव परमेशानि जीवत्वं प्राप्यते मनुः ।
एकधा वा त्रिधा कृत्वा यदि कुर्याद्वरानने ।
तदा सिद्धिमवाप्नोति नान्यथा सुरपूजिते ।
जीवत्वं हि बिना देवि यं मंत्रं प्रजपेत् सुधीः ।
तज्जपं चञ्चलापाङ्गि शवमेव न संशयः ।
सदा निद्रातुरो मन्त्री जीवहीनस्य पार्वति ।
……(श्रीं क्लीं ह्रीं हुं स्त्रीं श्रीं ॐ)……
कथं सिद्धिमवाप्नोति निद्रायां वरवर्णिनि ।
जीवन्यासेन चार्वङ्गि निद्राभंगो भवेद्ध्रुवम् ।

बिन्दुतत्त्वं प्रजप्याथ ज्ञानतत्वं च सुन्दरि ।
प्राणतत्वं च चार्वङ्गि देवतत्वं तथैव च ।
जपतत्वं मन्त्रतत्वं ध्यानतत्वं सुलोचने ।
अक्षरे अक्षरे देवि अज्ञात्वा प्रजपेद्यदि ।
संयोगं यद्भवेद्योगं प्रफुल्लः तदुदाहृतम् ।
केवलं कालिकाबीजं तद्वर्णं सुरपूजिते ।
आगतं ममवक्त्राद्य उद्गतं तन्मुखे सदा ।
मतं श्रीवासुदेवस्य इति ते कथितं प्रिये ।
एतन्मन्त्रं महागुह्यं ईशानमुखसंयुतम् ।
एतन्मन्त्रप्रभावाद्धि कालकूटं पिवाम्यहम् ।
एतास्तु मातृकावर्णाः सुषुम्नामध्यवर्तिनी ।
एता वर्णा वरारोहे महायोगमयो सदा ।
अक्षरं हि बिना देवि न योगं जायते मम ।
योगमार्गे भक्तिमार्गे मुक्तिमार्गे च सुन्दरि ।
ध्यानमार्गे तु पूजायां जपमार्गे तथैव च ।
एतास्तु युदतीवर्णा कार्यकारणरूपिणी ।।
एतन्मन्त्रमविज्ञाय न जप्तव्यं कदाचन ।
एतन्मन्त्रमविज्ञाय पुराणं संहितां स्मृतिम् ।
पठेन्नरकमाप्नोति पितृभिः सह नान्यथा ।
सर्वधर्मेषु यद्धर्म सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
सर्वदानेषु तीर्थेषु यत्फलं प्राप्नुयाद्द्विजः ।
तत्फलं समवाप्नोति वर्णानां ध्यानमात्रतः ।
वर्णध्यानमविज्ञाय वर्णतत्वं तथैव च ।
पुराणो वाचको यस्तु ध्रुवं नरकमाप्नुयात् ।
कोटिवंशान् समासाद्य स द्विजो नरकं ब्रजेत् ।

यथा वक्ता तथा श्रोता द्वयोरपि फलं समं ।
कथमज्ञानतो मूर्खोऽज्ञात्वा वर्ण विनिर्णयं ।
पुराणानि पठित्वा वै निश्चयं नरकं व्रजेत् ।
निश्चयं च महेशानि दारिद्र्यं घोरमाप्नुयात् ।
निश्चयं रोगमाप्नोति जम्बुद्वीपस्य भारते ।
स स्यात् सनातनो देवो वाणी त्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वासां युवतीनां च भवानी चाधिदेवता ।
ध्यायेद्देवीं महामायां मातृकां जगदीश्वरीम् ।
रक्तपद्मासनगतां रक्तांशुक-परिष्कृताम् ।
रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं रक्तवस्त्रोत्तरीयिनीम् ।
रक्तबिम्बफलाभासां राकाचन्द्रमुखीं पराम् ।
भ्रमद्भ्रमरलीलाभनयनत्रय-राजिताम् ।
कटाक्षशतसंयुक्तां चारुचूडा-विनोदिनीम् ।
रक्तालङ्कार-सुभगां त्रिभंग-ललिताकृतिम् ।
हास्ययुक्तां प्रफुल्लास्यां ज्योत्स्ना-जाल-समच्छविम् ।
मृणालसदृशाकार-बाहुबल्ली-बिराजिताम् ।
कञ्चुलसंयुतां रम्यां कदम्बकोरकस्तनीम् ।
नखानां किरणोद्योतैभुवनं परिमोहयन ।
एवं ध्यात्वा महामायां भवानीं शिवमोहिनीम् ।
अपरैकं प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतम् ।
हृत्पद्म-द्वादशदले वराटे परिभावयेत ।
यस्य देवस्य यद्बीजं प्रफुल्ल कलिकां तथा ।
ध्यात्वा देवीं यथाशक्त्या तस्मादाविर्भवेत् स्वयम् ।
शक्तिर्वा विष्णुदेवो वा शिवो वा सूर्य एव वा ।
बीजादुत्पाद्यते देवि परंब्रह्म निरञ्जनम् ।
बीजध्यानं बिना देवि कथमुत्पद्यते हरिः ।

सदाशिवो महादेव: कथमुत्पद्यते स्वयम् ।
सदाशिवस्य जननी बीजरूपा सनातनी ।
इति यो वेत्ति स ज्ञानी स एव वीरसत्तमः ।
गुरुर्योग्यः स एव स्यात् स एव परमः शिवः ॥
सर्वेषां चैव बीजानामेवं ध्यानं समाचरेत् ।
शुक्लविद्युत्समाकारां नयनत्रयधारिणीम् ।
कटाक्षविशिखैर्युक्तां चतुर्बाहुसमन्विताम् ।
त्रिभङ्ग-ललिताकारां चारुचूडा-विराजिताम् ।
पुण्डरीकोपविष्टाञ्च राकाचन्द्रमुखीं पराम् ।
नानागन्ध-प्रलिप्ताङ्गीं सुगन्धिमाल्यसंस्कृताम् ।
नानाभरण-लिप्ताङ्गीं मेघांशुकपरिष्कृताम् ।
वीणावाद्यविनोदेन उल्लसन्तीं जगत्त्रयम् ।
आद्यां ब्रह्ममयीं देवीमष्टबीजस्वरूपिणीम् ।
ब्रह्माद्यां देवता या स्याच्चरणे पतिता भुवि ।
भजेऽहं मातृकादेवीं वेदमातां सनातनीम् ।
अनेन विधिना ध्यात्वा सर्वासां भवति प्रिये ।
बीजमेतन्महेशानि प्रथमं दशधा जपेत् ।
तन्मन्त्रं चञ्चलापांगि आनन्दकूटने स्थितम् ।
ततो ध्यात्वा पुनर्जप्त्वा दशधा वरवर्णिनि ।
एतत्तत्वमविज्ञाय प्रजपेद्यदि पार्वति ।
सर्वपापमयं सोऽपि भवेत् शूकरवद्द्विजः ।
तत्वमेतन्महागुह्यं योगमार्गे स्थितं सदा ।
तव भक्त्या मयाख्यातं अतिगुह्यं सुलोचने ।
तन्त्राणां सारमेतत्तु सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
स योगी योगवेत्ता च योगात्मा योगनायकः ।
योगाचार्यो योगमाया योगानन्दप्रदायकः ॥
॥ इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे द्वादशः पटलः ॥

त्रयोदश पटलः

श्री महादेव उवाच :

अधुना संप्रवक्ष्यामि आनन्दपटलं प्रिये ।
शृणु तत्वं प्रवक्ष्यामि सुन्दरं सुमनोहरम् ।
हृत्पद्मे द्वादशदले विद्युत्कोटि-समन्विते ।
भावयेन्मन्त्रबीजानि यस्य या इष्टदेवता ।
भावयेत् प्रथमं बीजं वराटोपरि पार्वति ।
अन्यानि सर्वबीजानि पत्रमध्ये पृथक्-पृथक् ।
एवं हि दशधा जप्त्वा··बीजं जपेत्प्रिये ।
दशधा दशधा देवि प्रजपेद्बीजमुत्तमम् ।
ततस्तु बीजमध्ये तु ध्यायेदिष्टं सुलोचने ।
तस्माद्बीजाद्वरारोहे देवता जायते ध्रुवम् ।
तस्य देवस्य चार्वङ्गि निरीक्ष्य देह-सुन्दरम् ।
चरणात् केश-पर्यन्तं नानावेषमयं प्रिये ।
निरीक्ष्य मनसा भक्त्या पुनर्ध्यानं समाचरेत् ।
ततस्तु प्रजपेद्बीजं वर्णानन्दस्वरूपिणीम् ।
प्रजपेत् प्रथमं बीजं बीजध्यानं ततः परम् ।
एतस्तु प्रथम बीजसाधनं दुर्लभं प्रिये ।।
सर्वासां बीजवर्णानां यदि जानाति साधकः ।
ध्यान परमकल्याणां वर्णे वर्णे पृथक् पृथक् ।
अज्ञात्वा चञ्चलापाङ्गि मातृकाध्यानमाचरेत् ।
तदेव सहसा देवि सर्वासां जायते ध्रुवम् ।
यस्य मन्त्रस्य यद्वर्णं तस्य ध्यानं पृथक् पृथक् ।
बीजात्तु जायते विष्णुरवतारवरः प्रिये ।
बीजात्तु जायते रामो बीजात् कृष्णः प्रजायते ।

स्थावरं जङ्गमं देवि सर्वं बीजात् प्रजायते ।
आज्ञाचक्रे विशुद्धौ च मूलाधारे तथैव च ।
स्वाधिष्ठाने ततो देवि मणिपूरे च पार्वति ।
अनेन विधिना देवि कुर्यात् साधक-सत्तमः ।
प्रत्यह कुरुते यस्तु स सिद्धः शिव एव सः ।
प्रत्यहं चञ्चलापाङ्गि षट्चक्रं भ्रामयेत्तु यः ।
साधनाच्च महेशानि तस्मात् कुसुमतत् प्रिये ।
नित्यं हृदये कुर्यादवश्यं वद किं प्रिये ।
बीजस्य चञ्चलापाङ्गि ध्यानं मन्त्रं पृथक्-पृथक् ।।
साक्षात् श्रीप्रकृतिर्देवि बीजरूपा सनातनी ।
सनातनस्य जननी सर्ववर्णमयो प्रिये ।
जपस्य प्रथमे काले बीजस्य तत्वमुच्चरेत् ।
ततस्तु प्रजपेन्मन्त्रं स-सेतुं वरवर्णिनि ।
बीजतत्वमविज्ञाय प्रजपेद्यदि कोटिधा ।
सर्वं तस्य वृथा देवि अरण्ये रोदनं यथा ।
तत्वत्रयं प्रवक्ष्यामि मन्त्राणां श्रृणु सुन्दरि ।
विभाव्य नाभिपद्मेषु वायुबीजं स-बिन्दुकम् ।
मन्त्रस्य प्रथमं वायुबीजं मध्ये विचिन्त्य वै ।
ध्यात्वा बीजं महेशानि प्रजपेद् बीजमुत्तमम् ।
दशधा प्रजपेद् बीजं दशधा बीजमेव च ।
दशतत्वयुतं मन्त्रं तदैव सहसा भवेत् ।
संशोष्य बीजं चार्वङ्गि वह्निबीजे विचिन्त्य वै ।
हृत्पद्मे वह्निमध्ये तु ध्यात्वा बीजं हुताशनम् ।
दशधा प्रजपेन्मन्त्रं द था ध्यानमेव च ।
विंशतत्वयुतं मन्त्रं तदैव सहसा भवेत् ।

मातृस्वरात्ततो देवि गलितामृतधारया ।
आप्लाव्य बीजं चार्वङ्गि सर्वावयवसंयुतम् ।
तदैव सहसा कृत्वा ललाटे बरपाणये ।
धवलस्य तु मध्ये तु तद्बीजं भावयेत्प्रिये ।
दशधा च जपित्वा वै वीरश्च दशधा स्मरेत् ।
तदामृतमयं बीजं सहसा भवति प्रिये ।
विष्णुमन्त्रेषु देवेशि चन्द्रबीजेषु भावयेत् ।
अन्यत् सर्वेषु मन्त्रेषु भावयेद्वरपाणये ।
त्रिशतत्वयुतं मन्त्रं तदैव भवति प्रिये ।
तत्वातीतं स्वधातीतं वाचा विद्यां जपेत्प्रिये ।
अनेन विधिहीनश्च तज्जपं विफलं सदा ।
तत्त्वहीनं जपेद्यस्तु विफलं सततं प्रिये ।
शोषणं दहनं देवि अमृतं ज्ञानसंज्ञकम् ।
एतत्तत्वमयं भद्रे शीघ्रसिद्धिप्रदायकम् ।
यो जपेत्तत्त्वरहितं तस्य हानिः पदे पदे ।
तस्मात्तत्त्वं शुभाराध्य तस्मान्मन्त्रं जपेत्सुधीः ।
अनेन विधिना देवि सर्वतत्त्वमयं मनुः ।
कृष्णमन्त्रेषु रामेषु अवतार-वरेषु च ।
सौर-गाणपतौ देवि शक्तिमन्त्रे स्वयं प्रिये ।
शिवमन्त्रेषु चार्वङ्गि अन्यतन्त्रे तथैव च ।
त्रिशत्तत्त्वयुतं कृत्वा मन्त्रबीजं सुलोचने ।
एवमेव विधानेन बीजे जीवत्वमाप्नुयात् ।
तस्मात् बीजाद्वरारोहे रामकृष्णादयश्च ये ।
उत्पद्यन्ते वरारोहे नान्यथा बरवर्णिनि ।
एतन्मन्त्रं सकृत् कृत्वा प्रजपेदनिशं मनुम् ।

प्रजपेदनिशं विद्यां शौचाशौचं न चाचरेत् ।
मन्त्रे चाक्षरबुद्धिः स्याद् गुरौ तु मानवः प्रिये ।
देवतायाः वरारोहे प्रतिमा-बुद्धिस्तु जायते ।
किं तस्य जपपूजायां सर्वं व्यर्थं कदर्थनम् ।
इति ते कथितं देवि वीजतत्त्वं सु-गोपनम् ।
कस्यचिन्नैव वक्तव्यं यदि कल्याणमिच्छति ।
एतज्ज्ञानमविज्ञातः स कथं गुरुतां व्रजेत् ॥

॥ इति कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसम्वादे त्रयोदशः पटलः ॥

चतुर्दश पटलः

श्री देव्युवाच :

देवदेव महादेव संसारार्णव-तारक ।
कृपया कथयेशान वकार-तत्त्वमुत्तमम् ॥

श्री महादेव उवाच :

पूर्वोक्तं चञ्चलापाङ्गि गायत्रीतत्त्वमुत्तमं ।
गायत्री या वरारोहे ! चतुर्वकार-संयुता ।
कान्तं शेष-वकारं च वरुणं हृदि भावय ।
यवर्गं वायुबीजं च हृदि भावय पार्वति ।
यकारं यस्तु देवेशि वायुबीजं तदुच्यते ।
यकारस्य चतुर्थो यो वारुणं बीजकीर्तितम् ।
यकारञ्च वायुबीजं मयैतन्निश्चितं प्रिये ।
सर्वविद्यासु मन्त्रेषु वरुणं भावय प्रिये ।
वह्निजाया-युतानां च यवर्गं हृदि भावय ।
गायत्री-संहिता देवि पापोच्चाटन-कर्मणि ।

पूर्वोक्तध्यानमार्गेण भावना परिकीर्त्तिता ।
ध्यानभेदेन चार्वङ्गि वकारं भावय प्रिये ।
अधुना संप्रवक्ष्यामि ककार-ध्यानमुत्तमम् ।
विशेषं शृणु वक्ष्यामि ककारस्याति-दुर्लभम् ।
यन्नोक्तमानन्दपटले अधुना कथयामि ते ।
तद्धयात्वा साधको याति दुर्लभं मोक्षमव्ययम् ।
येन ध्यानप्रकाशेन मन्त्रं तन्त्रञ्च सिध्यति ।
एवं तद्धयानमात्रेण शिवतुल्यो भवेन्नरः ।
ककार-ध्यानमात्रेण सर्ववर्णं हि सिध्यति ।
ककारभावनाच्चैव सर्वासां भावना भवेत् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन ककारं हृदि भावय ।।
ॐ प्रातरादित्यसङ्काशां सिंहप्रेतोपरिस्थिताम् ।
रक्तपद्मोपविष्टां च रक्तवस्त्रपरीधृताम् ।
चतुर्भुजां त्रिनेत्राञ्च पञ्चबाण-धर्नुधराम् ।
वरदाभयदात्रीञ्च पीनतुङ्गपयोधराम् ।
मृणालसदृशाकारचतुर्बाहु परीवृताम् ।
शङ्खकङ्कणकेयूरअङ्गदैः परिशोभिताम् ।
सुगन्धि-मल्लिकाहारैः कबरीमध्यशोभिताम् ।
त्रिभङ्गललिताकार-चारुचूडाविराजिताम् ।
शिखिपुच्छयुतां चूडां नानारत्नसमन्विताम् ।
ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां मुक्तारञ्जितनासिकाम् ।
माणिक्यकिरणोद्योतदन्तपंक्ति विराजिताम् ।
पूर्णचन्द्रसमाभासनख पंक्तिमनुत्तमाम् ।
स्वर्णसूत्रयुतं हार-रत्न-चारुविनिर्मिताम् ।
कटाक्षविशिखोद्दीप्त-भ्रूलतापरिशोभितां ।

तीर्थत्रययुतां रम्यां नयनत्रयराजिताम् ।
रामरभ्भासमाकार ऊरुद्वयविराजिताम् ।
वहल्लतासु संयुक्तरत्नकिञ्जलिशोभिताम् ।
अष्टवर्गैसेविताश्च अष्टवर्गैः प्रपूजिताम् ।
सिन्दूरतिलकालक्तामञ्जनाङ्कित लोचनाम् ।
ललाटपट्टिकाशुभ्रअर्द्धचन्द्र परिधृताम् ।
ब्रह्मादिदेवतावृन्दैः शिरसा धार्यते च याम् ।
क्रिमाख्यां कामिनीं साक्षात् ककारवररूपिणीम् ॥

एवं ध्यात्वा वरारोहे प्रजपेद्यदि साधकः ।
तदैव सहसा सिद्धिर्जायते तस्य सुन्दरि ।
वर्णज्ञानं विना देवि न जपेत् पाशवः क्वचित ।
किं तस्य ध्यानपूजायां पुरश्चर्याशतं शतम् ।
किं तस्य जपहोमेन चन्द्रसूर्यस्य पर्वणि ।
वर्णज्ञानं विना देवि वैष्णवः शैव एव वा ।
एकदानोच्चरेद्देवि अज्ञात्वा वर्णदीपिनीम् ।
सर्वासां मन्त्रविद्यानां दीपनी या प्रकीर्त्तिता ।
सर्वेषां शास्त्र-मध्ये तु प्रशस्ता वर्णदीपिनी ।
शक्तिमन्त्रे तथा सौरे गणेशमचर्यते सदा ।
ज्ञात्वा तन्त्रं प्रकुर्वीत दीक्षां पूजां शुचिस्मिते ।

श्री महादेव उवाच :

रहस्यं तत्र वक्ष्यामि अत्यन्तगोपनं शृणु ।
यत्कृत्वा साधको याति परमं पदमुत्तमम् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा चन्दनेन सुगन्धिना ।
कर्पूरागुरुकस्तूरीरोचनाकुङ्कुमैः प्रिये ।
तिलकं धारयेत् यत्नादेकीकृत्य मनोहरम् ।

त्रिकोणं सुन्दरं स्वच्छं तिलकं जनमोहनम् ।
एकीकृत्य पृथक् थापि नानावस्तुषु कारयेत् ।
राज्यार्थी रक्तवर्णेन मोक्षार्थी श्वेतचन्दनैः ।
वश्ये रोचनया देवि तिलकं कारयेत सुधीः ।
मोहने चञ्चलापांगि अगुरु-कुङ्कुमादिना ।
कृष्णगन्धं वरारोहे शत्रोर्मारण-कर्मणि ।
ललाटे बाहुमूले च तथा स्कन्धद्वयेषु च ।
हृत्पद्म-पाश्वयुगले पृष्ठे नाभौ च सुन्दरि ।
ऊरुद्वये गण्डयुग्मे अधः पादद्वयेषु च ।
विलिखेत् यत्नतो देवि ककारवर्णमुत्तमम् ।
तत्र विन्दुयुतं कृत्वा विलिखेद्वरवर्णिनि ।
तदैव सहसा देवि विद्यामन्त्रश्च सिध्यति ।
मोहयेदखिलान् लोकान् वशयेदिष्टदेवताम् ।
इष्टदेवं वशं कृत्वा एकदा प्रजपेद्यदि ।
तत्क्षणात् चञ्चलापांगि देवत्वमुपजायते ।
देवत्वं हि विना देवि कुतः पूजा कुतो जपः ।
अन्यथा प्रेतवत् पूजा वैष्णवे च विशेषतः ।
ललाटे तिलकं कृत्वा रोचनासु शुचिस्मिते ।
तन्मध्ये विलिखेद्वर्णं ककारं सुमनोहरम् ।
सामान्यमेतद् कथितं तिलकं जनमोहनम् ।
एतत्तु तिलकश्चैव वशयेदपि केशवम् ।
जपासनं दशम्यां तु तदारेभ्य च प्रत्यहम् ।
एतद्वर्णमविज्ञाय विषये समुपास्महे ।
स भ्रष्टः स च पापिष्ठः रौरवं नरकं व्रजेत ॥

॥ इति कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे चतुर्दशः पटलः ॥

पञ्चदश पटलः

श्री देव्युवाच :

देवदेव महादेव नीलकण्ठ त्रिलोचन ।
हृत्तत्त्वं कथयेशान यद्यहं तव वल्लभा ।

श्री महादेव उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं परम-दुर्लभं ।
येन विज्ञान-मात्रेण विष्णुः स्याद्वैष्णवः प्रिये ।
हृत्पद्मे द्वादशदले स्वविद्यां भावयेत्सुधीः ।
ककारं भावयेदादौ वराटोपरि पार्वति ।
पत्रे पत्रे ततो देवि स्वविद्यां प्रजपेत्सुधीः ।
मन्त्राणां प्रथमं बीजं ध्यात्वादौ प्रजपेत्सुधीः ।
तस्मान्मन्त्रो ततो देवि जायते देवविग्रहः ।
देवतां च ततो ध्यात्वा तत्रोक्तध्यानवर्मना ।
ध्यानं च त्रिविधं देवि समानफलदायकम् ।
कृत्वा ध्यानत्रयं देवि हृत्पद्मे परमेश्वरि ।
सहस्रदलपद्मान्तः मध्यस्थाने गुरोर्मुखात ।
स्वविद्यां भावयेद्देवि कोटिविद्युत्समाकृति ।
भावयेदनिशं भक्त्या सिद्धो भवति तत्क्षणात ।
बीजात्तु जायते देवि रामकृष्णादयश्च ये ।
ते सर्वे चञ्चलापाङ्गि बीजात्तु जायते ध्रुवम् ।
ज्ञात्वा सनातनं तत्त्वं आनन्दपटले स्थितम् ।
पूजा कार्या च चार्वङ्गि सर्वसिद्धिमयो भवेत् ।
इदं सनातनं तत्त्वं अज्ञात्वा नरकं व्रजेत् ।
शूद्रः शूद्रमुखाच्छ्रुत्वा विद्यां वा मन्त्रमुत्तमम् ।
रौरवं नरकं यं यं तं तमाप्नोति निश्चितम् ।
न शूद्राय मतिं दद्यान्न च शूद्रः कदाचन ।

उभयोर्नरकं देवि कोटिकुलसमाकुलम् ।
अनाचारो द्विजो यस्तु शूद्राणां गुरुरेव सः ।
यदि शूद्रो भवेद्देवि सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
स धर्मे निरतो भूत्वा श्रुत्वा द्विजगुरोर्मुखात् ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोते शीघ्रं देवमवाप्नुयात् ।
यद्देशे विद्यते शूद्रः पातकी मन्त्रविक्रयी ।
तद्देशं पतितं मन्ये तस्य राजा च पातकी ।
स कथं चञ्चलापाङ्गि जिह्वायां प्रजपेन्मनुम् ।
तस्य जिह्वा वरारोहे मूत्रशोणितविड् यथा ।
तन्मुखं मूत्रविट्कूपं अन्नं विष्ठा सम सदा ।
तज्जलं शोणितं साक्षाच्चचाण्डालसमजातिषु ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि सर्वदेवमयानि वै ।
आलोक्य तन्मुखं तीर्थः तत्स्थानं त्यज्य गच्छति ।
तीर्थकोटि पलायन्ते दृष्ट्वा तन्मुखमण्डलम् ।
गङ्गाजलं परित्यज्य द्रुतं स्वस्थानमाप्नुयात् ।
महापातकिनो ये च ब्रह्महत्यादिसंयुताः ।
त्रैलोक्यपावनी गंगा तान्पुनाति न संशयः ।
मन्त्रविक्रयिनः शूद्राः सदा नरकगामिनः ।
कलौ तु भारते वर्षे भविष्यति न संशयः ।
मन्त्रविक्रयिनः सर्वाः व्याघ्रयोनौ प्रजायते ।
तत्संसर्गश्च यो विप्रश्चर्मकार स एव हि ।
चाण्डालसदृशः सोऽपि स एव वर्णसंकरः ।
स्वधर्म-निरतः शूद्रो विद्यामन्त्र शृणोति यः ।
स धन्यः पृथिवी-मध्ये स एव वैष्णवोत्तमः ।
स शाक्तः शिवभक्तश्च गाणेशः सौर एव च ।
एतत्तु कथितं देवि वर्णज्ञानविनिर्णयम् ॥
॥ इति श्रीकामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे पञ्चदशः पटलः ॥

षोडश पटलः

श्री महादेव उवाच :

अपरैकं प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतम् ।
यत् कृत्वा चञ्चलापाङ्गि रावणाद्या निशाचराः ।
अवाप्यमतिवृद्धिं च त्रैलोक्याधिपतिः प्रभुः ।
सांकेतं परमं गुह्यं अक्षराणां पृथक् पृथक् ।
एतत्तत्वं विजानाति हरिर्ब्रह्मा पुरन्दरः ।
पञ्चाशद्वर्णसंकेतं सावधानावधारय ।
अकृत्वा साधको याति रौरवं नरकं व्रजेत् ।
रौरवं नरकं याति पुनरावृत्तिदुर्लभं ।
विशेषं विष्णुमन्त्रेषु कुर्याद्वैष्णवसत्तमः ।
अकृत्वा वैष्णवो याति नरकान् नरकोटिशः ।
मासि मासि वरारोहे शनिभौमदिने प्रिये ।
प्रातःस्नानं समासाद्य कृत्वा सन्ध्यां समाप्य च ।
सूर्यायार्घ्यं ततो दद्यात पादप्रक्षालनाय च ।
यागमण्डपमासाद्य भूतशुद्धिं विधाय च ।
कुर्यान्न्यासं मातृकायाः प्राणायामं ततः परम् ।
न्यासानन्यांस्ततः कुर्यात्तन्त्रमार्गेण पार्वति ।
शुक्लाम्बरधरः स्रग्वी गन्धलिप्तकलेवरः ।
रक्तासनं समासाद्य कुशासनमथापि वा ।
प्रलिप्य ताम्रपात्रेषु सिन्दूरं रक्तचन्दनं ।
विलिख्य मातृकावर्णं ह्यस्मिन् पात्रे पृथक् पृथक् ।
अकारादिक्षुकारान्तं सविन्दुं चन्द्रसंयुतम् ।
महापद्मान्तरस्थानादानीय ब्रह्मवक्त्रकम् ।
वामनासापथेनैव श्वासं पुष्पाञ्जलौ क्षिपेत् ।

तत्पुष्पं चञ्चलापाङ्गि कुर्यात् पुष्पस्य सञ्चयम् ।
ध्यात्वा तु पूजयेद्देवीं क्रमेणैव पृथक् पृथक् ।

गन्धैर्नानाविधैर्देवीं पुष्पैर्नानाविधैस्तथा ।
धूपैर्नानाविधैर्देवि दीपैर्नानाविधैस्तथा ।
नैवेद्यं विविद्यं देवि चतुर्विधमयं तथा ।

दत्वा नाना-फलादीश्च पूजयेत परमेश्वरीम ।
नानापुष्पमयैर्हारैः शुक्रादिगन्धसंयुतम् ।
महापद्मवनान्तस्थ अष्टोत्तरशतं जपेत् ।
प्रजपेत् मातृकावर्णं वर्णे वर्णे पृथक् पृथक् ।

प्रतिपद्मे जपेन्मन्त्रं यस्मिन् पद्मेषु यत् स्थितम् ।
तस्मिन पद्मे वनान्तस्थः स्वविद्यां प्रजपेच्छतम् ।
सुप्रसन्ना मातृका स्यात तदैव सहसा प्रिये ।
अकृत्वा मातृकापूजां मासि मासि वरानने ।

इष्टविद्यां जपेद्यस्तु तस्य हानि श्रृणु प्रिये ।
चित्रानाड़ीगता भूत्वा मातृका जगदीश्वरी ।
सर्वेषां वैष्णवानां च शाक्तानां वरवर्णिनि ।
शैवानां च महेशानि अन्येषां चैव सुन्दरि ।

हरन्ति वैष्णवादीनां नान्यथा वचनं मम ।
प्रशस्ता मातृकापूजा दीक्षाया मत एव हि ।
पुरश्चर्या हि चार्वङ्गि पूजनीया पृथक् पृथक् ।
माता सा सर्वविद्यानां मन्त्राणां च पृथक् पृथक् ।

यस्मादुत्पद्यते विद्या मन्त्रं च सुरवन्दिते ।
तस्मात्तु यत्नतोदेवि तासां पूजा विधीयते ।
नान्यथा निष्फला पूजा सम्वत्सरकृता च या ।
अनेन विधिना देवि पूजयेद् यदि मातृकाम् ।

प्रसन्ना मातृका दे व पुत्रत्वेनानुकल्प्यते।
रहितो मातृकापूजा जपपूजनतत्परः।
तस्य सर्वं महामाया मातृका जगदीश्वरी।
हरन्ति मन्त्रतेजांसि आयुर्विद्या यशो बलम्।
अपरैकं प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतम्।
अनुलोम-विलोमेन कथितं श्रृणु पार्वति।
अनुलोम-विलोमं च तथैव हि महेश्वरि।
सर्वेषां जपयज्ञानां सहसा फलभाग् भवेत्।
सहसा सिद्धिमाप्नोति धर्ममाप्नुयात्।
सहसा अर्थमाप्नोति सहसा मोक्षमाप्नुयात्।
पौर्णमास्याममावास्यां मासि मासि प्रयत्नतः।
यः करोति प्रसन्नात्मा स एव श्रीसदाशिवः।
ज्ञात्वा सन्दीपनीं विद्यां आनन्दपटले स्थितं।
अज्ञात्वा दीपनी विद्यां चतुर्वर्गफलप्रदाम्।
रहस्यमेतदन्यच सर्वं च विफलं व्रजेत्।।
।। इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे षोडशः पटलः ।।

सप्तदश पटल

श्री महादेव उवाच :

एतत्तत्वमविज्ञाय न भावो जायते प्रिये।
न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे च पार्वति।
भावेषु विद्यते देवि भावो मोक्ष-स्वरूपकम्।
दिव्यभावो वीरभावः सदैव सहसा भवेत्।
अन्यथा चञ्चलापाङ्गि पशुभावमयः सदा।

स्वभावेन विना देवि कथं सिद्धिर्भवेत् प्रिये ।
तस्मात् प्रयत्नतो देवि वीरभावमयो भवेत् ।
अनेनैव विधानेन मातृकां पूजयेत्तु यः ।
स एव दिव्यभावः स्याद् वीरभावः स एव हि ।
स धनी स गुणी लोके मातृकां यस्तु पूजयेत् ।
अपरैकं प्रवक्ष्यामि सामान्यं वरवर्णिनि ।
पूर्वोक्तध्यानमाचर्य प्रजपेन्मातृकामनु ।
ककारध्यानमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते ।
जप्त्वा ककारं चार्वङ्गि सर्वासां भवति प्रिये ।
सर्वासां मातृकां जप्त्वा ककारं केवलं च वा ।
ककारं सर्ववर्णानां मूलप्रकृतिरूपिणी ।
तस्मात प्रयत्नतो देवि ककारं पूजयेत् प्रिये ।
प्रत्यहं पूजयेद्देवीं प्रथमं पूजयेत् सुधीः ।
सर्वासां फलमाप्नोति तदा भावमयो भवेत् ।
ककार-पूजनाद् भद्रे सर्वासां पूजनं भवेत् ।
प्रत्यहं कुरुते यस्तु प्रतिमासि वरानने ।
दिव्यवीरः स एव स्यात् सर्वपूजाफल लभेत ।
अकृत्वा चञ्चलापाङ्गि मनसापि च संस्मरेत् ।
सर्वपूजामयः सोऽपि सर्वभावमयः सदा ।
भावतत्त्वमविज्ञाय विष्णुमन्त्रं कथं जपेत् ।
शक्तिमन्त्रं महेशानि स कथं पामरो जपेत् ।
शिवमन्त्रं च सौरं च गाणेशं स कथ जपेत ।
भावतत्त्वं विना देवि प्रजपेद् यदि कोटिधा ।
सर्वं तस्य वृथा देवि नरकं च पदे पदे ।
स कथं चञ्चलापाङ्गि दिव्यवीरगुरुर्भवेत् ।

पशुवत सर्वदा देवि स एव पशुगुरुः प्रियं ।
भावतत्त्वेन रहितः स कथं पञ्चमं यजेत ।
वैष्णवस्तु वरारोहे मकारं पञ्चमं यजेत् ।
देवताया वरारोहे शरीरं जायते ध्रुवं ।
एवं मन्त्र प्रवक्ष्यामि आनन्दपटले स्थितम् ।
कालोछिन्नादिविद्यां च त्रिशद्द्वारमयीं सदा ।
तदा सिद्धिमयं सोऽपि अन्यथा विफले सदा ।
इष्टध्यानं ततः कृत्वा हृदि मध्ये निरीक्षणं ।
प्रथमं कामिनीं ध्यात्वा प्रफुल्लां तदनन्तरं ।
प्रफुल्लाध्यानमात्रेण जायते देवविग्रहम् ।
प्रफुल्ला जायते देवि यस्य या इष्टदेवता ।
तदिष्टं भावयेद्देवि मन्त्रोक्तध्यानवर्त्मना ।
देवतायाः शरीरं च बीजादुत्पद्यते ध्रुवं ।
मन्त्रस्य प्रथमाद् बीजाज्जायते नगनन्दिनि ।
पञ्चाशन्मातृका या सा सर्वा युवतिरूपिणी ।
तस्मात्तु युवतीदेहाज्जायते कृष्णविग्रहं ।
रामः पद्मपलाशाक्षः प्रफुल्लो जायते ध्रवं ।
बीजादुत्पद्यते देवि परंब्रह्म सनातनः ।
बीजसंयोगमात्रेण शब्दब्रह्म सनातनः ।
अपरंकं प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतं ।
पञ्चाशद्वर्णसंकेतं पञ्चाशत्तत्वमद्भुतं ।
वर्णतत्वं विना देवि प्रजपेद् यदि कोटिधा ।
सर्वं तस्य वृथा देवि हानिस्तस्य पदे पदे ।
हृत्पद्मे द्वादशदले वराटोपरि कामिनीं ।
ध्यात्वा प्रयत्नतो देवि तद्गर्भे वर्णभावने ।

अकारादि-क्षकारान्तं त्रिकोणमध्यमण्डले ।
अनुलोम विलोमेन कामिन्या गर्भपञ्जरे ।
एकैक भावयेद्देवि प्रतिवर्गे पृथक् पृथक् ।
सर्वासां देवदेवीनां ककारं सुरपूजिते ।
ध्यात्वा प्रयत्नतो देवि अनुलोम-विलोमतः ।
पञ्चाशत्तत्वसंकेतं पञ्चाशद्वर्णमेव हि ।
यः करोति नरो ज्ञात्वा शीघ्रं विद्या प्रसीदति ।
किमसाध्यं बरारोहे यस्मै विद्या प्रसीदति ।
षट्चक्रे परमेशानि रहस्यं स्थानमुत्तमं ।
सहस्रारे गुरोः पादे पद्मं ध्यात्वा प्रयत्नतः ।
पञ्चाशद्वर्णसंकेतं यः कुर्यान्मानवः प्रिये ।
केशवं वशयेद्देवि रहस्येनाधुनां ध्रुवं ।
मोहयेच्चञ्चलापाङ्गि रुद्रं कालानलप्रभं ।
सर्वं चराचरं विश्वं सहसा मोहमानयेत् ।
एतत्ते कथितं देवि वर्णमोहनमुत्तमं ।
अज्ञात्वा मोहनं तत्त्वं प्रजपेद् यदि पार्वति ।
तस्मै लोका गन्धर्वाश्च वैरभावं व्रजन्ति वै ।
प्रत्यक्षरमयं देवि कथितं वर्णमोहनं ।
अज्ञात्वा मोहनं तत्त्वं यः कुर्यादन्यमोहनं ।
सर्वं तस्य वृथा देवि नान्यथा तु कदाचन ।
एतत्तत्वप्रभावाद्धि अचिरात् सिद्धिमाप्नुयात् ।
गर्भमध्ये जपेन्मन्त्रं अनुलोम-विलोमतः ।
जपित्वा वर्णमेकं च स्वस्थानमानयेच्च तं ।
पुनर्वर्णं समाकृष्य कामिनी-गभमध्यतः ।
प्रजपेदक्षरं देवि चन्द्रविन्दुसमन्वितं ।

पञ्चाशदक्षरं चैव भावयेच्च पृथक् पृथक् ।
अनेन विधिना देवि यो जपेन्मन्त्रामुत्तमं ।
तस्य शीघ्रं भवेत सिद्धिरन्यथा विफला भवेत् ।
सम्भावं लिखितं देवि यथा भवति अक्षरं ।
तत्तदेव बरारोहे जपपूजां निरर्थकं ।
विशेषमन्त्रं वक्ष्यामि आनन्दपटले स्थितं ।
मन्त्रं श्रीमोहनं नाम पञ्चाशद्वर्णसंज्ञकं ।
ज्ञात्वा यः कुरुते देवि तस्य सिद्धिरदूरतः ।
अन्यथा विफलं सर्वं रहस्यं सफलं न हि ।।

।। इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादेसप्तदशः पटलः ।।

अष्टादश पटल

श्री महादेव उवाच :

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतं ।
अज्ञात्वा वैष्णवो याति रौरवं वरवर्णिनि ।
एवं तत्त्वयुतं देवि यो जपेत् परमेश्वरीं ।
नवतत्त्वमयीं विद्यां यदा जपति पार्वति ।
सहसा सिद्धिर्जायते सुर-सुन्दरि ।
नवतत्त्वयुतं मन्त्रं ज्ञात्वा यः प्रजपेत् सकृत् ।
तदैव सहसा देवि विष्णुतुल्यो भवेद् ध्रुवम् ।
प्रथमं कामिनीं ध्यात्वा हृत्पद्मे कमलेक्षणे ।
उच्चरेत् प्रथमं बीजं कामिनीं तदनन्तरं ।
पुनर्वीजं द्वितीयं च उच्चरेद् यत्नतः सुधीः ।
कामिनीं च ततो ध्यात्वा तृतीयं बीजमुच्चरेत् ।
अनेन विधिना देवि कामिनी-ध्यान-सम्पुटं ।

पुनर्ध्यानं ककारस्य अनुलोमेन पार्वति ।
अनुलोमं यथा देवि विलोमं च तथा कुरु ।
एवं क्रमेण देवेशि यद् यदक्षरकं प्रिये ।
कृत्वा यत्नाद्वरारोहे सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
सर्वासां मन्त्रवर्णानां ध्यात्वा ध्यात्वा पृथक् पृथक् ।
आद्यन्ते कामिनी ध्यात्वा शिवशक्तिमयो भवेत् ।
अथवा चञ्चलापाङ्गि हृत्पद्मे कमलानने ।
आदौ मध्ये तथा चान्ते बीजं दत्वा जपेत् प्रिये ।
तदैव सहसा देवि जायते देवविग्रहं ।
सदा निद्रातुरो मन्त्रः कलिकाले च भारते ।
रहस्येऽनेन चार्वङ्गि निद्राभङ्गो तदा भवेत् ।
जपेदादौ वरारोहे त्रिवारमनुलोमतः ।
विलोमेन त्रिवारं च ध्यात्वा जप्त्वा हृदाम्बुजे ।
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि निद्राभङ्गस्य लक्षणं ।
प्रथमं कामिनीं ध्यात्वा अन्ते च तदनन्तरं ।
दशधा प्रजपेन्मन्त्रं निद्राभङ्गाय पार्वति ।
ततस्तु प्रजपेद्देवि प्रफुल्लं विश्वमोहनं ।
रहस्यानेन चार्वङ्गि जायते विष्णुविग्रहं ।
शङ्खचक्रधरं देव शुद्धतत्त्वात्मकं प्रिये ।
पीताम्बरधरं शान्तं प्रसन्नं मुखपङ्कजे ।
आजानु-लम्बितकरं वनमालाबिराजितं ।
त्रिभङ्गललिताकार चारुचूडाविभूषितं ।
श्रीवत्सकौस्तुभोद्दीप्तं जायते विष्णु-विग्रहं ।
अवतारं स्वयं कृष्णं ललिताञ्जनचिक्कणं ।
गोपीमण्डल-मध्यस्थं नानासुखमयं हरिं ।
अथवा जायते देवि तस्माद्बीजाच्छुचिस्मिते ।

कामिनी-ध्यानमात्रेण देवता जायते ध्रुवं ।
रहस्यमेतच्चार्वङ्गि कर्तव्यं हृदि मध्यतः ।
रहस्यानां च सर्वेषां सारमेतन्न संशयः ।
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतं ।
ध्यात्वा तु कामिनीनारीं प्रथमं हृदि मध्यतः ।
तद्गर्भे भावयेन्मन्त्रं मनसा नगनन्दिनि ।
तद्गर्भे भावयेद्देवं ध्यानमार्गेण सुन्दरि ।
पुनश्च कानिनीं ध्यात्वा तस्मादाविर्भवेद्धरिः ।
हरिरित्युपलक्षणं देवि सर्वेषामेव निर्मितं ।
निद्रायुक्तं महेशानि विद्यामन्त्रं भवेत् सदा ।
तस्मात्तु निद्रारहितं प्रजपेद् यदि एकदा ।
जपात्कोटिगुणं भद्रे सहसा लभते ध्रुवं ।
वामबाहोर्यदा बाहुस्तदा निद्रातुरो मनुः ।
चलते च यदा बाहोर्दक्षिणे वरवर्णिनि ।
तदैव चञ्चलापाङ्गि त्यक्तनिद्रः सदा मनुः ।
अतएव वरारोहे त्यक्तनिद्रं जपेत् सुधीः ।

श्री देव्युवाच ।

पूजाकाले महादेव यदि निद्रातुरो भवेत् ।
तत्कथं सिध्यते मन्त्रः किं कर्तव्यं तदा प्रभो ।
प्रजपेत् केन विधिना न जपेद्वा वद प्रभो ।

श्री महादेव उवाच ।

रहस्य-मन्त्रं वक्ष्यामि आनन्दपटले स्थितं ।
द्वादशार्णमयं मन्त्रः निद्राभङ्गस्य दीपनं ।
रहस्यमन्त्रं चार्वङ्गि अज्ञात्वा विफलं भवेत् ।

॥ इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे अष्टादशः पटलः ॥

ऊनविंश पटल

श्री महादेव उवाच :

सन्देहो नैव कर्तव्यः पूजाकाले शुचिस्मिते ।
तदैव सहसा देवि त्यक्तनिद्रा भवेन्मनुः ।
प्रजपेद्दशधा देवि हृदये मनसापि वा ।
पूजाकाले महेशानि सन्त्यजेद् यदि दक्षिणं ।
प्रायश्चित्तं भवेत्तस्य मन्त्रस्य वरवर्णिनि ।
प्रायश्चित्तमिदं देवि कृत्वा मन्त्रं जपेदू यदि ।
किं तस्य दक्षिणो वाहुस्तस्य निद्रातुरेण किं ।
रहस्यमन्त्रं चार्वङ्गि पूजाकाले विनिर्णयम् ।
रहस्यमेतच्चार्वङ्गि सर्वनिद्रासु मङ्गलं ।
वामबाहो यदा वायुर्यदा च दक्षिणावहः ।
रहस्यमेतच्चार्वङ्गि कृत्वा तु प्रजपेन्मनुम् ।
तदैव त्यक्तनिद्रा सा विद्या मन्त्रं च नान्यथा ।
योगनिद्रामयी विद्या योगनिद्रामयो मनु ।
विशेषमन्त्रं वक्ष्यामि आनन्दपटले स्थितम् ।
अष्टाक्षरीं महाविद्यां दीपनीं मोक्षरूपिणीं ।
सर्वसिद्धिमयो भूत्वा रहस्यफलमाप्नुयात् ।
प्रजपेद् यदि निद्रायां किं तस्य जपपूजने ।
रहस्यानेन चार्वङ्गि निद्रां त्यक्त्वा सनातनी ।
सुषुम्नामध्यमार्गेषु संस्थिता ब्रह्मरूपिणी ।
रहस्यमेतच्चार्वङ्गि अज्ञात्वा यो जपेन्मनुम् ।
तस्य पापमहं वक्ष्ये सावधानावधारय ।
शूद्रेन लिखितं देवि पटलं यस्तु पठ्यते ।
यं यं नरकमाप्नोति तं तं प्राप्नोति मानवः ।
द्वात्रिंशत्कोटिमध्येषु नरकेषु क्रमेण हि ।

कोटिवंशान् समादाय पच्यन्ते मनुजाधमाः ।
विप्रो वा क्षत्रियो वापि वैश्यो वा नगनन्दिनि ।
पचयन्नरके घोरे शूद्रस्य लिखनात् प्रिये ।
तस्मात्तु शूद्र-लिखितं पटलं न जपेत् सुधीः ।
तस्मादावश्यकं देवि कामिनीध्यानमुच्चरेत् ।
ततः सिद्धो भवेद्देवि विद्यामन्त्रः न चान्यथा ।
कामिनीध्यानमात्रेण सर्वसिद्धिमयो भवेत् ।
एकेनैव कृतार्थः स्याद् बहुभिः किमुपासते ।
तव भक्त्या मयाख्यातं यद् गोप्यं भुवनत्रये ।
कामधेनुमिदं ज्ञात्वा यदि पूजां समाचरेत् ।
सकला सा भवेत पूजा जपं च सफलं सदा ।
अन्यथा प्रेतवद् दीक्षा पूजा च प्रेतवत् सदा ।
प्रथमं कामिनीं ध्यात्वा जपपूजां समाचरेत् ।
कामधेनोः फलं लब्ध्वा सदाशिवमयो भवेत् ।
विष्णुरूपी स एव स्यान्महामाया स एव हि ।
शिवमन्त्रे विष्णुमन्त्रे शक्तिमन्त्रे शुचिस्मिते ।
कामधेनुमिदं मन्त्रं प्रशस्तं सुरपूजिते ।
एतत्ते कथितं देवि सारात्सारं परात्परं ।
यत्कृत्वा साधको याति दुर्लभं मोक्षमन्दिरं ।
विशेषमन्त्रं वक्ष्यामि विद्यां श्रीकामरूपिणीं ।
अज्ञात्वा कामिनीध्यानं सहसा व्यर्थतामियात् ।
तदध्यानं चञ्चलापांगि आनन्दपटले स्थितं ।
तस्मादवश्यं जप्तव्यं सततं कामदीपनीं ।

।। इति श्री कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे ऊनविंसः पटलः ।।

विंशतितमः पटल

श्री देव्युवाच :

मन्त्रसमर्पणं तत्त्वं कथ्यतां देवपूजित ।
कस्मै समर्पयेन्मन्त्रं वद देव पुरा तव ।
अर्पयेन्मन्त्रतेजांसि देवेश यदि शूलधृक् ।
निस्तेजः साधको देव तदैव सहसा भवेत ।
किं जप्येन च पूजायां पुरश्चर्ये च किं पुनः ।
तन्मे वद महाभाग कृपया परमेश्वर ।

श्री महादेव उवाच :

साधु पृष्टं त्वया भद्रे अधुना कथयामि ते ।
जपयित्वा चञ्चलापांगि ध्यायेत परमकामिनीं ।
मन्त्रवर्णं वरारोहे कामिनी-गजगह्वरे ।
चन्द्रविन्दुयुतं कृत्वा एकैकं दशधा जपेत ।
अनुलोमे यथा देवि विलोमेन तथा कुरु ।
अतः परं वरारोहे ध्यात्वा तु कामिनीं परां ।
वियद् ब्रह्म महेशानि कामिनीं दशधा जपेत् ।
कामिनी-गर्भमध्ये तु वियद्वह्नियुतं प्रिये ।
प्रजपेद् दशधा भक्त्या बीजतत्त्वं तदा भवेत ।
ततस्तु कामिनी-तत्त्वं ललाटे परिचिन्त्य वै ।
एवं च मातृका-स्थाने कामिनीं भावयेत् प्रिये ।
पञ्चाशन्मातृकास्थाने प्रजपेन्मातृकामनुं ।
वीजस्य ज्योतिःपुञ्जेषु कामिनीं सत्वरं कुरु ।
दशधा प्रजपेद्देवि कामिनीबीजमुत्तमं ।
कामिनीगर्भमध्ये तु ज्योतिस्तत्वं जपं कुरु ।
ज्योतिस्तत्वं वरारोहे स्वयं जीवः सनातनः ।

कामिनी-जीवतत्त्वं च कृत्वा वै साधकः सुधीः ।
सहस्रारे महापद्मे संस्थाप्य कामिनी परां ।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वमिति मन्त्रेण मन्त्रवित् ।
देवस्य दक्षिणे हस्ते बाह्यपूजादि चार्पयेत ।
देव्या वामे वरारोहे समर्प्य फलभाग् भवेत् ।
जपस्य सर्वतेजांसि देवहस्ते यदि प्रिये ।
समर्प्य परमेशानि तेजस्य साधको भवेत् ।
किं तस्य पूजने भद्रे किं जापेन वरानने ।
यत्किञ्चिद्दीयते देवि सर्वं ब्रह्मणि लीयते ।
विद्यामन्त्रं जपेद्देवि तत्तेज उपजायते ।
जीवतत्त्वं विना देवि देवहस्ते कदाचन ।
नार्पयेच्चञ्चलापाङ्गि देव्या हस्ते विशेषतः ।
तस्मात् प्रयत्नतो देवि जीवतत्त्वं कुरु ध्रुवं ।
जीवतत्त्वं विना देवि यदैवं न समर्पयेत् ।
जपं च विफलं देवि पूजा च विफला भवेत् ।
गन्धपुष्पादिकं यद्यत् सर्वं देवे समर्पयेत ।
जपतत्त्वं वरारोहे सर्वतेजोमयं तथा ।
यदि तेजो वरारोहे देव्यै देवाय अर्पयेत् ।
यस्तेजः सततं जीवः कथं सिद्धिः प्रजायते ।
यस्तेजस्त्वर्पयेद्देवि पुनरागमनं प्रिये ।
दुर्लभं चञ्चलापाङ्गि तत्तेजः साधक च ।
वृथामयं वरारोहे कुरुते नरपामरः ।
समर्पणमविज्ञाय प्रजपेद् यदि कोटि वा ।
देवता-तेजमध्ये तु तत्तेजोपविशेत प्रिये ।
भावयेद् बहुयत्नेन यथा सर्वस्वसम्पुटं ।

एतत्ते कथितं देवि जीवतत्त्वं सुदुर्लभं ।
यत कृत्वा साधको याति दुर्लभं ब्रह्मविग्रहं ।
श्रुत्वा तन्त्रमिदं देवि रहस्यफलमाप्नुयात् ।
तन्त्रमेतद्वरारोहे शृणुयात् साधकः प्रिये ।
।। इति कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसम्वादे विंशतितमः पटलः ।।

एकविंशतितम पटल

श्री महादेव उवाच :

चन्द्रसूर्योपरागे च प्रजपेद्यदि कामिनीं ।
तदैव सहसा सिद्धिर्जायते नात्र संशयः ।
प्रथमं कामिनीं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत ।
अज्ञात्वा कामिनीतत्त्वं न जपेद् ग्रहणे प्रिये ।
न जपेत् ग्रहणे भद्रे अज्ञानाद् यदि मूढ़धीः ।
सर्वं तस्य वृथा देवि पूर्वधर्मो विनश्यति ।
चन्द्रपर्व सूर्यपूर्व न विचार्यं कदाचन ।
सूर्यपर्व वरारोहे न पश्यद्यदि पामरः ।
अस्तु तावत् परो धर्मः पूर्वधर्मो विनश्यति ।
न पश्यति यदि अज्ञानात सर्वारिष्टमवाप्नुयात् ।
सर्वारिष्टमयः सोपि सर्वपापमयः सदा ।
तस्मादवश्यं कर्तव्यं चन्द्रपर्वनिरीक्षणं ।
सूर्यपर्व तथा देवि निरीक्ष्य मोक्षमाप्नुयात् ।
अज्ञात्वा यदि मूढ़ात्मा राश्यादिगणनं प्रिये ।
विचार्य चञ्चलापाङ्गि न पश्येद् ग्रहण यदि ।
पूर्व-पूर्वार्जितं पुण्यं तत्क्षणादेव नश्यति ।
चन्द्रसूर्योपरागं च तस्माद् यत्नान्निरीक्षयेत् ।

किं तस्य कामिनीं भद्रे रम्यानि च पुनश्च किं ।
ग्रासादि-मुक्तिपर्यन्तं जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ।
न जपेद्यदि चार्वङ्गि रौरवं नरकं ब्रजेत् ।
तत्काले चञ्चलापांगि परंब्रह्मस्वरूपिणी ।
तस्मिन् काले वरारोहे क्षत्रादिजातिभेदतः ।
आचण्डालप्रभृतयो द्विजतुल्या भवन्ति हि ।
द्विजास्तु चञ्चलापांगि साक्षाद्ब्रह्म न संशयः ।
तत्र का गणना देवि चाण्डालानां वरानने ।
तस्माद् यत्नेन कर्तव्यं चन्द्रपर्वनिरीक्षणं ।
चन्द्रकोटिगुणं देवि सूर्यो दशगुणं भवेत् ।
तत्र यद्यत कृतं कर्म जपहोमादिकं प्रिये ।
अक्षयं तद्भवेद्देवि वचनं मम निश्चितं ।
राश्यादि-गणन त्यक्त्वा यवनैर्दृश्यते यदि ।
यवनस्य तथा सिद्धिर्जायते पृथिवीतले ।
दीक्षितोऽदीक्षितो वापि दृष्ट्वा स्नानं समाचरेत ।
तदेवमक्षयं स्नानं गंगास्नानं भवेत् प्रिये ।
विष्ठाकूपस्थितं तोयं गंगोदकसम स्मृतं ।
प्रशस्तं ग्रहणे काले नान्यथा वचनं मम ।
षष्ठमासाधिको वालो यदि स्यात वरवर्णिनि ।
ग्रहणे चन्द्रसूर्यस्त तस्य स्नानं प्रशस्यते ।
अकृत्वा स्नानदानं च सहसा नरकं ब्रजेत् ।
स भ्रष्टः स च पापिष्ठः सहसा शूकरः प्रिये ।
तस्यान्नमुदकं देवि मूत्रं शोणितवत् प्रिये ।
ज्ञायते नात्र सन्देहो मम वाक्यं वरानने ।
ब्राह्मणोऽब्राह्मणो वापि चन्द्रपर्वणि पार्वति ।
चण्डालप्रभृतिः सर्वो ब्रह्मगोत्रे प्रवर्तते ।
ब्रह्मेति नाम सर्वेषां राश्यादिगणनं कुतः ।

तस्मात्तु चञ्चलापांगि सङ्कल्पं नैव कारयेत् ।
मासपक्षतिथीनां च निमित्तानि च पार्वति ।
न विचार्यं वरारोहे ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
ग्रासादिमोक्षकाले तु कुतो मासः कुतस्तिथिः ।
स कालः परमं ब्रह्म सर्वेषामक्षिगोचरं ।
तत् कथं पामरो लोको राश्यादिगणनं प्रिये ।
उपरागं परित्यज्य यश्चान्यं परिचिन्तयेत् ।
स भवेद्रौरवे मग्नो ब्रह्मणश्चानुमानतः ।
रौरवात पुनरागत्य पापयोनौ प्रवर्तते ।
निष्कृतिर्नास्ति चार्वङ्गि तस्यापि च कदाचन ।
तस्मात् सर्वं परित्यज्य चन्द्रपर्वनिरीक्षणं !
चन्द्रपर्वे यथा देवि सूर्यपर्वे तथा प्रिये ।
तत्र श्राद्धादिकं त्यक्त्वा विद्यां मन्त्रं जपेत् प्रिये ।
अन्यथा नरकं याति पितॄन् सप्त नयत्यधः ।
अपरैकं प्रयक्ष्यामि रहस्यं शृणु सुन्दरि ।
अकारादि-क्षकारान्तं प्रतिपदमे निरीक्षयेत ।
ततस्तु प्रजपेत् शून्यं चन्द्रविन्दुकसंयुतं ।
ततस्तु हृदयाकाशे शून्ये ज्योतिर्मयेषु च ।
अनुलोम-विलोमेन मातृकां प्रजपेद् सुधीः ।
ततस्तु साधको श्रेष्ठो वराटोपरि मातृकां ।
पद्मबीजं यथा देवी वर्णबीजं प्रभावयेत् ।
चन्द्रबीजं पुटं कृत्वा जपेद्वर्ण प्रसन्नधीः ।
अनुलोम-विलोमेन जप्त्वामृतमयो भवेत ।
केवलं कामिनीं ध्यात्वा प्रफुल्लवदनान्तरं ।
वीजादुपत्द्यते देवो देवी वा कमलेक्षणे ।
ततस्तु देवतां ध्यात्वा निरीक्ष्य देवविग्रहं ।
॥ इति कामधेनुतन्त्रे देवदेवीसंवादे एकविंशतितमः पटलः समाप्तः ॥

प्राचीनतम भारतीय तन्त्र महाग्रन्थ

हिन्दू तंत्र शास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

अप्राप्त ग्रन्थों को ढूंढ़कर उनके विशेष तन्त्रों का संकलन करके उनको साधुओं से प्रमाणित कराकर इस ग्रन्थ में दिया है। ऐसे तन्त्र जो आज तक प्रकाशित नहीं हुये। विधि-विधान सहित, पृष्ठ संख्या लगभग 220, सचित्र, पक्की बाइन्डिग मूल्य 30) डाक खर्च 7) रु० अलग।

जैन तंत्र शास्त्र

ले० यतीन्द्र कुमार जैन

भारत तथा विदेशों में रह रहे विद्वान जैन मुनियों द्वारा अपनी जिन्दगी में किये गये प्रयोगों को इस पुस्तक में दिया गया है। ऐसी विद्या कोई ऋषी मुनि किसी भी कीमत पर नहीं बताते। पृष्ठ संख्या लगभग 200 सचित्र, मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

इस्लामी तंत्र शास्त्र

ले० जनाव असगर अली

मुस्लिम धर्म में तन्त्र शास्त्र का इतना भण्डार भरा है कि जितना अन्य कहीं भी नहीं है लेकिन अभी तक छोटे-छोटे सिद्ध, मुल्ला, मौलवी ही इसका थोड़ा सा ज्ञान कर पाये हैं। हमने ईराक, ईरान, पाकिस्तान आदि देशों से तथा भारत की प्राचीन मस्जिदों में से उन ग्रन्थों को निकलवा कर यह पुस्तक तैयार कराई गई है जिसमें तन्त्रादि मूल अरबी तथा हिन्दी में अलग-अलग दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या लगभग 230 सचित्र, मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

शाबर तन्त्र शास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थों तथा गुप्त साधकों द्वारा प्राप्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाला शाबर प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र विवेचन किया है। हमारे इस ग्रन्थ में महान लेखक ने अपनी पूरी जिन्दगी का निचोड़ निकाल कर रख दिया है। 300 पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

नोट—कोई भी पुस्तक मँगाने के लिये 10) रु० मनीआर्डर पहले अवश्य भेजें।

पुस्तकें मंगाने का पता

दीप पब्लिकेशन हास्पीटल रोड आगरा–३

सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

ले०—तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

विश्व जनमानस में देवी भगवती के दस पौराणिक स्वरूप प्रचलित हैं यथा—काली, तारा, महाविद्या (षोड्सी), भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातङ्गी, कमलात्मिका (कमला)। ये सभी भगवती पराशक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं। प्रस्तुत महाग्रन्थ में सभी देवियों के तान्त्रिक, काम्य प्रयोग दिये गये हैं जो सिर्फ महान सिद्ध-योगियों को ही ज्ञात रहते हैं तथा वे किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बताते। साथ में सम्बन्धित मन्त्र, यन्त्र, पूजा, जप, साधनाविधि, उपनिषद् सतजप, सहस्रनाम आदि विभिन्न विषयों को दिया गया है। देवी भक्तों को संकलन योग्य महान ग्रन्थ, सम्पूर्ण सुनहरी ठप्पेदार कपड़ा वाइन्डिग सहित सचित्र ग्रन्थ का मूल्य 225) रु० (दो सौ पच्चीस) रुपया।

नोट—डाक खर्च 15 रु. अलग। 25 रु. अग्रिम भेजना आवश्यक है।

काली तन्त्र शास्त्र

ले०—विद्या वारिधि पं० राजेश दीक्षित

भगवती आद्याकाली का स्वरूप मन्त्र-जप एवं ध्यान-तत्व निरूपण सहित दक्षिणा काली, गुह्य काली; भद्रकाली, श्मशानकाली तथा महाकाली साधना के विविध मन्त्र पूजा-साधन, यन्त्र एवं पुरश्चरण की विधियाँ, कीलक, अर्गल, कवच, स्त्रोत्र, हृदय, सहस्त्राक्षरी, शतनाम, सहस्त्रनाम आदि विविध विषय सम्पन्न काली-आराधना विषयक हिन्दी का सर्वोत्तम् सचित्र ग्रन्थ।

बहुरंगी आफसेट लेमीनेटेड कवर सजिल्द मूल्य 30 रु.।

डाकखर्च 7 रु. का अलग-10 रु. का मनीआर्डर पहले भेजें।

ग्रह-फल चंद्रिका

ले०—जगदीश पंडित

राशि भाव, भावानुसार राशि स्थिति, उनका फल प्रतिपादन, आदि इस पुस्तक में दिया गया है। फलित ज्योतिष का अनुपम ग्रन्थ है। मूल्य 36 रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

मंगाने का पता—

दीप पब्लिकेशन हास्पीटल रोड, आगरा—३

श्रीयन्त्राम् साधना

ले०---आचार्य वागीश शास्त्री

श्रीयन्त्र लक्ष्मी जी द्वारा प्रदान यन्त्र है। धन-सम्पदा प्राप्ति के लिये इसकी साधना प्रमुख मानी गयी है। इसीलिये इसे यन्त्रराज भी कहा जाता है। इस पुस्तक में श्री यन्त्र निर्माण विधि, उपासना विधि, कादि और हादि विद्याओं का स्वरूप, नवचक्र और वर्ण, सम्पूर्ण पूजा विधान तथा सम्बन्धित तन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच आदि शास्त्रोक्त आधार पर दिये गये हैं। सचित्र व सजिल्द बहुरंगी आफसेट लेमीनेटेड कवर पुस्तक का मूल्य 45 रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

नोट—10 रु० का मनीआर्डर पहले भेजें।

कौतुकरत्न भाण्डागार—वृहत् इन्द्रजाल

ले० - ओझा बाबा

आजकल बाजार में इन्द्रजाल बहुत मिलते हैं जिन्होंने इस विषय की गम्भीरता को खत्म प्राय कर रखा है। इस पुस्तक में परमसिद्ध ओझा बाबा ने सम्पूर्ण जीवन का ज्ञान निचोड़कर रख दिया है। दत्तात्रेय के सिद्धि देने वाले मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र सम्मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि विधि सहित दिये गये हैं। सचित्र व सजिल्द बहुरंगी आफसेट लेमीनेटेड कवर पुस्तक का मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

नोट—10 रु० का मनीआर्डर पहले भेजें।

क्रियात्मक कुण्डलिनी तन्त्र

[सहज अष्टांग योग सहित]

ले०—महर्षि यतीन्द्र (डा० वाई० डी० गहराना)

इस पुस्तक में आत्म तत्व ज्ञान के सिद्धान्त, अष्टांग योग की क्रियात्मक व्याख्या, कुण्डलिनी योग के आसन एवम् प्राणायाम, बंध तथा मुद्रायें, शरीर मन्दिर के सौन्दर्य बर्द्धक व्यायाम, ऋतुओं के आधार पर आहार, धारणा और ध्यान के विशेष जातक, कुण्डलिनी के षट् चक्रों से आगे के विशेष विवरण, कुण्डलिनी में सेक्स उपगोग, काम कला से योग विलास आदि विषयों का मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विवरण दिया गया है करीब 250 चित्र 8 रंगीन चित्र सजिल्द पृष्ठ संख्या लगभग 400 मूल्य 60 रु० डाक खर्च 10 रु० अलग।

नोट—10 रु० का मनीआर्डर पहले भेजें।

मंगाने का पता—

दीप पब्लिकेशन, हास्पीटल रोड, आगरा-३

ज्योतिष की अनुपम पुस्तकें पढ़ें

वृहद अंक ज्योतिषविज्ञान—(अंक विद्या) केवल जन्म तारीख के आधार पर हजारों प्रश्नों के उत्तर इसमें पढ़िए, जैसे क्या आपकी भी लाटरी निकलेगी, क्या अपनी प्रेमिका से आपके सम्बन्ध बने रहेंगे, क्या आपका कार्य सिद्ध होगा। मूल्य 20/-

सरल सुगम ज्योतिष – इस पुस्तक की सहायता से आप भी ज्योतिषी बन सकते हैं। इसे पढ़कर, लग्न निकालना, कुण्डली बनाना, जन्म पत्री बनाना, मुहूर्त निकालना, स्त्रियों के राशिफल व दशाओं के फल, शुभ-अशुभ शकुनो का विचार, स्वप्न विचार, मूक प्रश्न चमत्कार आदि का वर्णन किया गया है। मूल्य 20/-

भृगु प्रश्न शिरोमणि—(तत्काल भृगु प्रश्नोत्तरी) मन विचारों का घर है और ये चिन्तायें अनन्त हैं। गरीब को घर की, अमीर को सन्तान की, किसी को विवाह की, नौकरी की तरक्की की आदि 204 प्रकार की चिन्ताओं को अपने आप मिटायें। मूल्य 20/-

व्यापार अर्ध-मार्तण्य—ज्योतिष आधार पर व्यापारिक वस्तुओं की तेजी मन्दी का सच्चा उत्तर देने वाली एकमात्र पुस्तक। इस पुस्तक की सहायता से अब तक सैकड़ों व्यापारी मालमाल हो गए। मूल्य 20/-

केरल ज्योतिष शास्त्र - केरल विद्या वह गुप्त विद्या है, जो प्रश्नकर्ता से फल, फूल या पक्षी का नाम कहलवाकर हर कार्यों में सफलता मिलेगी या नहीं इसका उत्तर मालूम हो सकता है प्रामाणिक पुस्तक है। मूल्य 20/-

ज्योतिष अंक विद्या, हस्त रेखायें एवं लाटरी—ज्योतिष अंक विद्या तथा हस्त रेखाओं द्वारा अपने पारिवारिक सदस्यों, मित्रों, पड़ौसियों, तथा अन्य लोगों का भूत भविष्य बताकर वाहवाही प्राप्त करें। मूल्य 20/-

ज्योतिष सर्व संग्रह—इस पुस्तक में ज्योतिष सम्बन्धी समस्त प्रारम्भिक ज्ञान मूल संस्कृत तथा टीका सहित दिया गया है। मूल्य 20/-

पुस्तकें मंगाने का पता—

दीप पब्लिकेशन, हास्पीटल रोड, आगरा–३

प्रत्येक तन्त्र मन्त्र प्रेमी के लिये आवश्यक रूप से पठनीय एवं संग्रहणीय

प्रमाणिक तन्त्र-साहित्य का हिन्दी में अभिनव प्रकाशन

विद्या वारिधि आचार्य प० राजेश दीक्षित द्वारा सम्पादित

हिन्दू तन्त्र शास्त्र

प्राचीन एवं प्रामाणिक हिन्दू शास्त्रों में उल्लिखित विभिन्न कामनाओं के पूरक प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन

साजिल्द मूल्य ३०/-

जैन तन्त्र शास्त्र

प्राचीन एवं प्रामाणिक जैन ग्रन्थों के संकलित विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन

साजिल्द मूल्य ३०/-

इस्लामी तन्त्र शास्त्र

प्राचीन ग्रन्थों तथा चमत्कारी आमिलों द्वारा संकलित विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले इस्लामी प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन।

साजिल्द मूल्य ३०/-

शावर तन्त्र शास्त्र

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों तथा गुप्त साधकों द्वारा प्राप्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले शावर प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन।

साजिल्द मूल्य ३०/-

चारों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ। आर्डर के साथ १०/- पेशगी भेजना आवश्यक है।

दीप पब्लिकेशन्स, अस्पताल रोड आगरा-३.

SVB
S.No
Sub
Sub